श्री पूंजाभाई जैनग्रंथमाला - ७

जिनागमकथासंग्रह

संपादक

अध्यापक बेचरदास दोशी

'जैनसाहित्यप्रकाशन' ट्रस्ट

अहमदाबाद

प्रकाशक :
गोपालदास जीवाभाई पटेल,
मंत्री, जैनसाहित्यप्रकाशन ट्रस्ट,
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-

प्रथमावृत्ति
इ. स. १९३५, प्रत ११००

मुद्रक : बलवतराय करुणाशंकर ओझा,
गायत्री मुद्रणालय, खजूरी की पोल,
अहमदाबाद

मूल्य : रु. १।

6312

अर्पण

स्व० पिताजी और चि० माताजी
यह संग्रह आप को अर्पण कर के भी
मैं उरिण नहीं हो सकता ।

सेवक
बेचरदास

प्रकाशक का निवेदन

गूजरात विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित 'प्राकृतकथासंग्रह' बहुत समय से अलभ्य हो गया था। अर्धमागधी भाषा के विद्यार्थिओं को वह पुस्तक ठीक उपयोगी होने से उसकी मांग चालू थी। इससे उसकी द्वितीयावृत्ति शीघ्र प्रकाशित करने का निर्णय किया गया।

किन्तु, द्वितीयावृत्ति तैयार करने के वक्त ऐसा समझा गया कि उस पुस्तक को सविशेष उपयोगी करने के लिये उसकी कथायें विशिष्ट दृष्टिबिंदु से, और प्राकृत साहित्य के विविध अङ्गों का यथोचित परिचय दे सके ऐसी वैविध्ययुक्त करने के ख्याल से पुनः पसंद करने की जरूर है। इससे वह कार्य प्राकृत व्याकरण और साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान पंडित बेचरदासजी को सुप्रत किया गया। उन्होंने सविशेष श्रम से विविध ग्रंथों मे से यह कथायें एकत्रित की। किन्तु उनको प्रकाशित करने के पहिले गत स्वातंत्र्य-युद्ध में गूजरात विद्यापीठ और उसके सेवकगण सामिल हो गये। इससे इतने समय बाद यह ग्रंथ प्रकाशित किया जाता है। आशा

है कि इस पुस्तक से प्राकृत भाषा के अभ्यासीओं की बहुत समय की एक अपूर्णता दूर होवेगी ।

'प्राकृतकथासंग्रह' प्रकाशित करने के वख्त जाहेर किया गया था कि उक्त कथाओं का कोश और संक्षिप्त प्राकृत व्याकरण भी बाद में प्रकाशित किया जायगा । किन्तु बहुत समय व्यतीत होने पर भी वह शक्य नहीं हुआ । इस वख्त प्राकृत भाषा का सरल व्याकरण और कथाओं का विस्तृत कोश, टिप्पणियाँ आदि इस ग्रंथ में ही प्रकाशित किये गये हैं। पंडितजी ने ऐसी कुशलता से यह पुस्तक तैयार किया है कि संस्कृत भाषा और व्याकरण का सामान्य परिचयवाला कोई भी विद्यार्थी इस एक पुस्तक से हि प्राकृत व्याकरण और साहित्य में सुविधा से प्रवेश कर सकेगा ।

आशा है कि जिन्हों के लिये यह पुस्तक प्रकाशित किया जाता है वे उससे यथोचित लाभ अवश्य उठायेंगे ।

प्रस्तावना

प्राकृत भाषा का अभ्यास विशेष सुगम हो इस लिये यह 'जिनागमकथासंग्रह' की योजना की गई है और उसको अधिक व्यापक बनाने के लिये हिंदी भाषा का उपयोग किया गया है। संग्रहगत कथाओं की टिप्पणियाँ व शब्दकोश तथा प्राकृत भाषा का साधारण परिचय यह सब को समझने का वाहन हिंदी भाषा है।

मूल जैन सूत्रों से तथा कथाओं के व सूक्तिओं के जैन ग्रंथों से संग्रहगत सामग्री संगृहीत की गई है। कथायें व सूक्तियें मनोरंजक और बोधप्रद होने के साथ भाषा के अभ्यास में भी सहायक होनेवाली हैं।

अभ्यासी को व्युत्पत्ति व शब्द और शब्दार्थ के क्रम-विकास का थोड़ाबहुत ख्याल हो इस दृष्टि से ही कई टिप्पणियाँ लिखी गई है। और कई शब्द के भाव को स्पष्ट करने की दृष्टि से। साथ में उपयुक्त शब्दों का अर्थसूचक कोश भी दिया गया है।

जिन जिन ग्रंथों से यह सामग्री ली गई है उन सब का तत् तत् स्थल में नामग्राह उल्लेख किया है और कई जगह यथास्मृति प्रकरण का भी।

सामग्रीप्रापक प्रत्येक ग्रंथ का पूरा परिचय व इतिहास देना अत्यंत आवश्यक है तो भी प्रस्तुत में यह नहीं हो सका, कारण यह निवेदन लिखते समय उन ग्रंथो में से एक भी मेरे सामने नहीं है और जिस स्थल में बैठ कर निवेदन लिखा जा रहा है, वह स्थल भी ऐसे ऐसे कार्यों के लिए पुस्तकमरु जैसा है। फिर भी हमारे संग्रह को सामग्री देनेवाले उन सब ग्रंथों के मूल कर्ता, संपादक व प्रकाशक इन सबों का मे कृतज्ञ हूं। खेद है कि असान्निध्य के ही कारण ग्रंथों के प्रकाशनस्थलों का भी निर्देश नहीं कर सका।

मेरी मातृभाषा तो गुजराती है तो भी राष्ट्रीय हित व विद्यापीठ का व्यापक लक्ष्य को ध्यान में रख कर संग्रह को हिंदीकाय करने का प्रयत्न किया है। यो तो हिंदी का अधिक परिचय कई वर्षों से है परंतु लिखने का अभ्यास कुछ कम है इस लिए संग्रह की हिंदी गूजरातीहिंदी हुई थी। मेरी इच्छा थी कि किसी तराह से भाषा का परिष्कार कराऊं, इतने में मुझ को जैनमुनिओं को पढाने के लिए दिल्ली जाना पड़ा और जब मैं वहा रहा तब इस पुस्तक का मुद्रण शरू हुआ। वहा मेरे सद्भावशाली विनयी विद्यार्थी कवि मुनि अमरचंदजी द्वारा मेरी गुजरातीहिंदी का संस्कार कराया गया। संस्कारक मुनि हिंदी के ज्ञाता, लेखक व कवि भी हैं। भाषा के संस्करण में उनकी असाधारण सहायता ली है इस कारण उनके स्नेहस्मरण को मैं नहीं भूल सकता।

संग्रह का अंतिम प्रुफ ही मैं देख सका हूं और प्रथम के प्रुफ भाई गोपालदास जीवाभाई पटेल ने देखे हैं एतदर्थं हमारे भाई गोपालदास धन्यवादार्ह हैं ।

प्राकृत कथायें पढ़ने के पहिले प्राकृत भाषा व व्याकरण का कुछ परिचय हो इस उद्देश से प्रारंभ में ही 'प्राकृत भाषा का साधारण परिचय' प्रकरण रक्खा गया है। उसमें प्रथम प्राकृत भाषा के स्वरूप का परिचय कराया है; जो लोक प्राकृत को संस्कृतयोनिक व संस्कृत को प्राकृतयोनिक बतलाते हैं उनके भ्रम को हटाने के लिए थोडीसी युक्तियां बतलाई है; जैन आर्षप्राकृत व बौद्धप्राकृत — पाली — का पारस्परिक संबंध स्पष्ट किया गया है; तद्भव तत्सम देश्य ये प्राकृत के तीन भेद के कारण को बताया गया है; आचार्य हेमचन्द्र ने प्राकृत की व्युत्पत्ति करते हुए "प्रकृतिः संस्कृतम्" इत्यादि जो उल्लेख किया है उनका भी खुलासा कर दिया गया है; पीछे स्वरव्यंजन के उच्चारणभेद, संधि तथा नाम व धातु के प्रचलित रूपाख्यान लिखे गये हैं ।

संग्रह में कोई त्रुटि हो तो आशा है कि अभ्यासी सूचित करेंगे ओर सह लेने की धीरता बतायेंगे ।

विनीत व उसके आगे की कक्षा द्वारा प्राकृत में प्रवेश करने के लिए यह पुस्तक सहायक होगी तो उत्तरोत्तर क्रम-विकासगामी ऐसे और दो तीन संग्रह योजने का मनोरथ सफल हो सकेगा ।

अमरेली, (काठियावाड)
महा वद १३, '९१

बेचरदास दोशी

अनुक्रमणिका

प्राकृत भाषाका साधारण परिचय

प्राकृत भाषाका बोध करानेवाला 'प्राकृत' शब्द 'प्रकृति' शब्दसे बना है। 'प्रकृति'का एक अर्थ 'स्वभाव' भी है। अतः जो भाषा स्वाभाविक है, वह 'प्राकृत' शब्दसे बोधित होती है। अर्थात् मनुष्यको जन्मसे मिली हुई बोलचालकी स्वाभाविक भाषा, प्राकृत भाषा कही जाती है[1]

जो प्राकृत अधिक प्राचीन है उसको आर्ष प्राकृत कहते है। जैन आगमोंमें प्राचीन प्राकृतके भी प्रयोग देखे जाते हैं। आचार्य हेमचंद्रने भी प्राकृत और आर्ष प्राकृत ऐसे दो विभाग अपने प्राकृतव्याकरणमें किये हैं। और उसमें

---

१. "सकलजगज्जन्तूना व्याकरणादिभिरनाहितसंस्कार· सहजो वचनव्यापार प्रकृतिः। तत्र भवम् सैव वा प्राकृतम्"।

—काव्यालंकार—नमिसाधु टीका २—१२।

यही टीकाकार "प्राक्—पूर्व—कृतम् प्राकृतम्"—एसी व्युत्पत्ति बताता है यह कहां तक संगत है ?

आर्ष प्राकृतकी उपपत्तिके लिये सारे व्याकरणमें आर्ष सूत्रका (८–१–३) अधिकार बताया है । स्थान स्थान पर उसके उदाहरण भी जैन आगमोंमेंसे दिये गये हैं । किंतु आर्ष प्राकृतके सर्व प्रयोगोंकी उपपत्तिके लिये उसमें प्रयत्न नहीं किया गया ।

आर्ष प्राकृत और बौद्ध मूल त्रिपिटककी पाली भाषामें अधिक साम्य देखा जाता है । पाली शब्दका अर्थ अभी विवादास्पद है परंतु हमारी कल्पनामें पाली शब्दकी उपपत्ति प्राकृत शब्दसे मालूम होती है। प्रकृति के स्थानमे जैन ग्रंथोमें कई जगह 'पयडी'[२] शब्द आता है। 'पयडी' शब्दसे तद्धितान्त 'पायडी' शब्द हो कर उससे 'पाली' शब्द बननेमे व्युत्पत्तिशास्त्रकी कोई असंगति मालूम नहीं होती । कहनेका तात्पर्य यह है कि जिनागमोंकी आर्ष प्राकृत और त्रिपिटकोंकी पाली भाषा, दोनोंमें अधिक साम्य देखा जाता है। थोडेसे उदाहरण देनेसे यह कथन और भी स्पष्ट हो जायगा । आर्ष प्राकृतमें सप्तमीके एकवचन लोगंसि, लोगम्मि, लोगे, ऐसे तीन आते हैं । पालीमें भी बुद्धस्मि, बुद्धम्हि, बुद्धे, ऐसे आते है। आर्ष प्राकृतका सप्तमीका एकवचन 'लोगंसि' में जुड़ा हुआ सप्तमीदर्शक प्रत्यय पालीका 'बुद्धस्मिं' रूपमें जुड़ा हुआ 'स्मि' प्रत्ययके साथ अधिक साम्य रखता है। ऐसे ही 'लोगम्मि' का साम्य 'बुद्धम्हि' के साथ अधिक है । असलमें 'स्मि' प्रत्ययके

२. भगवतीसूत्र शतक १, उद्देशक ४—
" कइ पयडी, कह बंधइ, कइहिं च ठाणेहिं बधइ पयडी ।
कइ वेदेइ य पयडी, अणुभागो कइविहो कस्स ? " ॥

भिन्न प्रकारके उच्चार अनुस्वारादि 'सि' (लोगंसि), 'म्हि' और 'म्मि' है । संस्कृत वैयाकरणोंने इस प्रत्ययके समान 'स्मिन्' (सर्वस्मिन्) और 'इ' (देवे) प्रत्यय बताये हैं । आर्ष प्राकृत, पालि और संस्कृतके सप्तमीके एकवचनके प्रत्ययसे मालूम होता है कि 'स्मिन्' प्रत्ययके व्यवहारके लिये संस्कृतमें बहुत परिमित क्षेत्र है । तब प्राकृत एवं पालीमें वह सार्वत्रिक जैसा मालूम होता है। आर्ष प्राकृतमें 'कायसा,' 'जोगसा,' 'बलसा,' इत्यादि 'सा' प्रत्ययवाले रूप तृतीया विभक्तिके एकवचनमें आते हैं । वैसे ही पाली भाषामें 'बलसा', 'जलसा,' 'मुखसा' ऐसे 'सा' प्रत्ययवाले अनेक रूप आते हैं । आर्ष प्राकृतमें भूतकालके बहुवचनमें 'पुच्छिंसु,', 'गच्छिंसु' इत्यादि 'इंसु' प्रत्ययवाले रूप आते हैं । पालीमें भी 'अभविंसु', 'अपचिंसु,' 'अगच्छिंसु', ऐसे 'इंसु' प्रत्ययवाले रूपोंका प्रचार पाया जाता है । किसी सेट् धातुके भूतकालके तृतीय पुरुष बहुवचनमें 'इषुः' ऐसा सेट् प्रत्यय संस्कृतमें प्रयुक्त होता है जो पूर्वोक्त 'इंसु' की साथ साम्य रखता है। आर्ष प्राकृतके 'करित्तए', 'गच्छित्तए', 'विहरित्तए' के 'तए' प्रत्ययका साम्य पालीके तुमर्थक 'तवे' प्रत्ययकी साथ स्पष्ट मालूम होता है । प्राचीन संस्कृतमें 'तुम्' के अर्थमे 'तवे' और 'तवै' का प्रयोग मिलता है जो पूर्वोक्त पाली 'तवे' के साथ समानता रखता है। इसी प्रकार प्राकृत और पालीके शब्दोंके उच्चारणमें भी अनेक तरहका साम्य है । जैसेः—इसि (ऋषि), उजु (ऋजु), वुड्ढ (वृद्ध), धम्म (धर्म), तित्थ (तीर्थ), सच्च (सत्य), अच्छरिय (आश्चर्य) । इस कारणसे विद्यमान जैन आगमोंकी भाषाका कोई

खास नाम न दे कर, उसे आर्ष प्राकृत व प्राचीन प्राकृत कहना ही विशेष सुसंगत है ।

अधिक विचार किया जाय तो आर्ष प्राकृत, पाली और संस्कृत भाषामें उच्चारणोंकी विभिन्नता ही विभागका कारण है । देश–काल आदिके प्रभावसे जैसे सब पदार्थोंमे हानिवृद्धि हुआ करती है, उसी तरह मनुष्योंके उच्चारणोंमें भी हेरफेर हुआ करता है। प्राकृत और पालीके उच्चारण संस्कृतकी अपेक्षा अधिक सरल हैं। क्योंकि उसमें क्लिष्ट उच्चारवाले व्यंजनोंका प्रयोग नहीं है। इसी सरलताके कारण, ये दोनों भाषा आबालगोपाल तक फैली हुई थी। और इसके विपरीत क्लिष्ट उच्चारके कारण संस्कृत भाषाका क्षेत्र परिमित था ।

आचार्य हेमचंद्रने और दूसरे दूसरे प्राकृत भाषाके वैयाकरणोने प्राकृत शब्दके मूल 'प्रकृति' शब्दका अर्थ 'संस्कृत' किया है। और कहा है कि संस्कृत (प्रकृति) से आया हुआका नाम 'प्राकृत' है [३] । इस उल्लेखका तात्पर्य, प्राकृत भाषाका उत्पत्ति-कारण, संस्कृत भाषा है, ऐसा नहीं है। परंतु प्राकृत भाषा सीखनेके लिये संस्कृत शब्दोंको मूलभूत रख कर, उनके साथ उच्चारभेदके कारण प्राकृत शब्दोंका जो साम्य–वैषम्य है उसको दिखाते हुए प्राकृत भाषाके वैयाकरणोंने अपने अपने व्याकरणोंकी रचना की है। अर्थात् संस्कृत भाषाके वाहन द्वारा प्राकृत सिखलानेका उन लोगोंका यत्न है। इसी लिये और इसी आशयसे उन लोगोंने संस्कृतको प्राकृतकी योनि–उत्पत्तिक्षेत्र–कही है ऐसा मालूम होता है। दर असल संस्कृत और प्राकृत भाषाके

३. " प्रकृतिः संस्कृतम्, तत्र भवम्, तत आगत वा प्राकृतम् " । ८–१–१ ।

बीचमें किसी प्रकारका कार्यकारणभाव है ही नहीं। किंतु जैसे आजकल भी एक ही भाषाके शब्दोंके भिन्न भिन्न उच्चारण मालूम होते हैं—जैसे एक ग्रामीण ग्वाला जिस भाषाका प्रयोग करता है उसी भाषाका प्रयोग संस्कारापन्न नागरिक भी करता है, मात्र उच्चारणमें फरक रहता है, इसी कारणसे उनको कोई भिन्न भिन्न भाषाके बोलनेवाले नहीं कहता है—इसी तरह समाजके प्राकृत लोग प्राकृत उच्चार करते हैं और नागरिक लोग संस्कृत उच्चार करते है इससे ये दोनों भाषा भिन्न हैं ऐसा कहनेका कौन साहस करेगा? एक ही समयमें प्राकृत और संस्कृतके उच्चारका प्रवाह, इस प्रकार हमेशासे ही चलता आ रहा है। इसमे कोई एक परवर्ती और दूसरा एक पुरोवर्ती ऐसा विभाग ही नहीं है।

अस्तु। प्राकृत भाषाके विद्यमान जैन साहित्यमे भी आर्ष प्राकृतके और देश्यप्राकृतके प्रयोगोंको भी ठीक ठीक स्थान है। और ऐसे भी संख्यातीत शब्दोंके प्रयोग हैं जिनका उच्चारण बिलकुल संस्कृतके समान होता है।

जिस प्राकृत शब्दकी व्युत्पत्ति अर्थात् प्रकृतिप्रत्ययका विभाग नहीं हो सकता है, और जिस शब्दका अर्थ मात्र रूढी पर अवलंबित है, वैसे शब्दोंको देश्य प्राकृत[४] कहते हैं। हेमचंद्रादि वैयाकरणोंने ऐसे शब्दोंको अव्युत्पन्न कोटिमें रक्खे हैं। जैसे कि.—छासी—(छाश), चोरली—(श्रावण मासकी व० दि०[५] चतुर्दशी), चोढ—(बिल्व) इत्यादि। और देश्य शब्दोंमें ऐसे भी अनेक शब्द हैं जो यौगिक और मिश्र होनेके कारण व्युत्पन्न जैसे मालूम होते हैं।

---

४. देशीनाममाला श्लो, ३.

५. व० बहुल. दि० दिवस.

परंतु उनकी प्रसिद्धि व्याकरण और कोशोंमें नहीं है अर्थात् उनका वाच्यार्थ साहित्यमें प्रचलित नहीं है इसलिये वे भी देश्य शब्दोंमें परिगणित किये गये हैं। जिस प्रकार चंद्रके अर्थमें 'अमृतद्युति,' 'अमृतांशु' इत्यादि शब्द कोशादिकमें प्रसिद्ध हैं, उस प्रकार 'अमृतनिर्गम' शब्द चंद्रके अर्थमे कोशादिकमे प्रसिद्ध नहीं है। परंतु लोकभाषामें उसका चंद्र अर्थ प्रसिद्ध है। इस लिये 'अमयनिग्गम' शब्द व्युत्पन्न होने पर भी देश्य गिना गया है। इसी प्रकार अब्भपिसाय–अभ्रपिशाच (आभका पिशाच–राहु) जहणरोह–जघनरोह (जघनसे ऊगनेवाला–ऊरु) इत्यादि शब्द भी है।

समार, अनल, नीर, ग्राह ऐसे अनेक शब्द प्राकृतमे प्रयुक्त होते हैं जिनका उच्चारण बिलकुल संस्कृतके समान ही है। इस तात्पर्यको ले कर ही आचार्य दंडी[६] और आचार्य हेमचंद्रादिने[७] 'तत्सम' और 'देशी' ऐसे प्राकृतके दो विभाग बनाये है।

उच्चारणभेद ही प्राकृत, संस्कृत और तन्मूलक भाषाओंके भेदका और विस्तारका कारण है ऐसा आगे कहा गया है। वह उच्चारणभेद क्यों होता है ? इसके भी अनेक कारण प्राचीन लोगोंने बताये हैं। जैसे कि :–भाषाके महत्त्वमें अश्रद्धा, विद्वानोंका अभिमान,

६ "तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः"। काव्या० १–३३।

७. सूत्र ८–१–१.

८. "सर्वथा कारणवशात् कार्यो भाषाव्यतिक्रमः ॥ ३७ ॥
माहात्म्यस्य परिभ्रंशं मदस्यातिशयं तथा।
प्रच्छादनं च विभ्रान्ति यथालिखितवाचनम्।
कदाचिदनुवाद च कारणानि प्रचक्षते" ॥ ३८ ॥
षड्भाषाचंद्रिका पा. ५

लिख कर अक्षरोंका छेदना, लिखने और पढनेमें भ्रांति होनी, जैसा लिखा है वैसा ही वांचना, अनुवाद और अनुवादककी अव्यवस्था। इसके उपरांत दूसरी भाषा बोलनेवालोंका संसर्ग, भौगोलिक परिस्थिति, शारीरिक अस्वास्थ्यके कारण उच्चारणके स्थानोमें विकृति, राज्यक्रांति, शुद्ध उच्चारोंकी उपेक्षा, व्याकरणका अज्ञान इत्यादि अनेक है। इस 'जिनागमकथासंग्रह' में आर्ष और लौकिक दोनों प्राकृतके शब्दप्रयोग हैं। उनमेसे जो शब्द समझनेमें कठिन प्रतीत होते है उनकी टिप्पणी दी जायगी। सामान्य संस्कृत पढा हुआ भी इन कथाओंमें प्रवेश कर सके इस लिये यहां पर प्राकृत भाषाका सामान्य व्याकरण दिया जाता है। जिससे प्रवेशक, प्राकृत और संस्कृतके उच्चारभेद भली-भाति समझ सकेगा।

प्राकृत भाषाका व्याकरण

प्राकृतमें स्वरोंका प्रयोग

(१) प्राकृतमें ऋ ॠ, ऌ, तथा ऐ, औ का प्रयोग नहीं होता है। सिर्फ अ, इ उ (ह्रस्व) तथा आ, ई, ऊ, ए, ओ (दीर्घ) इतने स्वर प्रयुक्त होते हैं।

(२) कोई भी विजातीय संयुक्त व्यंजनका प्रयोग प्राकृतमें नहीं होता। उदा० 'शुक्र' नही पर 'सुक्क' 'पक्व' नही पर 'पक्क' इत्यादि।

अपवाद—म्ह, ण्ह, न्ह, ल्ह, य्ह, द्र।

(३) अकेले अस्वर व्यंजनका प्रयोग भी नही होता है। उदा० 'यशस्' नही पर 'जस' 'तमस्' नहीं पर 'तम'।

(४) तालव्य श् और मूर्धन्य ष् के स्थानमें मात्र दंत्य स् का प्रयोग होता है। उदा० 'शृगाल' नहीं पर 'सिआल,' 'कषाय' नहीं पर 'कसाय'।

(५) संयुक्त व्यंजनसे पहेलेके दीर्घस्वरके स्थानमें प्राकृतमें ह्रस्व स्वरका प्रयोग होता है। उदा० आम्र–अंब ताम्र–तंब।

(६) संयुक्त व्यंजनसे पहलेके 'इ' और 'उ' के स्थानमें अनुक्रमे 'ए' और 'ओ' का प्रयोग प्राय: होता है। उदा० बिल्व–बेल्ल, पुष्कर–पोक्खर ।

(७) [अ] व्यंजनसे मिले हुए 'ऋ' के स्थानमें प्राकृतमें 'अ' का प्रयोग होता है, और कितनेही शब्दोंमें 'इकार' और 'उकार' का भी प्रयोग होता है । उदा० घृतं–घयं, शृगाल–सिआल, वृद्ध–वुड्ढ ।

[आ] केवल अर्थात् व्यंजनसे नही जुड़े हुए 'ऋ' के स्थानमे 'रि' का प्रयोग होता है । उदा० ऋद्धि–रिद्धि ।

[इ] समासवाले शब्दोंमें प्रारंभिक शब्दके 'ऋ' को अवश्य 'उ' हो जाता है। उदा० मातृष्वसा–माउसिआ (मासी) ।

(८) 'कृप्त' के स्थानमें 'किलित्त' का प्रयोग प्राकृतमें होता है । और 'कृन्न' के स्थानमे 'किलिन्न' का होता है ।

(९) 'ऐ' के स्थानमे 'ए' का तथा 'औ' के स्थानमें 'ओ' का प्रयोग होता है । उदा० वैद्य–वेज्ज, यौवन–जोव्वण ।

प्राकृतमें व्यंजनोंका प्रयोग

(१) एक ही शब्दके भीतर रहे हुए असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य और व का प्रयोग प्राकृतमें नहीं होता है। किंतु उनके लोप होने के बाद उनका स्वर बचा रहता है। यदि वह बचा हुआ स्वर 'अ' और 'आ' से परे हो तो प्राय: उसके स्थानमें अनुक्रमसे 'य' और 'या' का प्रयोग हो जाता है । उदा० नगर–नयर, प्रजा–पया, शचि–सइ ।

(२) ख, घ, थ, ध, फ, भ ये व्यंजन अनुक्रमसे क्+ह्, ग्+ह्, त्+ह्, द्+ह्, प्+ह्, ब्+ह् से बने हुए हैं । लेकिन प्राकृत भाषामें ऊपर अंक २ के नियमानुसार विजातीय संयुक्त

व्यंजनोंका प्रयोग निषिद्ध है। अतः शब्दके आदिमें नहीं आये हुए और असंयुक्त ऐसे उपर्युक्त सभी अक्षरोंके आदि अक्षरका प्राकृतमें प्रयोग नहीं होता है अर्थात् उन सबके स्थानमें केवल 'ह' का प्रयोग होता है। उदा० मुख–मुह, मेघ–मेह, नाथ–नाह, बधिर–बहिर, सफल–सहल, शोभा–सोहा।

(३) स्वरसे परे आये हुए असंयुक्त ट, ठ, ड, न, प, फ, और ब के स्थानमें अनुक्रमसे ड, ढ, ल, ण, ब, भ और व का प्रयोग होता है। उदा०–घट–घड, पीट–पीढ, गुड–गुल, गमन–गमण, कूप–कूब, रेफ–रेभ, अलाबु–अलावु।

(४) शब्दके आदिके 'न'के स्थानमें 'ण'का प्रयोग विकल्पसे होता है। उदा० नगर–नयर, णयर।

(५) शब्दके आदिमे आये हुअे 'य' के स्थानमें 'ज' का प्रयोग होता है। उदा० यम–जम।

(६) अनुस्वारसे परे आये हुअे 'ह' के स्थानमें 'घ' का प्रयोग होता है। उदा० सिंह–सिंघ।

(७) [अ] प्राकृतमें क्ष, ष्क और स्क के स्थानमे ख का;[९] त्यके स्थानमे च का;[१०] द्य, र्य और य्य के स्थानमे ज का; ध्य और ह्यके स्थानमे झ का; र्त के स्थानमें ट का,[११] स्त के स्थानमें थ का;[१२]

---

९ कितनेही शब्दोमे क्ष का छ भी होता है। उदा० क्षण–खण (समय), छण (उत्सव), क्षमा–खमा, छमा (पृथिवी)। कितनेही शब्दोमें क्ष का झ भी होता है। उदा० क्षीण–झीण; क्षर्–झर्।

१० अपवाद –चैत्य–चेइय।

११. अपवाद –मुहूर्त–मुहुत्त, कीर्ति–कित्ति, धूर्त–धुत्त इत्यादि।

१२. अपवादः–समस्त–समत्त, स्तंब–तब।

ष्प और स्प के स्थानमें फ का; स्न और ज्ञ के स्थानमें ण का; न्म के स्थानमें म का, ष्म और क्म के स्थानमें प का और ष्ट के स्थानमें ठ का[१३] प्रयोग होता है। उदा० क्षय–खय, स्कन्ध–खंध, त्याग–चाअ; द्युति–जुइ, ध्यान–झाण, स्तुति–थुइ, ज्ञान–णाण ।

[आ] उक्त क्ष, ष्क, स्क आदि अक्षर यदि शब्दके बीचमें हों और दीर्घ स्वर तथा अनुस्वारसे पर न हों तो उनकी द्विरुक्ति होती है। और बादमें निम्नांकित आठवे नियमके अनुसार उसमें परिवर्तन होता है। उदा० मक्षिका–मक्खिआ, पुष्कर–पोक्खर, सत्य–सच्च, मद्य–मज्ज, मर्यादा–मज्जाया, जय्य–जज्ज, उपाध्याय–उवज्झाय, गुह्य–गुज्झ; वर्ती–वट्टी, विस्तार–वित्थार, पुष्प–पुप्फ, बृहस्पति–बिहप्फइ, निम्न–निण्ण, विज्ञान–विण्णाण, मन्मथ–वम्मह; कुड्मल–कुंपल, रुक्मिणी–रुप्पिणी, काष्ठ–कट्ठ ।

(८) द्विरुक्तिको पाये हुए ख्ख, छ्छ, ठ्ठ, थ्थ, फ्फ, घ्घ, झ्झ, ढ्ढ, ध्ध, भ्भ के स्थानमे अनुक्रमसे क्ख, च्छ, ट्ठ, त्थ, प्फ, ग्घ, ज्झ, ड्ढ, द्ध, ब्भ होते हैं।

(९) ग्म के स्थानमे म्म का और ह्व के स्थानमें ब्भ का प्रयोग विकल्पसे होता है। उदा० युग्म–जुम्म, जुग्ग, विह्वल–विब्भल, विहल ।

(१०) ह्रस्व स्वरसे परे आये हुए थ्य, प्स, श्च, और त्स के स्थानमें च्छ का प्रयोग होता है। उदा० पथ्य–पच्छ, अप्सरा–अच्छरा, पश्चात्–पच्छा, उत्साह–उच्छाह ।

(११) श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण इन सबके स्थानमें ण्ह

---

१३. अपवाद:—उष्ट्र–उट्ट, इष्टा–इट्टा, संदिष्ट–संदिट्ट ।

का प्रयोग होता है । उदा० प्रश्न–पण्ह, पृष्णि–पण्ही (पानी), स्नात–ण्हाअ, वह्नि–वण्ही, पूर्वाह्ण–पुव्वण्ह, तीक्ष्ण–तिण्ह (तीणुं) ।

(१२) श्म, ष्म, स्म, ह्म इनके स्थानमें म्ह का प्रयोग होता है और ह्ल के स्थानमें ल्ह का प्रयोग होता है। उदा० कुश्मान–कुम्हाण, ग्रीष्म–गिम्ह, विस्मय–विम्हय, ब्रह्मा–बम्हा, आह्लाद–आल्हाय ।

(१३) र्य के बीचमे और र्ह के बीचमे इ का प्रयोग प्राकृतमे होता है अर्थात र्य का 'रिय' और र्ह का 'रिह' हो जाता है । उदा० भार्या–भारिया, गर्हा–गरिहा ।

(१४) संयुक्त ल के पहले प्राकृतमे इ आजाता है । उदा० क्लेश–किलेस ।

(१५) ह्य का य्ह होता है । उदा० गुह्य–गुय्ह ।

(१६) तन्वी, बह्वी, लघ्वी, गुर्वी इस प्रकारके स्त्रीलिंगी शब्दोमें व के पहले प्राकृतमे उ आजाता है। उदा० तन्वी–तणुवी, बह्वी–बहुवी इ० ।

(१७) शब्दके अंत्य व्यंजनका प्राकृतमे लोप हो जाता है । उदा० नमस्–नम, तावत्–ताव ।

अपवादः–(१) शरद्–सरओ, भिषक्–भिसओ इत्यादि । आयुष्–आउसो, आउ, धनुष्–धणुह, धणू ।

(२) स्त्रीलिंगी शब्दोंके अंत्य व्यंजनको आ अथवा या हो जाता है ।

उदा० सरित्–सरिआ, सरिया ।

अपवादः–विद्युत्–विज्जु, क्षुध्–छुहा, दिक्–दिसा, प्रावृष्–पाउस, अप्सरस्–अच्छरसा, अच्छरा; ककुभ्–कउहा ।

(३) रकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके अंत्य 'र्' को रा होता है।

उदा० गिर्–गिरा।

(१८) संयुक्त व्यंजनमें पहेले आये हुए क्, ग्, ट्, ड्, त्, द्, प्, श्, ष्, स्, जिह्वामूलीय (ᳵ) और उपध्मानीयका (ᳶ) प्राकृतमें लोप हो जाता है और बचा हुआ व्यंजन यदि शब्दके आदिमें न हो तो उसकी द्विरुक्ति हो जाती है। और बादमें नियम ८ के अनुसार उसमें परिवर्तन होता है।

उदा० भुक्त–भुत्त, दुग्ध–दुद्ध, षट्पद–छप्पअ, निश्चल–निच्चल, तुष्ट–तुट्ठ, निस्पृह–निप्पह, स्तव–तव।

(१९) संयुक्त व्यंजनमें पीछे आये हुए म्, न्, और य् का लोप हो जाता है। और शेष बचा हुआ व्यंजन यदि शब्दकी आदिमें न हो तो द्विरुक्तिको पाता है। उदा० युग्म–जुग्ग, । नग्न–नग्ग, श्यामा–सामा।

(२०) संयुक्त अक्षरमें पहेले या पीछे रहे हुए ल्, ब्, व् और र् का लोप हो जाता है। और शेष बचा हुआ व्यंजन यदि शब्दकी आदिमें न हो तो द्विरुक्तिको पाता है। उदा० उल्का–उक्का, श्लक्ष्ण–सण्ह, शब्द–सद्द, उल्बण–उल्लण, पक्व–पक्क, वर्ग–वग्ग, चक्र–चक्क।

अपवादः–समुद्र–समुद्द, समुद्र। निद्रा–निद्दा, निद्रा।

संधि

स्वरसंधि

(१) प्राकृतमें एक पदमें रहे हुए स्वरोंके बीचमें संधि नहीं होती है। उदा० नइ (नदी)। किंतु दो भिन्न पदोंमें रहे हुए स्वरोंकी संधि संस्कृत व्याकरणके नियमोंके अनुसार विकल्पसे होती है। उदा० मगह+अहिवइ = मगह अहिवइ, मगहाहिवइ। जिण+ईसो = जिण ईसो, जिणेसो।

(२) सामासिक शब्दोंमें पूर्व शब्दका अंतिम स्वर प्रयोगानुसार ह्रस्व हो तो दीर्घ होता है और दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है। सत्त+वीसा = सत्तावीसा (सप्तविंशति) गोरी+हरं = गोरिहरं (गौरीगृहं)।

(३) इ, ई, और उ, ऊ के पीछे कोई भी विजातीय स्वर आवे और ए तथा ओ के पीछे कोई भी स्वर आवे तो दो पदके बीचमें भी संधि नहीं होती है।

उदा० नई एत्थ (नदी अत्र), वहू एइ (वधूः एति), वणे अडइ (वने अटति), अहो अच्छरियं (अहो आश्चर्यं)।

(४) स्वरान्त और स्वरादि पद साथ आने पर कभी कभी स्वरान्त पदके अंत्यका स्वर और कभी कभी स्वरादि पदके आदिका स्वर लुप्त हो जाता है । उदा० नीसास + ऊसासा = नीसासूसासा (निःश्वासोच्छ्वासौ) । अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ । एस + इमो = एसमो (एषोऽयम्) । जइ + एत्थ = जइत्थ (यद्यत्र) ।

(५) क्रियापदके स्वरकी प्रायः करके संधि नहीं होती है । उदा० होइ+इह, होइ इह (भवति+इह) ।

(६) व्यंजनका लोप होनेके बाद, जो स्वर बचा रहता है उसकी प्रायः संधि नहीं होती है । उदा० निसा+अर=निसाअर (निशाकरः, निशाचरः) ।

व्यंजनसंधि

(१) अ के बाद आये हुए विसर्गके स्थानमें उस पूर्व अ के साथ ओ हो जाता है । उदा० अग्रत.—अग्गओ ।

(२) पदान्त म् का अनुस्वार हो जाता है । परंतु जब म् के पीछे स्वर आवे तब अनुस्वार विकल्पसे होता है ।

उदा० गिरिम्—गिरिं । उसभम् अजियं = उसभं अजियं, उसभमजियं (ऋषभम् – अजितम्)

(३) ङ्, ञ्, ण्, न् के स्थानमें पश्चात व्यंजन होनेसे सर्वत्र अनुस्वार हो जाता है । उदा० पङ्क्ति—पङ्ति—पंति । विन्ध्य विन्झो— विंझो ।

(४) अनुस्वारके पश्चात् क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग और प वर्गके अक्षर होनेसे अनुक्रमसे अनुस्वारको ङ्, ञ्, ण्, न्, म् विकल्पसे होते हैं । उदा० अङ्गण, अंगण ।

(५) कितनेक शब्दोंमें प्रयोगानुसार पहले अक्षर पर या दूसरे अक्षर पर या तीसरे अक्षर पर अनुस्वार बढ जाता है ।

उदा:—(१) पुंछ (पुच्छ) (२) मणंसी (मनस्वी) (३) अइमुंतय (अतिमुक्तक)।

(६) जहां स्वरादि पदोंकी द्विरुक्ति हुई हो, वहाँ दो पदोंके बीचमे म् विकल्पसे आ जाता है। एक + एक, एकमेक्क, एक्केक (एकैकम्)

(७) कितनेक शब्दोंमें प्रयोगानुसार अनुस्वारका लोप हो जाता है । वीसा (विंशति), सीह (सिंघ—सिंह)

अव्ययसंधि

(१) पदसे परे आये हुए अपि के अ का लोप विकल्पसे होता है । लोप होनेके बाद अपि का प् यदि स्वरसे परे हो तो उसका व् हो जाता है ।

उदा० कहं + अपि = कहंपि, कहमवि (कथमपि)। केण + अपि = केणवि, केणावि (केनापि)।

(२) पदसे परे आये हुए इति के इ का लोप होता है। और यदि बचा हुआ 'ति' स्वरसे परे हो तो उसका त्ति हो जाता है । उदा० किं + इति = किंति । तहा + इति = तहत्ति ।

नामके रूपाख्यान

प्राकृतमें द्विवचन नहीं है ।

अकारांत पुंलिंग

वीर

	एकवचन	बहुवचन
१	वीरो, वीरे (वीरः)	वीरा (वीराः)
२	वीरं (वीरम्)	वीरे, वीरा (वीरान्)
३	वीरेण, वीरेणं (वीरेण)	वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ (वीरेभिः, वीरैः)
४	वीराय, वीरस्स (वीराय)	वीराण, वीराणं (वीराणाम्)
५	वीरा (वीरात्), वीरत्तो (वीरत.), वीराओ, वीराउ, वीराहि, वीराहिंतो	वीरत्तो, वीराओ, वीराउ, वीराहि, वीरेहि, (वीरेभ्यः) वीराहिंतो, वीरेहिंतो, वीरासुंतो, वीरेसुंतो

६	वीरस्स, (वीरस्य)	वीराण, वीराणं (वीराणाम्)
७	वीरंसि, वीरे (वीरे), वीरम्मि	वीरेसु, वीरेसुं (वीरेषु)
संबोधन	वीरो, वीरे वीर, वीरा (हे वीर)	वीरा (वीराः)

———:०:———

अकारान्त नपुसकलिंग

कुल

१	कुलं (कुलम्)	कुलाणि, कुलाइं, कुलाइँ (कुलानि)
२	,,	,,
३	तृतीयासे सप्तमी तकके रूप वीरकी तरह समझना।	
संबोधन	कुल (कुल)	प्रथमाके अनुसार

नोध—पुंलिगमे प्रथमाके एकवचन 'वीरे' की तरह नपुंसक लिंगमे भी कुले, नयरे, चेइए इत्यादि प्रथमा एकवचन के रूप आर्ष प्राकृतमे पाये जाते है।

———.०:———

इकारान्त पुंलिग

इसि (ऋषि)

१	इसी (ऋषिः)	इसओ, इसउ, इसिणो, इसी (ऋषयः)

२	इसिं (ऋषिम्)	इसिणो, इसी (ऋषीन्)
३	इसिणा (ऋषिणा)	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ (ऋषिभिः)
४	इसये, इसिणो, इसिस्स (ऋषये)	इसीण, इसीणं (ऋषीणाम्)
५	इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहितो, इसिणो (ऋषित.) (ऋषेः)	इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहितो, इसीसुंतो (ऋषिभ्यः)
६	इसिणो, इसिस्स, (ऋषेः)	इसीण, इसीणं (ऋषीणाम्),
७	इसिंसि, इसिम्मि (ऋषौ)	इसीसु, इसीसुं (ऋषिषु)
संबोधन	इसी, इसि (हे ऋषे)	प्रथमाके अनुसार

—:o:—

उकारान्त पुंल्गिग

भाणु (भानु)

१	भाणू (भानुः)	भाणवो, भाणओ, भाणउ, भाणू, भाणुणो (भानवः)
२	भाणुं (भानुम्)	भाणुणो, भाणू (भानून्)

इसके आगेके रूपाख्यान इकारांत ‘ इसी ’ शब्दके समान समझना।

—:o:—

इकारांत नपुंसकलिंग

दहि (दधि)

१ दहिं (दधि) दहीणि, दहीइं दहीइं (दधीनि)

२ ,, ,,

३ तृतीयासे सप्तमी तकके रूपाख्यान उपर्युक्त इकारांत इसि शब्दके अनुसार समझना।

संबोधन दहि (दधि) प्रथमाके अनुसार

—:o:—

उकारांत नपुंसकलिंग

महु (मधु)

१ महुं (मधु) महूणि, महूइं, महूइं (मधूनि)

२ ,, ,,

३ तृतीयासे सप्तमी तकके सब रूप भाणु शब्दके अनुसार समझना।

संबोधन मधु (मधु) प्रथमाके अनुसार

—:o:—

ऋकारान्त पुंलिंग

पिउ (पितृ)

१ पिया (पिता) पियवो, पियओ, पियउ, पिऊ, पिऊणो (पितरः)

२ पियरं (पितरम्) पिउणो, पिऊ (पितॄन्)

३ तृतीयासे सप्तमी तक, भाणु के अनुसार समझना।

संबोधन हे पिअ, हे पिअरं (हे पितः) प्रथमाके अनुसार

नोंधः—पितृ प्रभृति शब्द विशेष्यवाचक हैं और दातृ प्रभृति शब्द विशेषणवाचक हैं। विशेष्यवाचक शब्दके अंत्य ऋ के स्थानमें उ और अर का प्रयोग होता है। जैसेः—पितृ—पिउ, और पिअर; जामातृ—जामाउ, जामायर। और विशेषणवाचक शब्दके स्थानमें उ और आरका प्रयोग होता है। जैसेः—दातृ—दाउ—दायार, कर्तृ—कत्तु—कत्तार। ये दूसरे अकारान्त अंगके रूपाख्यान वीर के समान समझना। और उकारान्त अंगके रूपाख्यान भाणु के समान समझना।

———:०:———

व्यञ्जनांत नाम

(१) जो नाम मत् वत् और अत् को अंतमें लिये हुए हैं उनके अंतके अत् के स्थानमे प्राकृतमे अन्त का प्रयोग होता है और बादमे उनके रूप अकारान्त वीर की तरह चलते हैं। उदा० भगवत्—भगवन्त; भवत्—भवन्त; धीमत्—धीमन्त।

(२) जिन नामोंके अंतमे अन् है उन नामोंके अंतके अन्का प्राकृतमें आण विकल्पसे हो जाता है और बादमे उसके रूपाख्यान अकारान्त वीर की तरह होते हैं। उदा० राजन्—रायाण, राय; आत्मन्—अप्पाण, अप्प, पूषन्—पूसाण, पूस।

अन् अंतवाले शब्दोंके और भी अनियमित रूप होते हैं जो यहां दिये जाते है।

पूषन्

१	पूसा (पूषा)	पूसाणो (पूषण.)
२	पूसिणं (पूषणम्)	पूसाणो (पूष्णः)
३	पूसणा (पूष्णा)	

४–६ पूसाणो (पूष्णे) पूसिण, पूसिणं (पूषभ्यः, पूष्णाम्)

५ पूसाणो (पूष्णः)

——:०:——

राजन् शब्दके रूप और भी अधिक अनियमित हैं

राजन् ।

१	राया (राजा)	रायाणो, राइणो (राजानः)
२	राइणं (राजानम्)	रायाणो, राइणो (राज्ञः)
३	राइणा, रण्णा (राज्ञा)	राईहि, राईहिं, राईहिँ (राजभिः)
४	रण्णो. राइणो, रण्णे (राज्ञे)	राईण, राईणं, (राजभ्यः, राज्ञाम्)
५	रण्णो, राइणो (राज्ञः)	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहि, राईहितो, राईसुंतो (राजभ्य)
६	,, ,,	राईण, राईणं (राज्ञाम्)
७	राइंसि, राइम्मि (राजनि)	राईसु. राईसुं (राजसु)

संबोधन प्रथमानुसार ।

——:०:——

आत्मन् शब्द के तृतीया एकवचनमें अप्पणिआ, अप्पणइआ इतने रूप अधिक हैं । और सब पूषन् की तरह होते है ।

——:०.——

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

गंगा

१	गंगा (गङ्गा)	गंगाउ, गंगाओ, गंगा (गङ्गाः)
२	गंगं (गङ्गाम्)	,, ,,

३	गंगाअ, गंगाइ, गंगाए (गङ्गया)	गङ्गाहि, गङ्गाहिं, गङ्गाहिँ (गङ्गाभिः)
४	,, (गङ्गायै)	गंगाण, गंगाणं (गङ्गाभ्यः)
५	,, गंगत्तो, गंगाओ, गंगाउ, गंगाहिंतो (गङ्गायाः)	गंगत्तो, गंगाओ, गंगाउ, गंगाहिंतो, गंगासुंतो (गङ्गाभ्यः)
६	गंगाअ, गंगाइ, गंगाए (गङ्गायाः)	गंगाण, गंगाणं (गङ्गानाम्)
७	,, (गङ्गायाम्)	गंगासु, गंगासुं (गङ्गासु)
संबोधन	गंगे, गंगा (गङ्गे)	प्रथमाके अनुसार

नोंध —१७ वे नियमके अनुसार जो शब्द आकारान्त होते हैं उनके संबोधनका एकवचन एकारान्त नहीं होता है ।

——:०:——

इकारान्त स्त्रीलिंग

गइ (गति)

१	गई (गति)	गइउ, गइओ, गई (गतयः)
२	गइं (गतिम्)	,, (गतीः)
३	गइअ, गईआ, गईइ, गईए (गत्या)	गईहि, गईहिं, गईहिँ (गतिभिः)
४	,, (गतये, गत्यै)	गईण, गईणं (गतिभ्यः)
५	,, गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो (गतेः)	गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो, गईसुंतो (गतिभ्यः)
६	चतुर्थीके अनुसार (गतेः, गत्याः)	चतुर्थीके समान (गतीनाम्)

७ ,, (गतौ, गत्याम्) गईसु, गईसुं (गतिषु)
संबोधन गइ, गई (हे गते) प्रथमाके अनुसार

दीर्घ ईकारान्त, ह्रस्व उकारान्त और दीर्घ ऊकारान्त के रूपाख्यान गति के सदृश समझने।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

मातृ शब्दके स्थानमें माआ और मायरा ऐसे दो प्रयोग प्राकृतमें होते हैं। उनके सब रूप गंगा की तरह समझना। सिर्फ संबोधन प्रथमाकी तरह ही होना है।

सर्वनाम

अकारान्त पुंलिग सर्वनामके रूप वीर की तरह होते हैं। आकारान्त सर्वनाम गंगा की तरह होते हैं और अकारान्त नपुंसक कुल की तरह होते हैं। लेकिन जो कुछ मुख्य विशेषता है वह नीचे दी जाती है।

सव्व (सर्व)

१ .. सव्वे (सर्वे)
४–६ . सव्वेसिं (सर्वेषाम्)
५ सव्वम्हा
७ सव्वत्थ, (सर्वत्र) सव्वस्सिं, सव्वहिं, सव्वम्मि (सर्वस्मिन्)

युष्मद्

१ तं, तुं, तुमं (त्वं) भे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह (यूयम्)
२ ,, (त्वाम्) भे, तुब्भे, तुज्झ, वो (युष्मान्, वः)

३	भे, तइ, तए, तुमइ, तुमे (त्वया)	भे, तुब्भेहि (युष्माभिः)
४–६	तइ, तुम्हं, तुह, तुहं, ते, तुमे (तुभ्यम्, तव, ते)	भे, तुब्भ, तुहाण, तुहाणं, तुमाण, तुमाणं, वो (युष्मभ्यम्, युष्माकम्, वः)
५	तुब्भ, तुब्भा, तहिंतो, तुवा, तुमा, तुब्भाउ (त्वत्)	तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भेहि, तुब्भेहिंतो (युष्मत्)
७	तइ, तए, तुमए, तुमे, तुम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि (त्वयि)	तुमेसु, तुब्भेसु, तुमसु (युष्मासु)

———:०:———

अस्मद्

१	म्मि, हं, अहं (अहम्)	अम्हे, अम्ह, मो, वयं (वयम्)
२	णं, मं, ममं (माम्)	अम्हे, अम्ह, णे, (अस्मान्, नः)
३	मइ, मए, मयाइ, मे (मया)	अम्ह, अम्ह, अम्हेहि, अम्हाहि (युष्माभिः)
४–६	मज्झ, मज्झ, मम, मइ, अम्हं (मह्यम्, मे, मम)	अम्हाण, मज्झाण, अम्हे, मज्झ, अम्हो, णे, णो (अस्मभ्यम्, अस्माकम्, नः)
५	ममाओ, मज्झत्तो, मज्झा, मज्झाहि, मइत्तो (मत्)	अम्हत्तो, अम्हाहि, अम्हेसुंतो, ममेहि (अस्मत्)
७	ममाइ, मइ, मए (मयि)	अम्हेसु, अम्हसु, मज्झेसु, मज्झसु (अस्मासु)

———:०:———

संख्यावाचक शब्द

दु (द्वि) तीनो लिंगोमे बहुवचनके रूप

१ दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे

२ ,, ,,

३ दोहि, दोहिं, दोहि, वेहि, वेहिं, वेहि

४--५ दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं, वेण्ह, वेण्हं, बिण्ह, बिण्हं

६ दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहितो, दोसुंतो, वित्तो, वेओ, वेउ, वेहितो, वेसुंतो ।

७ दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं ।

ति (त्रि) तीनों लिंगके रूप

१-२ तिण्णि

४-६ तिण्ह, तिण्हं आगीके 'इग्गि' के वहुवचन अनुसार ।

चउ (चतुर्) तीनों लिंगमें

१-२ चत्तारो, चउरो, चत्तारि

३ चउहि, चउहिं चउहिँ

चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ

४-५ चउण्ह, चउण्हं

शेष रूप भाणु के बहुवचनके अनुसार ।

पंच (पञ्च) तीनों लिंगमे

१-२ पञ्च

३ पंचेहि, पंचेहिं पचेहिँ,

पंचाहि, पंचाहिं, पंचाहिँ ।

४–६ पंचण्ह, पंचण्हं

शेष रूप वीर के बहुवचनके अनुसार ।

———:०———

क्रियापद

सूचना.—प्राकृतमे गणोंका भेद, आत्मनेपद या परस्मैपदका भेद, सेट् अनिट् का भेद इत्यादि कुछ भी नहीं है । मात्र स्वरांत और व्यंजनांत धातुके रूपमे इतना फरक होता है कि व्यंजनांत धातुके अंतमे अ अवश्य लगता है और स्वरांत धातुको विकल्पसे लगता है । धातुके कुछ मुख्य मुख्य रूप, उदाहरणके तौर पर दिये जाते है ।

वर्तमानकाल

हस्

१	हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा (हसामि)	हसमो, हसामो, हसिमो, हसेमो, हसेज्ज, हसेज्जा (हसाम:)
२	हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा (हससि)	हसइत्था, हसेइत्था, हसह, हसेह, हसेज्ज, हसेज्जा (हसथ)
३	हसइ, हसेइ, हसए, हसेए, हसेज्ज, हसेज्जा (हसति)	हसंति, हसेंति, हसंते, हसेंते, हसइरे, हसेइरे, हसेज्ज, हसेज्जा (हसन्ति)

नोंध:—प्रथम पुरुष बहुवचनमें मो, मु, म ऐसे तीन प्रत्यय धातुसे लगते हैं । उनमेंसे मात्र मो का रूप ऊपर दिया गया है । मु और म का भी उसके समान समझना । जैसे:—हसमु, हसामु } हसम, हसाम } है।

स्वरांत धातु। वर्तमानकाल

(हु) हो (भू)

नोंध—इस प्रकरणके आदिमें लिखी हुई सूचनाके अनुसार जब स्वरांत धातुको 'अ' लगता है तब इसके सब रूप हस् की तरह होते है। जैसे होअमि, होअसि, होअइ इ०

जब 'अ' नही लगता है उस अवस्थाके रूप नीचे दिये जाते है।

१	होमि	होमो, होमु, होम
२	होसि	होइत्था, होह
३	होइ	होंति होंते, होइरे

भूतकाल

हस्

१–२–३ एकवचन और बहुवचन	(हस् + ईअ =) हसीअ

(हु) हो

१–२–३ एकवचन और बहुवचन	हो + सी = होसी, होअसी हो + ही = होही, होअही हो + हीअ = होहीअ, होअहीअ

भविष्यकाल

हस्

१ हसिस्सं, हसेस्सं, हसिस्सामो, हसेस्सामो,
हसिस्सामि, हसेस्सामि, हसिहामो, हसेहामो,
हसिहामि, हसेहामि, हसिहिमो, हसेहिमो,
हसिहिमि, हसेहिमि, हसेज्ज, हसेज्जा

हसेज्ज, हसेज्जा	इसके अलावा हसि अंगको स्सामु, हामु, हिमु, स्साम, हाम, हिम, हिस्सा, हित्था इतने प्रत्यय लगा कर पूर्ववत् रूप कर लेना। जैसे--हसिस्सामु, हसेस्सामु। हसिहामु, हसेहामु। इ०
२ हसिहिसि, हसेहिसि, हसिहिसे, हसेहिसे, हसेज्ज, हसेज्जा	हसिहित्था, हसेहित्था, हसिहिह, हसेहिह, हसेज्ज, हसेज्जा
३ हसिहिइ, हसेहिइ, हसिहिए, हसेहिए, हसेज्ज, हसेज्जा	हसिहिंति, हसेहिंति, हसिहिंते, हसेहिंते, हसिहिइरे, हसेहिइरे, हसेज्ज, हसेज्जा

(हू) हो

ऊपर लिखे अनुसार उक्त धातुके हो और होअ दो अंग होंगे। इन दोनोंको हस् की तरह प्रत्यय लगा लेना। उदा० हो--होस्सं, होस्सामि होहामि, होहिमि इ०। होअ--होअ + इस्सं = होएस्सं (स्वरोंका प्रयोग नियम ६) होइस्सं (देखो स्वरसंधि नियम ४)

होएस्सामि होएहामि होएहिमि

होइस्सामि होइहामि होइहिमि

आज्ञार्थ और विध्यर्थ

हस्

१ हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु

हसमो, हसामो, हसिमो, हसेमो

२ हसमु, हसेसु, हसेज्जसु, हसह, हसेह
हसेज्जहि, हसेज्जे, हस

३ हसउ, हसेउ हसंतु, हसेतु

(हू) हो

होअ से, हस अंगकी तरह प्रत्यय लगा लेना। जैसेः–
होअमु, होआमु, होइमु, होएमु इ०

मात्र हो के रूप

१ होमु होमो
२ होसु, होहि होह
३ होउ होतु

क्रियातिपत्त्यर्थ

हस

१–२–३ एकवचन बहुवचन	हसतो हसमाणो हसेज्ज, हसेज्जा

(हू) हो

१–२–३ एकवचन बहुवचन	होतो होमाणो होज्ज, होज्जा

——:०.——

कृदन्त

वर्तमानकृदंत

पुं० हसंत, हसमाण, हसेंत, हसेमाण
(पुंलिंग वीर की तरह और नपुंसक कुल की तरह)

स्त्री० हसंती, हसंता, हसई, हसेई, हसमाणी, हसमाणा, हसेमाणी, हसेमाणा (इनमेंसे आकारांत गंगा की तरह और ईकारान्त गति की तरह)

(हू) हो

पुं० होंत, होमाण, होएंत, होअंत, होएमाण, होअमाण (पुंलिंग वीर की तरह और नपुंसक कुल की तरह)

स्त्री० होंती, होंता, होएंती, होएंता, होअंती, होअंता, होमाणी, होमाणा, होअमाणी, होअमाणा, होएमाणी, होएमाणा, होअई, होएई, होई

(आकारांत गंगा की तरह और ईकारान्त गति की तरह)

भूतकृदंत

भूतकृदंतमे धातुको अ और त प्रत्यय लगते है । और उसके पहेले यदि अकार आवे तो उसको इ हो जाती है । उदा० हस् + अ = हस–हसिअ, हसित । हू + अ = हूअ–हूइअ, हूइत; हू–हूअ, हूत ।

हेत्वर्थकृदंत

धातुके अंगको तुं प्रत्यय लगनेसे हेत्वर्थकृदंत होता है और तुं के पहेले के अ को इ और ए हो जाता है । उदा० हसितुं, हसेतुं और हसिउं, हसेउं । (व्यंजनोंका प्रयोग नियम १)

संबंधकभूतकृदंत

धातुके अंगको तुं, अ, तूण, तूणं, तुआण, तुआणं प्रत्यय लगानेसे संबंधकभूतकृदंत होता है । और उस प्रत्ययके प्रथम अ का प्रायः इ और ए हो जाता है । हसितुं, हसेतुं

हसिअ, हसिनूण, हसेनूण, हसितूणं, हसेतूणं, हसितुआण, हसितुआणं, हसेतुआण, हसेतुआणं । और व्यंजनप्रयोग संबंधी नियम १ के अनुसार त् का लोप करके भी रूप समझना। जैसे हसिऊण, हसेऊण इ०

कर्तासूचक कृदत

धातुके अंगको इर प्रत्यय लगानेसे उसका कर्तृसूचक कृदंत हो जाता है । हस्–इर = हसिर (हसनारा)

नोधः—यहां मात्र प्राकृत भाषामें प्रवेशके लिये वर्णविकार के सामान्य नियम, नाम और धातुके साधारण रूपाख्यान और कृदंतके मोटे मोटे उदाहरण दिये गयें हैं। अधिक जिज्ञासु हमारा विद्यापीठप्रकाशित प्राकृत व्याकरण देख लेवें ।

जिनागमकथासंग्रहः

१

पाए उक्खित्ते

तेते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेह कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करित्ता वंदंति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

" एस णं देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे, कंते, जीवियउस्सासए, हिययणंदिजणए, उंबरपुप्फ पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए । से जहा नामए उप्पलेति वा पउमेति वा कुमुदेति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं, णोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव मेहे

कुमारे कामेसु जाए, भोगेसु संवुड्ढे, नोवलिप्पति कामरएणं, नोवलिप्पति भोगरएणं ।—

" एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विगे, भीए जम्मणजरमरणाणं, इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतित्तए । अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया सिस्स-भिक्खं । "

तते ण से समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊएहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्म पडिसुणेति ।

तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकार ओमुयति ।

तते णं से मेहकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छति, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलिपगासाति असूणि विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी, रोयमाणी रोयमाणी, कंदमाणी कंदमाणी, विलवमाणी विलवमाणी एव वदासी—

" जतियव्वं जाया । घडियव्वं जाया । परक्कमियव्वं जाया । अस्सिं च णं अट्ठे नो पमादेयव्वं । अम्हंपि णं एमेव मग्गे

भवउ " त्ति कट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया।

तते णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, करित्ता जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

" आलित्ते णं भंते[१३] ! लोए, पलित्ते णं भंते लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते लोए जराए मरणेण य। से जहाणामए केइ गाहावती, अगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवति अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमति—' एस मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा हियाए, सुहाए, खमाए, णिस्सेसाए, आणुगामियत्ताए भविस्सति ' एयामेव मम वि एगे आयाभंडे इट्ठे, कंते, पिए, मणुन्ने, मणामे, एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सति। तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाहिं सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सेहावियं, सिक्खावियं, सयमेव आयार–गोयर–विणय–वेणइय–चरण–करण–जाया–मायावत्तियं धम्ममाइक्खियं "।

तते णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेति, सयमेव आयार–गोयर–विणय–वेणइय–चरण–करण–जाया–मायावत्तियं धम्ममातिक्खइ—

"एव देवाणुप्पिया ! गतव्वं, चिट्ठितव्वं, णिसीयव्वं, तुयट्टियव्वं, भुजियव्व, भासियव्व । एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं, भूतेहि, जीवेहि, सत्तेहि संजमेणं सजमितव्व । अस्सि च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं ।"

तते ण से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इम एयारूवं धम्मिय उवएसं णिसम्म सम्मं पडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं, भूतेहिं, जीवेहिं, सत्तेहि सजमइ ।

जं दिवस च ण मेहे कुमारे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वइए, तस्स ण दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयसि समणाण निग्गंथाणं अहारातिणियाए सेज्जासंथारएसु विभज्जमाणेसु, मेहकुमारस्स दारमूले सेज्जासथारए जाए यावि होत्था ।

तते णं समणा निग्गथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए, पुच्छणाए, परियट्टणाए, धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगतिया मेह कुमारं हत्थेहिं सघट्टति; एवं पाएहि सीसे, पोट्टे, कायंसि; अप्पेगतिया ओलंडेति; अप्पेगइया पोलंडेति; अप्पेगतिया

पायरयरेणुगुंडियं करेंति । एवं महालियं च णं रयणीं मेहे कुमारे णो संचाएति[२०] खणमवि अच्छिं निमीलित्तए।

तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था[२१]—

" एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो पुत्ते, धारिणीए देवीए अत्तए मेहे । तं जया ण अहं अगारमज्झे वसामि तया णं मम समणा णिग्गंथा आढायंति, परिजाणंति, सक्कारेंति, संमाणेति, अट्ठाइं हेऊति पसिणाति कारणाइ वाकरणाइं आतिक्खंति, इट्ठाहि कंताहि वग्गूहि आलवेति, सलवेति। जप्पभिति च णं अहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वइए, तप्पभिति च णं मम समणा नो आढायति... जाव नो सलवंति । अदुत्तरं च णं मम समणा निग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए... *जाव संथाराओ आयति, महालियं च णं रत्ति नो संचाएमि अच्छि णिमिलावेत्तए । त सेयं खलु मज्झं कल्लं, पाउप्पभायाए रयणीए, तेयसा जलंते सूरिए समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे वसित्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए णिरयपडिरूवियं च णं तं रयणि खवेति, खवित्ता कल्लं, पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए, तेयसा जलंते सूरिए जेणेव समणे भगवं महावीरे

---

* पृष्ठ ३८, पंक्ति १७

तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पज्जुवासति ।

तते णं "मेहा!" ति समणे भगव महावीरे मेहं कुमारं एवं वदासी---

"से णूणं तुमं मेहा! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहि वायणाए पुच्छणाए. *जाव महालियं च णं राइं णो सचाएसि मुहुत्तमवि अच्छिं निमिलावेत्तए, तते णं तुब्भं मेहा! इमे एयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था--

"त सेय खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तेयसा जलते सूरिए समण भगव महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगार-मज्झे आवसित्तए त्ति कट्टु अट्टदुहट्टवसट्टमाणसे रयणि खवेसि, खवित्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए. से णूणं मेहा! एस अत्थे समट्ठे?"

"हंता अत्थे समट्ठे।"

"एव खलु मेहा! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरेहिं णिव्वत्तियणामधेज्जे, सेते, सख-दलउज्जल--विमलनिम्मलदहिघण--गोखीरफेण-रयणियर-प्पयासे,

---

* पृष्ठ ३८, पंक्ति १७

सत्तुस्सेहे, णवायए, दसपरिणाहे, सत्तगपतिट्ठिए सोमे, समिए, सुरूवे, पुरतो उदग्गे, समूसियसिरे, सुहासणे, पिट्ठओ वराहे, अतियाकुच्छी, अच्छिद्दकुच्छी, अलंबकुच्छी, पलंबलंबोदराहरकरे, धणुपट्ठागिइविसिट्ठपुट्ठे, अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छे, पडिपुन्नसुचारुकुम्मचलणे, पंडुरसुविसुद्धनिद्धणिरुवहयविसतिणहे, छद्दंते, सुमेरुप्पभे नामं हत्थिराया होत्था ।

"तत्थ णं तुमं मेहा ! बहूहि हत्थीहि य हत्थीणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभेहि य कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे, हत्थिसहस्सणायए, देसए, जूहवई, अन्नेसिं च बहूण एकल्लाण हत्थिकलभाण आहेवच्चं करेमाणे विहरसि ।

"तते ण तुम मेहा ! णिच्चप्पमत्ते, सइ पललिए, कंदप्पगई, मोहणसीले, अवितण्हे, कामभोगतिसिए बहूहि हत्थीहि य ..जाव संपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य दरीसु य कुहरेसु य कदरासु य उज्झरेसु य निज्झरेसु य वियरएसु य गड्डासु य पल्ललेसु य चिल्ललेसु य कडयेसु य कडयपल्ललेसु य तडीसु य वियडीसु य टंकेसु य कुडएसु य सिहरेसु य पब्भारेसु य मंचेसु य मालेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य वणराईसु य नदीसु य नदीकच्छेसु य जूहेसु य संगमेसु य वावीसु य पोक्खरिणीसु य दीहियासु य गुंजालियासु य सरेसु य सरपंतियासु य सरसरपंतियासु य वणयरएहिं दिन्नवियारे

बहूहिं हत्थीहि य....*जाव सद्धिं संपरिवुडे बहुविहतरु—पल्लव—पउरपाणिय—तणे निब्भए निरुव्विग्गे सुहंसुहेणं विहरासि ।

“ तते णं तुमं मेहा ! अन्नया कयाई पाउस—वरिसारत्त—सरय—हेमंत—वसंतेसु कमेण पचसु उऊसु समतिक्कंतेसु, गिम्ह-कालसमयंसि जेट्ठामूलमासे, पायवघंससमुट्ठिएणं, सुक्कतण—पत्त—कयवर-मारुतसजोगदीविएण,महाभयकरेण हुयवहेण वणदवजाला-सपलित्तेसु वणंतेसु, धूमाउलासु दिसासु, महावायवेगेणं संघट्टिएसु छिन्नजालेसु आवयमाणेसु, पोल्लरुक्खेसु अतो अतो झियायमाणेसु, पक्खिसघेसु ससंतेसु, संवट्टिएसु तत्थमिय—पसव—सिरीसिवेसु, अवदालियवयणविवरणिल्लालियग्गजीहे, महंततुवइयपुन्नकन्ने, सकुचियथोरपीवरकरे, ऊसियलग्गूले, पीणाइयविरसरडियसद्देणं फोटयते व अंबरतलं, पायदद्दरएण कंपयते व मेइणितलं, विणि-म्मुयमाणे य सीयारं, सव्वतो समता वल्लिवियाणाइं छिदमाणे, रुक्खसहस्साति तत्थ सुवहूणि णोल्लायते, विणट्ठरट्ठेव्व णरवरिंदे, वायाइद्धे व्व पोए, मंडलवाए व्व परिब्भमते अभिक्खण अभि-क्खण लिंडणियरं पमुचमाणे पमुचमाणे, बहूहि हत्थीहि य ..*जाव सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ।

“ तत्थ ण तुमं मेहा ! जुन्ने, जराजज्जरियदेहे, आउरे, झुंझिए, पिवासिए, दुब्बले, किलते, नट्ठसुइए, मूढदिसाए सयातो

---

* पृष्ठ ४१, पंक्ति ६

जूहातो विप्पहूणे वणदवजालापरद्धे, उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परब्भाहए समाणे, भीए, तत्थे, तसिए, उव्विग्गे, संजातभए, सव्वतो समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं अप्पोदयं, पंकबहुलं, अतित्थेणं पाणियपाए उइन्नो।

" तत्थ णं तुम मेहा! तीरमतिगते पाणियं असपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसन्ने।

" तत्थ णं तुमं मेहा! पाणिय पाइस्सामि त्ति कट्टु हत्थे पसारेसि, से वि य ते हत्थे उदग न पावति।

" तते णं तुम मेहा! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामीत्ति कट्टु बलियतरायं पकंसि खुत्ते।

" तते णं तुम मेहा! अन्नया कदाइ एगे चिरनिज्जूढे गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ कर-चरण-दंत-मुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयं पादेउ समोयरेति।

" तते णं से कलभए तुमं पासति, पासित्ता तं पुव्ववेरं समरति, समरित्ता आसुरुत्ते, रुट्ठे, कुविए, चंडिक्किए, मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तुमं तिक्खेहिं दतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठतो उच्छुभति, उच्छुभित्ता पुव्ववेर निज्जाएति, निज्जाइत्ता हट्ठतुट्ठे पाणियं पियति, पिइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

" तते णं तव मेहा! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था

विउला, कक्खडा, दुरहियासा पित्तज्जर–परिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरित्था ।

"तते णं तुमं मेहा ! तं दुरहियासं सत्तराइंदिणं वेयणं वेदेसि । सवीसं वाससतं परमाउं पालइत्ता अट्टवसट्टदुहट्टे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे, गंगाए महाणदीए दाहिणे कूले, विझगिरिपायमूले एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवर–करेणूए कुच्छिसि गयकलभए जणिते ।

"तते णं सा गयकलभिया णवण्हं मासाणं वसंतमासम्मि तुमं पयाया ।

"तते णं तुमं मेहा ! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था, रत्तुप्पलरत्तसूमालए, इट्टे णिगस्स जूहवइणो, अणेगहत्थिसयसपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेणं विहरसि ।

"तते णं तुमं मेहा ! उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते जूहवइणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि ।

"तते णं तुमं मेहा ! वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था । तत्थ णं तुमं मेहा ! सत्तंगपइट्ठिए तहेव... *जाव पडिरूवे । तत्थ णं तुमं मेहा ! मत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं करेमाणे अभिरमेत्था ।

---

* पृष्ठ ४१, पंक्ति १

" तते णं तुमं अन्नया कयाइ गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले वणदवजालापलित्तेसु वणंतेसु, धूमाउलासु दिसासु....*जाव मंडलवाए व्व परिब्भमंते, भीते, तत्थे, संजायभए बहूहिं हत्थीहि य कलभियाहि य सद्धिं सपरिवुडे सव्वतो समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था।

" तते णं तव मेहा ! त वणदव पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था–" कहिं णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसभवे अणुभूयपुव्वे। "

तते णं तव मेहा ! लेस्साहि विसुज्झमाणीहिं अज्झवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं परिणामेणं तयावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातिसरणे समुप्पज्जित्था।

" तते णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं अभिसमेसि--'एवं खलु मया अतीए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे वियड्ढगिरिपायमूले अयमेयारूवे अग्गिसभवे समणुभूए '।

" तते णं तुमं मेहा ! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्ह–कालसमयंसि नियएणं जूहेणं सद्धिं समन्नागए यावि होत्था।

" तते णं तुमं मेहा ! सन्निजाइस्सरणे चउदंते मेरुप्पभे नाम हत्थी होत्था।

---

* पृष्ठ ४२, पंक्ति ७

" तते णं तुज्झं मेहा ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था—" तं सेयं खलु मम इयाणि गगाए महानदीए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विंझगिरिपायमूले दवग्गि—संताणकारणट्ठा सएणं जूहेणं महालय मंडलं घाइत्तए " त्ति कट्टु एवं सपेहेसि, संपेहित्ता सुहं सुहेणं विहरसि ।

" तते ण तुमं मेहा ! अन्नया कदाइ पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयासि गंगाए महानदीए अदूरसामंते बहूहिं हत्थीहि कलभियाहि य सतहि य हत्थिसएहि संपरिवुडे एगं मह जोयणपरिमडलं महतिमहालय मंडल घाएसि; जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठ वा कंटए वा लया वा वल्ली वा खाणु वा रुक्खे वा खुवे वा त सव्व तिक्खुत्तो आहुणिय आहुणिय पाएण उट्ठवेसि, हत्थेण गेण्हसि, एगते एडेसि ।

" तते णं तुम मेहा ! तस्सेव मंडलस्स अदूरसामंते गंगाए महानदीए दाहिणिल्ले कूले विझगिरिपायमूले गिरीसु य. ..*जाव विहरसि ।

" तते णं मेहा ! अन्नया कदाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महाविट्ठिकायंसि सनिवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता दोच्चपि मंडलं घाएसि । एव चरिमे वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयमाणंसि जेणेव से मडले तेणेव उवाग-

* पृष्ठ ४१, पंक्ति १३

च्छसि, उवागच्छित्ता तच्चंपि मंडलघायं करेसि। जं तत्थ तणं वा....*जाव सुहंसुहेणं विहरसि।

" अह मेहा! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमाणो कमेणं नलिणिवणविवहणगरे हेमंते कुंद–लोद्धउद्धततुसारपउरम्मि अतिक्कंते, अहिणवे गिम्हसमयंसि पत्ते, वियट्टमाणो वणेसु, वणकरेणुविविहदिण्णकयपसवघाओ, तुम उउयकुसुमकयचामरकन्नपूरपरिमंडियाभिरामो, मयवसविगसंतकडतडकिलिन्नगंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो, करेणुपरिवारिओ, उउसमत्तजणितसोभो, काले दिणयरकरपयंडे, परिसोसियतरुवरसिहरभीमतरदंसणिज्जे, बाउलियादारुणतरे, भीमदरिसणिज्जे वट्टते दारुणम्मि गिम्हे, धूममालाउलेणं, सावयसयंतकरणेणं, अब्भहियवणदवेणं वेगेण महामेहो व्व जेणेव कओ ते पुरा दवग्गिभयभीयहियएणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोदेसो दवग्गिसंताणकारणट्ठाए जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

" तत्थ णं अण्णे बहवे सीहा य वग्घा य विगया, दीविया, अच्छा य तरच्छा य पारासरा य सरभा य सियाला, विराला, सुणहा, कोला, ससा, कोकंतिया, चित्ता, चिल्लला पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविदुया एगयाओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति।

" तते णं तुम मेहा! पाएणं गत्तं कंडुइस्सामीति कट्टु पाए

---

* पृष्ठ ४६, पंक्ति ९

उक्खित्ते। तंसि च णं अंतरंसि अन्नेहिं बलवंतेहि सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे पणोलिज्जमाणे ससए अणुपविट्ठे।

" तते णं तुमं मेहा! गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायं पडिनिक्खमिस्सामि त्ति कट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि, पासित्ता पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए सो पाए अतरा चेव स ारिए, नो चेव णं णिक्खित्ते।

" तते ण तुमं मेहा! ताए पाणाणुकपयाए . . जाव सत्ताणुकंपयाए संसारे परित्तीकते माणुस्साउए निबद्धे।

" तते णं से वणदवे अड्डातिज्जातिं रातिदियाइं त वणं झामेइ, झामित्ता निट्ठिए, उवरए, उवसते, विज्झाए यावि होत्था।

" तते ण ते बहवे सीहा य *जाव चिल्लला य तं वणदव निट्ठियं विज्झायं पासति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा ताओ मडलाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समंता विप्पसरित्था।

" तए णं तुमं मेहा! जुन्ने, जराजज्जरियदेहे, सिढिलवलितयापिणिद्धगते, दुब्बले, किलते, पिवासिते, अत्थामे, अबले, अपरक्कमे, अचकमणओ वा ठाणुखंडे वेगेण विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहते विव रयतगिरिपब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहि य सन्निवइए।

---

* पृष्ठ ४७, पंक्ति १५

तते णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूआ ।

" तते णं तुमं मेहा ! तं दुरहियासं तिन्नि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससतं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, रायगिहे नयरे, सेणितस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए । "

(श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्–अध्ययन १)

——:०:——

२

धुत्तो सियालो

सियालेण भमंतेण हत्थी मओ दिट्ठो। सो चिंतेइ—"लद्धो मए उवाएण ताव णिच्छएण खाइयव्वो।" जाव सिंहो आगओ। तेण चिंतियं—"सच्चिट्ठेण ठाइयव्वं एयस्स।"

सिंहेण भणियं—"किं अरे! भाइणेज्ज! अच्छिज्जइ?"

सियालेण भणियं—आमंति माम!

सिहो भणइ—"किमेयं मयं?" ति।

सियालो भणइ—"हत्थी।"

"केण मारिओ?"

"वग्घेण।"

सिंहो चिंतेइ—"कहमहं ऊणजातिएण मारियं भक्खामि!"

गओ सिंहो। णवरं वग्घो आगओ। तस्स कहियं-“सीहेण मारिओ, सो पाणियं पाउं णिग्गओ।”

वग्घो णट्ठो। जाव काओ आगओ। सियालेण चिंतियं-“जइ एयस्स ण देमि तओ ‘काउ’ ‘काउ’त्ति वासियसद्देणं अण्णे कागा एहिंति, तेसिं कागरडणसद्देणं सियालादि अण्णे बहवे एहिंति, कित्तिया वारेहामि? ता एयस्स उवप्पयाणं देमि।”

तेण तओ तस्स खंड छित्ता दिण्णं। सो तं घेत्तूण गओ।

जाव सियालो आगओ। तेण णायमेयस्स हठेण वारणं करेमित्ति भिउडिं काऊण वेगो दिण्णो। णट्ठो सियालो।

उक्तं चः-

उत्तमं प्रणिपातेन, शूरं भेदेन योजयेत्।
नीचमल्पप्रदानेन, सदृशं च पराक्रमैः॥

(दशवैकालिकवृत्तिः)

——:०:——

३

संसयप्पा विणस्सइ

ते ण काले णं ते णं समए ण[२०] चंपा नामं नयरी होत्था। तीसे चपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभाए नाम उज्जाणे होत्था, सव्वोउयसुरभे, नदणवणे इव सुहसुरभि-सीयलच्छायाए समणुबद्धे।

तस्स ण सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ एगदेसम्मि मालुयाकच्छए। तत्थ णं एगा वरमऊरी दो पुट्ठे, परियागते, पिट्ठुंडीपंडुरे, निव्वणे, निरुवहए, भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति, पसवित्ता सएण पक्खवाएणं सारक्खमाणी, संगोवेमाणी, संविट्ठमाणी विहरति।

तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति, तं जहा – जिणदत्तपुत्ते य सागरदत्तपुत्ते य । सहजायया, सहवड्डियया, सहपंसुकीलियया, सहदारदरिसी, अन्नमन्नमणुरत्तया, अन्नमन्नमणुव्वयया, अन्नमन्नच्छंदाणुवत्तया, अन्नमन्नहियतिच्छियकारया, अन्नमन्नेसु गिहेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति ।

तते णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कयाइ एगओ सहियाणं समुवागयाणं, सन्निसन्नाणं, सन्निविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–

" जन्नं देवाणुप्पिया ! अम्ह सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जति तन्नं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्वं " त्ति कट्टु अन्नमन्नमेयारूवं संगारं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ।

तते णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कदाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जिमियभुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं, आयंताणं चोक्खाणं परमसुतिभूयाणं, सुहासणवरगयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—

" तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! कल्लं ...विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेत्ता तं विपुलं असणपाणखातिम-

सातिमं धूवपुप्फगंधवत्थं गहाय सद्धिं सभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणाणं विहरित्तए " त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता कल्लं पाउब्भूए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

" गच्छह णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणपाणखातिम-सातिमं उवक्खडेह, उवक्खडित्ता तं विपुलं असणपाणखातिम-सातिम धूवपुप्फ गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे, जेणेव णंदापुक्खरिणी तेणामेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता नंदापुक्खरि-णीतो अदूरसामंते थूणामंडव आहणह, आहणित्ता आसित्तसंम-ज्जितोवलित्तं सुगंधवरगंधकलिय करेह, करित्ता अम्हे पडिवाले-माणा चिट्ठह । "

तए णं सत्थवाहदारगा दोच्चंपि कोटुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

" खिप्पामेव लहुकरणजुत्तजोतियं, समखुरवालहाणं सम-लिहियतिक्खग्गसिंगएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाण-एहिं पवरलक्खणोववेयं जुत्तमेव पवहणं उवणेह । " ते वि तहेव उवणेंति ।

तते णं ते सत्थवाहदारगा ण्हाया, सव्वालंकारभूसियसरीरा पवहणं दुरूहंति, दुरूहित्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव

सुभूमिभागे उज्जाणे, जेणेव नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणातो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता नंदापोक्खरिणीं ओगाहिंति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेंति, जलकीडं करेंति, ण्हाया पच्चुत्तरंति, जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थूणामंडवं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता सव्वालंकारविभूसिया, आसत्था, वीसत्था, सुहासणवरगया सद्धिं तं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं धूवपुप्फगंधवत्थं आसाएमाणा, वीसाएमाणा, परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति।

तते णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि थूणामंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे बहूसु आलिघरएसु य कयलीघरेसु य लयाघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य कुसुमघरएसु य उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरंति।

तते णं ते सत्थवाहदारया जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तते णं सा वणमऊरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति, पासित्ता भीया, तत्था, महयामहया सद्देणं केकारवं विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी मालुयाकच्छाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगंसि रुक्खडालयंसि ठिच्चा

ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छयं च अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी पेहमाणी चिट्ठति ।

तते णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमन्नं सद्दावेंति, सद्दा-वित्ता एवं वदासी—

" जहा ण देवाणुप्पिया ! एसा वणमऊरी अम्हे एज्ज-माणा पासित्ता भीता, तत्था, तसिया, उव्विग्गा, पलाया, महता महता सद्देण केकारव विणिम्मुयमाणी अम्हे मालुयाकच्छयं च पेच्छमाणी पेच्छमाणी चिट्ठति, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं " ति कट्टु मालुयाकच्छयं अतो अणुपविसंति, अणुपविसित्ता तत्थ णं दो पुट्ठे परियागए अंडे पासित्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

" सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमे वणमऊरीअंडए साणं जाइमताणं कुक्कुडियाण अडएसु अ पक्खिवावेत्तए । तते णं ताओ जातिमंताओ कुक्कुडियाओ ताए अंडए सए य अंडए सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति । तते णं अम्ह एत्थं दो कीलावणगा मऊरपोयगा भविस्संति " त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एतमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सए सए दासचेडे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! इमे अंडए गहाय

सगाणं जाइमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह "। ते वि पक्खिवेंति ।

तते णं ते सत्थवाहदारगा सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरित्ता तमेव जाण दुरूढा समाणा जेणेव चंपानयरीए, जेणेव सयाइं सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ।

तते णं जे से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए से जेणेव वणमऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तंसि मऊरीअंडयंसि संकिते, कंखिते वितिगिच्छासमावन्ने, भेयसमावन्ने, कलुससमावन्ने कि नं ममं एत्थ किलावणमऊरीपोयए भविस्सति उदाहु णो भविस्सइ त्ति कट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं अभिक्खणं उव्वत्तेति, परियत्तेति, आसारेति, संसारेति, चालेति, फंदेइ, घट्टेति, खोभेति, अभिक्खणं अभिक्खणं कन्नमूलंसि टिट्टियावेति । तते णं से मऊरीअंडए अभिक्खणं अभिक्खणं उव्वत्तिज्जमाणे टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाते यावि होत्था ।

तते णं से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अन्नया कयाइं जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं मऊरीअंडयं पोच्चडमेव पासति, पासित्ता "अहो णं ममं एस किलावणए मऊरीपोयए ण जाए" त्ति कट्टु ओहतमणसंकप्पे झियायति ।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं[२१] अंतिए पव्वतिए समाणे पंचमहव्वएसुं[२२] जाव छज्जीवनिकाएसुं[२३] निग्गंथे पावयणे संकिते जाव कलुस-समावन्ने से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं[२४] साविगाण हीलणिज्जे, खिंसणिज्जे, गरहणिज्जे, परिभवणिज्जे परलोए वि य णं आगच्छति बहूणि दंडणाणि य संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ।

तते ण से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तंसि मऊरीअंडयंसि निस्संकिते सुवत्तए ण मम एत्थ कीलावणए मऊरीपोयए भविस्सती ति कट्टु त मऊरीअंडयं अभिक्खणं अभिक्खणं नो उव्वत्तेइ... जाव* नो टिट्टियावेति ।

तते णं से मऊरीअंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे अटिट्टियाविज्ज-माणे ते णं काले णं ते णं समए णं उब्भिन्ने मऊरीपोयए एत्थ जाते ।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे पचसु महव्वएसु छसु जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संकिते निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं जाव वीतिवतिस्सति ।

(श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्–अध्ययनं ३)

———:०:———

* पृष्ठ ५७, पंक्ति १२

सज्जणवज्जा

महणम्मि ससी महणम्मि सुरतरू महणसंभवा लच्छी ।
सुयणो उण कहसु महं न-याणिमो कत्थ संभूओ ॥ ३२ ॥

सुयणो सुद्धसहावो मइलिज्जन्तो वि दुज्जणयणेण ।
छारेण दप्पणो विय अहिययरं निम्मलो होइ ॥ ३३ ॥

सुजणो न कुप्पइ च्चिय अह कुप्पइ मङ्गुलं न चिन्तेइ ।
अह चिन्तेइ न जम्पइ अह जम्पइ लज्जिरो होइ ॥ ३४ ॥

दढरोसकलुसियस्स वि सुयणस्स मुहाउ विप्पियं कत्तो ।
राहुमुहम्मि वि ससिणो किरणा अमयं चिय मुयन्ति ॥ ३५ ॥

दिट्ठा हरन्ति दुक्खं जम्पन्ता देन्ति सयलसोक्खाइं ।
एयं विहिणा सुकयं सुयणा जं निम्मिया भुवणे ॥ ३६ ॥

न हसन्ति परं न थुणन्ति अप्पयं पियसयाइं जम्पन्ति।
एसो सुयणसहावो नमो नमो ताण पुरिसाणं ॥ ३७ ॥

अकए वि कए वि पिए पियं कुणन्ता जयम्मि दीसन्ति।
कयविप्पिए वि हु पियं कुणन्ति ते दुल्लहा सुयणा ॥ ३८ ॥

सव्वस्स एह पयई पियम्मि उप्पाइए पियं काउं।
सुयणस्स एस पयई अकए वि पिए पियं काउ ॥ ३९ ॥

फरुसं न भणसि भणिओ वि हससि हसिऊण जम्पसि पियाइं।
सज्जण ! तुज्झ सहावो न-याणिमो कस्स सारिच्छो ॥

(वज्जालग्गं)

——:०:——

५

भारियासीलपरिक्खा

अत्थि अवंती नाम जणवओ। तत्थ उज्जेणी नाम नयरी रिद्धित्थिमियसमिद्धा। तत्थ राया जितसत्तू नाम। तस्स रण्णो धारिणी नाम देवी।

तत्थ य उज्जेणीए नयरीए दसदिसिपयासो इब्भो सागरचंदो नाम। भज्जा य से चंदसिरी। तस्स पुत्तो चंदसिरीए अत्तओ समुद्ददत्तो नाम सुरूवो।

सो य सागरचंदो परमभागवउदिक्खासंपत्तो भगवयगीयासु सुत्तओ अत्थओ य विदितपरमत्थो। सो य तं समुद्ददत्तं दारगं गिहे परिव्वायगस्स कलागहणत्थे ठवइ "अन्नसालासु सिक्खंतो अण्णपासंडियदिट्ठी हवेज्जा"।

ततो सो समुद्ददत्तो दारगो तस्स परिव्वायगस्स समीवे कलागहणं करेमाणो अण्णया कयाइ 'फलगं ठवेमि' त्ति गिहं अणुपविट्ठो। नवरिं च पासइ नियगजणणीं तेण परिव्वायगेण सद्धिं असब्भमायरमाणीं। ततो सो निग्गतो इत्थीसु विरागम-मावण्णो, 'न एयाओ कुलं सीलं वा रक्खंति' त्ति चिंतिऊण हियएण निब्बंधं करेइ, जहा — न मे वीवाहेयव्वं ति। ततो से समत्तकलस्स जोव्वणत्थस्स पिया सरिसकुल–रूव–विहवाओ दारियाओ वरेइ। सो य ता पडिसेहेइ। एव तस्स कालो वच्चइ।

अण्णया तस्स सम्मएणं पिया सुरट्ठमागतो ववहारेणं। गिरिनयरे धणसत्थवाहस्स धूयं धणसिरिं पडिरूवेणं सुंकेणं[३७] समुद्ददत्तस्स वरेइ। तस्स य अन्नायमेव तिहिग्गहणं काऊण नियनगरमागओ।

ततो तेण भणितो समुद्ददत्तो—"पुत्त! मम गिरिनयरे भंडं अच्छइ, तत्थ तुमं सवयंसो वच्च। ततो तस्स भंडस्स विणिओग काहामो" त्ति वोत्तूण वयंसाण य से दारियासंबंधं संविदितं कयं।

तओ ते सविभवाणुरूवेणं निग्गया, कहाविसेसेण य पत्ता गिरिनयरं। बाहिरओ य ठाइऊणं धणस्स सत्थवाहस्स मणुस्सो पेसिओ, जहा 'ते आगओ वरो' त्ति।

ततो तेण सविभवाणुरूवा आवासा कया, तत्थ य आवा-सिया। रत्तीए आगया भोयणवत्थएसेणं धणसत्थवाहगिहे, धणसिरीए पाणिग्गहणं कारिओ।

ततो सो धणसिरीए वासगिहं पविट्ठो। ततो णेणं पइरिक्कं जाणिऊण तीसे धणसिरीते चम्मद्दिं दाऊण निग्गओ, वयंसाण च मज्झे सुत्तो। ततो पभायाए रयणीए सरीरावस्सकहेउं सवयंसो चेव निग्गतो बहिया गिरिनयरस्स। तेसिं वयंसाणं अदिट्ठतो चेव नट्ठो।

ततो से वयंसेहिं आगंतूणं [सागरचंदस्स] धणसत्थ-वाहस्स य परिकहियं 'गतो सो'। तेहिं समततो मग्गिओ, न दिट्ठो। ततो ते दीणवयणा कइवयाणि दिवसाणि अच्छिऊण धणसत्थवाहमापुच्छिऊण गता नियगनयरं।

इयरो वि समुद्ददत्तो देसंतराणि हिंडिऊण केणइ कालेण आगतो गिरिनयरं कप्पडियवेसछण्णो परूढनह-केस-मंसु-रोमो। दिट्ठो णेण धणसत्थवाहो आरामगतो। ततो तेणं पण-मिऊणं भणिओ-" अहं तुब्भं आरामकम्मकरो होमि।"

तेण य भणिओ-" भणसु, का ते भती दिज्जउ " त्ति ?।

ततो तेण भणियं-" न मे भईए कज्जं। अहं तुज्झ पसादाभिकंखी। मम तुट्ठीदाणं देज्जह " त्ति।

एवं पडिस्सुए आरामे कम्ममारद्धो काउं। ततो सो रुक्खाउव्वेयकुसलो[२८] तं आरामं कइवएहिं दिवसेहिं सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धं करेइ।

ततो सो धणसत्थवाहो तं आरामसिरिं पासिऊणं परं हरिसमुवगतो। चिंतियं च णेणं—"किमेएणं गुणाइसयभूएण पुरिसेण आरामे अच्छंतेण? वरं मे आवारीए अच्छउ" त्ति।

ततो ण्हाविय-पसाहिओ दिण्णवत्थजुयलो[३०] ठवितो आवणे।

ततो तेण आय-वयकुसलेणं[३१] गंधजुत्तिनिउणत्तणेणं पुर-जणो उम्मत्तिं गाहितो। ततो पुच्छितो जणेणं—"किं ते नामधेयं?"

पभणइ य—"'विणीयओ' त्ति मे नामधेयं।"

एवं सो विणीयओ विणयसंपन्नो सव्वनयरस्स वीसस-णिज्जो जातो।

ततो तेण सत्थवाहेण चिंतियं—"न खमं मे एस आवणे य अच्छंतो। मा एस रायसंविदितो हवेज्ज, ततो रायणा हीरइ त्ति। वरमेस गिहे भंडारसालाए अच्छंतो।"

ततो तेण सगिहं नेऊण परियणं च सद्दावेऊण भणियं—"एस भो विणीयओ जं देइ तं मे पडिच्छियव्वं, न य से आणा कोवेयव्वा" त्ति।

ततो सो विणीयओ घरे अच्छइ, विसेसओ य धणसिरीए जं चेडीकम्मं तं सयमेव करेइ। ततो धणसिरीए विणीयको सव्वर्वीसंभट्ठाणितो जातो।

तत्थ य नयरे रायसेवी एक्को य डिंडी परिवसइ। इओ य सा धणसिरी पुव्वावरण्हसमए सत्ततले पासाए अट्टालगवरगया सह विणीयगेणं तंबोलं सभाणयंती अच्छइ।

सो य डिंडी ण्हाय—समालद्धो तस्म भवणस्स आसण्णेण गच्छति। धणसिरीए तंबोल निच्छूढं पडियं डिंडिस्सुवरिं। डिंडिणा निज्झाइया य, दिट्ठा य णेणं देवयभूया। ततो सो अणंगबाणसोसियसरीरो तीए समागमुस्सुओ संवुत्तो। चिंतियं च णेणं—" एस विणीयओ एएसि सव्वप्पवेसी, एयं उवतप्पामि। एयस्स पसातेणं एतीए सह समागमो भविस्सइ " त्ति।

ततो अण्णया तेण विणीयगो नियगभवणं नीओ। पूयासक्कारं च काउं पायपडिएण विण्णविओ—" तहा चेट्ठसु, जेण मे धणसिरीए सह संजोगं करेसि " त्ति।

ततो सो " एवं होउ " त्ति वोत्तूण धणसिरीते सगासं गतो। पत्थावं च जाणिऊण भणिया णेणं धणसिरी डिंडियवयणं। ततो तीए रोसवसगाए भणिओ—

" केवलं तुमे चेव एयं संलत्तं, अण्णो मम न जीवंतो " त्ति।

ततो सो बिइयदिवसे निग्गतो, दिट्ठो य डिंडिणा। भणितो णेणं – "किं भो वयंस! कयं कज्जं?" ति।

ततो तेण तव्वयण गूहमाणेण भणियं – "घत्तीहं" ति। तओ पुणरवि तेण दाणमाणेणं संगहिय करेत्ता विसज्जिओ।

ततो सो आगंतूण धणसिरीए पुरतो विमणो तुण्हिक्को ठितो अच्छति। ततो तीए धणसिरीए तस्स मणोगयं जाणिऊण भणिओ—

"कि ते पुणो डिंडी किंचि भणइ"?

तेण भणिय—"आम" ति। तीए निवारितो—'न ते पुणो तस्स दरिसणं दायव्व"।

पुणो य पुच्छिज्जमाणो तहेव तुण्हिक्को अच्छइ। ततो तीए तस्स चित्तरक्खकोरंताए भणिओ—"वच्च, देहि से संदेसं, जहा—'असोगवणियाए तुमे अज्ज पओसे आगंतव्वं'" ति।

तेण तहा कयं। ततो सा असोगवणियाए सेज्जं पत्थरेऊण जोगमज्जं च गिण्हिऊण विणीयगसहिया अच्छइ। सो आगतो। ततो तीए सोवयारं मज्जं से दिण्णं। सो य तं पाऊण अचेतणसरीरो जाओ। ताते तस्सेव य संतियं असिं कड्ढिऊण सीसं छिण्णं। पच्छा विणीयगो भणिओ—"तुमे अणत्थं कारिया, तुज्झ वि सीसं छिंदामि" त्ति।

तेण पायवडिएण मारिसाविया । विणीयगेणं धणसिरि-संदिट्ठेणं कूयं खणित्ता निहिओ ।

ततो अन्नया सुहासणवरगया धणसिरी विणीयगेण पुच्छिआ–" सुंदरि ! तुमं कस्स दिन्ना ?"

तीए भणियं–" उज्जेणिगस्स समुद्दत्तस्स दिण्णा " ।

तेण भणियं–" वच्चामि, अहं तं गवेसित्ता आणेमि " त्ति भणिउं निग्गओ । संपत्तो य नियगभवणं पविट्ठो, दिट्ठो य अम्मापिऊहिं, तेहि य कयंसुपाएहिं उवगूहिओ । ततो तेहिं धणसत्थवाहस्स लेहो पेसिओ ' आगतो मे जामाउओ ' त्ति ।

ततो सो वयसपरिगहिओ मातापितीहि य सद्धिं ससुर-कुलं गतो । तत्थ य पुणरवि वीवाहो कओ ।

ततो तीए तस्स रूवोवलद्धी कया । दिट्ठो य णाए विणीयओ । ततो तेण सव्वं संवादित ।

(वसुदेवहिण्डी–प्रथमखण्डम्)

—:०:—

६

उवासगे कुंडकोलिए

तेण कालेण तेण समएणं कम्पिल्लपुरे[४३] नामं नयरे होत्था। तस्स कम्पिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्सम्बवणे नामं उज्जाणे। तत्थ ण कम्पिल्लपुरे नयरे जियसत्तू राया होत्था।

तत्थ ण कम्पिल्लपुरे कुण्डकोलिए नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे....दित्ते अपरिभूए। तस्स णं कुण्डकोलियस्स पूसा नामं भारिया होत्था, कुण्डकोलिएणं गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता, अविरत्ता, इट्ठा पञ्चविहे[४४] माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ।

तस्स णं कुण्डकोलियस्स गाहावइस्स छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ हिरण्णकोडीओ वड्ढिपउत्ताओ, छ हिरण्ण-

कोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था।

से णं कुण्डकोलिए गाहावई बहूणं सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे....पडिपुच्छणिज्जे सयस्सवि य णं कुडुंबस्स मेढी, पमाणं, आहारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए। परिसा निग्गया। जियसत्तू निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पज्जुवासइ।

तए णं कुण्डकोलिए गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कम्पिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे. जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वन्दइ नमंसइ . पज्जुवासइ।

तए ण समणे भगवं महावीरे कुण्डकोलियस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ——

तए णं से कुण्डकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे एवं वयासी—

" सद्दहामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं, पत्तियामि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं, रोएमि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं, एवमेयं भन्ते! तहमेयं भन्ते! अवितहमेयं भन्ते! इच्छियमेयं भन्ते! से जहेयं तुब्भे वयह, त्ति कट्टु जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे राईसर–तलवर–माडम्बिय–कोडुम्बिय–सेट्ठि–सत्थवाहप्प-भिइया मुण्डा भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुण्डे भवित्ता पव्वइत्तए। अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं[४५], सत्तसिक्खावइयं[४६], दुवालसविहं गिहि-धम्मं पडिवज्जिस्सामि।"

" अहासुहं, देवाणुप्पिया! मा पडिबन्धं करेह "।

तए णं से कुण्डकोलिए गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं, सत्तसिक्खावइयं, दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ, वन्दित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ सहस्सम्बवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव कम्पिल्लपुरे नयरे, जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ।

तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ बहिया जणवयविहारं विहरइ।

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए जाए अभिगयजीवा-जीवे, उवलद्धपुण्णपावे, आसवसंवरनिज्जरकिरियाअहिगरणबंध-

मुक्खकुसले, असहेज्जे, देवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिंनरकिं-पुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गन्थे पावयणे निस्संकिये, निक्कंखिये, निव्वि-तिगिच्छे, अट्ठीमींजपेमाणुरागरत्ते, "अयं आउसो! निग्गंठपावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे," ऊसियफलिहे, अवंगुयदुवारे, चियत्ततेउरपरघरदारप्पवेसे, चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसुं पडि-पुण्णं पोसह[४८] सम्मं अणुपालेत्ता समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं[४९] असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पडिहारिएणं य पीढफलगसेज्जासंथारएणं पडिलाभे-माणे विहरइ।

तए णं से कुण्डकोलिए समणोपासए अन्नया कयाइ पुव्वा-वरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया, जेणेव पुढविसिलापट्टए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नाममुद्दग च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्ति उवसम्पज्जित्ताण विहरइ।

तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था।

तए णं से देवे नाममुद्दं च उत्तरिज्जं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हित्ता सखिखिणि[५०] अन्तलिक्खपडिवन्ने कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी—

"हं भो कुण्डकोलिया समणोवासया ! सुन्दरी णं, देवाणुप्पिया, गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, नत्थि उट्ठाणे" इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती, — अत्थि उट्ठाणे इ वा.. .जाव परक्कमे इ वा, अणियया सव्वभावा"।

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी—

"जइ णं देवा ! सुन्दरी गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, मङ्गुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्म-पण्णत्ती, तुमे णं, देवा ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवज्जुई, दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे किणा पत्ते किणा अभि-समन्नागए, किं उट्ठाणेणं... जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं, उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ?"

तए णं से देवे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी—

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए इमेयारूवा दिव्वा देविड्ढी अणुट्ठाणेणं ..जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया।"

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी—

"जइ णं देवा ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी.... अणुट्ठाणेणं ..जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा....ते किं न देवा ? अह णं, देवा ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी.... उट्ठाणेणं....जाव परक्कमेण लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, तो जं वदसि 'सुन्दरी णं गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, मङ्गुली ण समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती तं ते मिच्छा।"

तए णं से देवे कुण्डकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे सङ्किए, कङ्खिए, विइगिच्छासमावन्ने कलुससमावन्ने नो संचाएइ कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि पामोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दयं च उत्तिरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।

(उवासगदसाओ–अध्ययनम् ६)

——:०:——

७

कयग्घा वायसा

इओ य किर अतीते काले दुवालसवरिसिओ दुब्भिक्खो आसी। तत्थ वायसा मेलयं काऊण अण्णोण्णं भणंति—“किं कायव्वमम्हेहि ? वड्डो छुहमारो उवट्ठिओ, नत्थि जणवएसु वायसपिंडियाओ, अण्णं वा तारिसं किंचि न लब्भइ उज्झण-धम्मियं, कहिय वच्चामो”[१] त्ति।

तत्थ वुड्ढवायसेहिं भणियं—“समुद्दतडं वच्चामो। तत्थ कायंजला अम्ह भायणेज्जा भवंति। ते अम्ह समुद्दाओ मच्छए उत्तारिऊण दाहिंति। अण्णहा नत्थि जीवणोवाओ।”

संपहारेत्ता गया समुद्दतडं। ततो तुट्ठा कायंजला मच्छए उत्तारित्ता देंति। वायसा तत्थ सुहेण कालं गमेंति।

ततो वत्ते बारससंवच्छरिए दुब्भिक्खे जणवएसु सुभिक्खं जायं। ततो तेहिं वायसेहिं संपहारेत्ता वायससंघाडओ "जणवयं पलोएह" त्ति पेसिओ, जइ सुभिक्खं भविस्सइ तो गमिस्सामो।"

सो य सघाडओ अचिरकालस्स उवलद्धी करेत्ता आगतो। साहति य वायसाणं जहा–'जणवएसुं वायसपिंडिआओ मुक्कमाणीओ अच्छंति, उट्ठेह, वच्चामो' त्ति।

ततो ते संपहारेति – किह गतव्वं? त्ति 'जइ आपुच्छामो नत्थि गमणं' एवं परिगणेत्ता कायंजले सद्दावेत्ता एवं वयासी–

"भागिणेज्जा! वच्चामो।"

ततो तेहिं भणियं–"किं गम्मइ"।

ततो भणति–

"न सक्केमो पइदिवसं तुम्हं अहोभाग पासित्ता अणुट्ठिए चेव सूरे"।

एवं भणित्ता गया।

(वसुदेवहिण्डी–प्रथमखण्डम्)

——:०·——

८

मित्तवज्जा

एक्कं चिय सलहिज्जइ दिणेस-दियहाण नवरि निव्वहणं ।
आ जम्म एक्कमेक्केहि जेहि विरहो च्चिय न दिट्ठो ॥ ६५ ॥

पडिवन्न दिणयर-वासराण दोण्हं अखण्डियं सुहइ ।
सूरो न दिणेण विणा दिणो वि नहु सूरविरहम्मि ॥ ६६ ॥

मित्तं पय-तोयसमं सारिच्छं जं न होइ किं तेण ।
अहियाएइ मिलन्तं आवइ आवट्टए पढमं ॥ ६७ ॥

तं मित्तं कायव्वं जं किर वसणम्मि देसकालम्मि ।
आलिहियभित्तिवाउल्लयं व न परम्मुहं ठाइ ॥ ६८ ॥

तं मित्तं कायव्वं जं मित्तं कालकम्बलीसरिसं ।
उयएण धोयमाणं सहावरङ्गं न मेल्लेइ ॥ ६९ ॥

सगुणाण निग्गुणाण य गरुया पालन्ति जं जि पडिवन्नं ।
पेच्छइ वसहेण समं हरेण वोलाविओ अप्पा ॥ ७० ॥

छिज्जउ सीसं अह होउ बन्धणं चयउ सव्वहा लच्छी ।
पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ ॥ ७१ ॥

दिढलोहसङ्कलाणं अन्नाण वि विविहपासबन्धाणं ।
ताणं चिय अहिययरं वायाबन्धं कुलीणस्स ॥ ७२ ॥

(वज्जालग्गं)

——:•:——

१

सुरप्पिओ जक्खो

तेणं कालेण तेण समतेण साकेयं णगरं। तस्स उत्तर-पुरच्छिमे दिसिभागे सुरप्पिए नाम जक्खायणे। सो य सुरप्पिओ जक्खो सन्निहियपाडिहेरो। सो वरिसे वरिसे चित्तिज्जइ। महो य से परमो कीरइ। सो य चित्तिओ समाणो तं चेव चित्तकरं मारेइ। अह न चित्तिज्जइ तओ जणमारिं करेइ।

ततो चित्तगरा सव्वे पलाइउमारद्धा। पच्छा रण्णा णायं,—जदि सव्वे पलायंति, तो एस जक्खो अचित्तिज्जंतो अम्ह वहाए भविस्सइ।

तेणं चित्तगरा एक्कसंकलितबद्धा पाहुडएहिं कया, तेसिं सव्वेसिं णामाइं पत्तए लिहिऊणं घडए छूढाणि। ततो वरिसे

वरिसे जस्स णामं उट्ठाति, तेण चित्तेयव्वो। एवं कालो वच्चति।

अण्णया कयाई कोसंबीओ चित्तगरदारओ घराओ पलाइओ तत्थागओ सिक्खगो। सो भमंतो साकेतस्स चित्तगरस्स घरं अल्लीणो। सोवि एगपुत्तगो थेरीपुत्तो। सो से तस्स मित्तो जातो।

एवं तस्स तत्थ अच्छंतस्स अह तंमि वरिसे तस्स थेरी-पुत्तस्स वारओ जातो। पच्छा सा थेरी बहुप्पगारं रुवति।

तं रुवमाणीं थेरी दट्ठूण कोसंबको भणति — "किं अम्मो रुदसि?"

ताए सिट्ठं। सो भणति — "मा रुयह। अहं एयं जक्खं चित्तिस्सामि।"

ताहे सा भणति—"तुमं मे पुत्तो किं न भवसि?"

"तोवि अहं चित्तेमि, अच्छह तुब्भे असोगाओ।"

ततो छट्ठभत्तं काऊण, अहतं वत्थजुअलं परिहित्ता, अट्ठ-गुणाए मुहपोत्तीए मुहं बंधिऊण, चोक्खेण य पत्तेण सुइभूएण णवएहिं कलसएहिं ण्हाणेत्ता, णवएहिं कुच्चएहिं, णवएहिं मल्लसं-पुडेहिं, अल्लेसेहिं वण्णेहिं च चित्तेऊण पायवाडिओ भणइ— "खमह जं मए अवरद्धं" ति।

ततो तुट्ठो जक्खो भणाति – " वरेहि वरं "

सो भणति – " एयं चेव ममं वरं देहि, लोगं मा मारेह । "

भणति – " एवं ताव ठितमेव, जं तुम न मारिओ, एवं अण्णोवि न मारेमि । अण्णं भण । "

" जस्स एगदेसमवि पासेमि दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा वा अपयस्स वा तस्स तदणुरूवं रूवं णिव्वत्तेमि । "

" एवं होउ " त्ति दिण्णो वरो, ततो सो लद्धवरो रण्णा सक्कारितो समाणो गओ कोसंबीं णयरिं ।

(आवश्यकहारिभद्रीयवृत्ति – विभाग १)

——:०:——

१०

जामाउयपरिक्खणं

वसंतपुर नयर। निद्दसो नाम तत्थ आसि धिज्जाइओ। तस्स सुहा महेला लीलानिलओ। तेसिं च तिन्नि धूया जाया। कमेण य उन्नयं तारुन्नं पत्ता। नियसरिसविहवेसु कुलेसुं वीवाहिया।

जणणीए चिंतिय – "मज्झ दुहियरो कहं सुत्थिया होज्जा? पइपरिणामे अन्नाए ववहरंतीओ ता गउरवपयं न भवंति। गउरवरहियाणं य कओ सुहासंगो? तओ कहमवि जामाउयाणं भावमहं जाणामि" त्ति चिंतिऊण नियधूयाओ भणियाओ – "लद्धावसराहिं पढमपसंगे पण्हिपहरेण नियंयपइणो सिरो हणणिज्जो।"

ताहि तहच्चिय कए पभायम्मि जणणीए ताओ पुच्छियाओ—“ किं तेण तुम्हं विहियं ? ”

जेट्ठाए भणियं — “ सो मच्चरणमद्दणपरो भणइ — 'देवाणुप्पिये ! किं नु दुक्खमणुपत्ता ? एवंविहो पहारो तुम्ह चरणाणं न उचिओ । तुह ममम्मि अइगरुओ आसंघो, अन्नहा को णु एव कुणइ ? ”

जणणीए सा जेट्ठा भणिया — “ पुत्ति ! तुज्झं पई अइपेमपरव्वसो । तओ तं जं कुणसि तं सव्वं पमाणं होहिइ । तओ तस्स मा भाहि । ”

बीया धूया जणणिं भणइ — “ पहारसमणंतरं सो मणागं झिंखणकारी जाओ, खणंतराओ उवरओ ” त्ति ।

जणणी त भणइ — “ तुमए अरुच्चमाणम्मि विहिए सो झिखणकारी होही, अन्न निग्गह नो काही । ”

तइयाए धूयाए पुणो भणिय — “ अम्मो ! मए तुह निद्देसे कए संते सो दूरं दरिसियरोसो गेहथंभेण बंधिय मम कसघायसए दासी, भासियन्नं च तं दुक्कुला सि । तो मे तए एवंविहकज्जसज्जाए न कज्जं । ”

तओ अस्स जामाउयस्स समीवं गंतु माऊए भणियं —

" कहं मे घूया ताडिया ? सा हि पढमपसंगे तुज्झ पण्हिपहरं दाऊण अम्हं कुलधम्मं आइण्णा । "

सो जंपइ – " अम्हवि एस कुलधम्मो, जइ पुण सो कुल-धम्मो कहवि न कज्जइ तो सा ससुरकुलं न नंदेइ । "

तओ जणणीए पुत्तीए समीवमागन्तुं भणियं – " जहेव देवस्स वट्टिज्जासि तहेव पइणो वट्टिज्जासि । न अन्नहा इमो तुह पियकरो " त्ति ।

(उपदेशपद)

—:o:—

११

सद्दालपुत्ते कुंभकारे

पोलासपुरे नामं नयरे। सहसम्बवणे उज्जाणे। जियसत्तू राया।

तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुंभकारे आजीविओवासए परिवसइ। आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते य "अयमाउसो आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" त्ति आजीवियसमएण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता, एक्का वड्ढिपउत्ता, एक्का पवित्थरपउत्ता, एक्के वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं।

तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नामं भारिया होत्था।

तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पञ्च कुम्भकारावणसया होत्था। तत्थ णं बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं बहवे करए य वारए य पिहडए य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिञ्जरए य जम्बूलए य उट्टियाओ य करेन्ति, अन्ने य से बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं तेहिं बहूहिं करएहि य.... जाव उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति।

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ।

तेणं कालेणं तेण समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए। परिसा निग्गया। जियसत्तू निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पज्जुवासइ।

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,

उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता नमंसित्ता पज्जुवासइ।

तए णं समणे भगव महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओ-वासगस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ।

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ वायाहययं कोलालभण्ड अन्तो सालाहिंतो बाहिया नीणेइ, नीणित्ता आयवंसि दलयइ।

तए णं समणे भगव महावीरे सद्दालपुत्त आजीविओ-वासय एव वयासी—

" सद्दालपुत्ता, एस ण कोलालभण्डे कओ ? "

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एव वयासी—

" एस णं, भन्ते ! पुव्वि मट्टिया आसी, तओ पच्छा उद-एणं निमिज्जइ, निमिज्जित्ता छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ, मीसिज्जित्ता चक्के आरोहिज्जइ; तओ बहवे करगा य घडया य उट्टियाओ य कज्जन्ति। "

तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओ-वासयं एवं वयासी—

" सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभण्डे किं उट्ठाणेणं पुरिसकारपरक्कमेणं कज्जन्ति, उदाहु अणुट्ठाणेणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं कज्जन्ति ? "

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—

" भन्ते ! अणुट्ठाणेणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणं, नत्थि उट्ठाणे इ वा... नत्थि परक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा। "

तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी —

" सद्दालपुत्ता, जइ ण तुब्भं केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोलालभण्डं अवहरेज्जा वा विक्खिरेज्जा वा भिन्देज्जा वा अच्छिन्देज्जा वा परिट्ठवेज्जा वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरेज्जा, तस्स णं तुमं पुरिसस्स किं दण्ड वत्तेज्जासि ? "

" भन्ते ! अहं णं तं पुरिसं आओसेज्जा वा हणेज्जा वा बन्धेज्जा वा महेज्जा वा तज्जेज्जा वा तालेज्जा वा निच्छोडेज्जा वा निब्भच्छेज्जा वा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जा। "

" सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्भ केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोलालभण्डं अवहरइ वा...जाव परिट्ठवेइ वा

अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धि विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरइ, नो वा तुमं त पुरिसं आओसेज्जासि वा हणेज्जसि वा....जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जसि, जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा नत्थि परक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा।

" अह ण, तुब्भ केइ पुरिसे वायाहय . जाव परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा....जाव विहरइ. तुमं वा तं पुरिसं आओसेसि वा. जाव ववरोवेसि, तो जं वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा.... जाव नियया सव्वभावा, त ते मिच्छा।"

एत्थ णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए सम्बुद्धे।

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता नमंसित्ता एवं वयासी –

" इच्छामि णं, भन्ते ! तुब्भं अन्तिए धम्म निसामेत्तए।"

तए णं समण भगव महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स धम्म परिकहेइ।

(उवासगदसाओ – अज्झयनं ७)

——:०:——

१२

गामिल्लओ सागडिओ

अत्थि कोइ कम्हिइ गामेल्लुओ गहवती परिवसइ। सो य अण्णया कयाइं सगड धण्णभरियं काऊणं, सगडे य तित्तिरिं पंजरगयं बंधेत्ता पट्ठिओ नयरं। नयरगतो य गंधियपुत्तेहिं दीसइ। सो य तेहिं पुच्छिओ – "कि एयं ते पंजरए" त्ति।

तेण लवियं – "तित्तिरि" त्ति।

तओ तेहिं लवियं – "किं इमा सगडतित्तिरी विक्कायइ?"

तेण लवियं – "आमं, विक्कायइ"।

तेहिं भणिओ – "किं लब्भइ?"

सागडिएण भणियं – "काहावणेणं" ति।

ततो तेहि काहावणो दिण्णो, सगडं तित्तिरं च घेत्तुं पयत्ता।

ततो तेणं सागडिएण भण्णति – "कीस एयं सगडं नेहि?" त्ति।

तेहि भणियं – "मोल्लेण लद्धयं" ति।

ततो ताण ववहारो जाओ, जितो सो सागडिओ, हिओ य सो सगडो तित्तिरीए समं।

सो सागडिओ हियसगडोवगरणो जोग – खेम – निमित्तं आणिणल्लिय बइल्ल घेत्तूणं विक्कोसमाणो गंतु पयत्तो, अण्णेण य कुलपुत्तएणं दीसइ, पुच्छिओ य – "कीस विक्कोससि?"

तेण लवियं – "सामि! एवं च एवं च अइसंधिओ हं।"

ततो तेण साणुकंपेण भणिओ – "वच्च ताणं चेव गेहं, एव च एवं च भणाहि" त्ति।

ततो सो त वयणं सोऊण गओ, गंतूण य तेण भणिआ – "सामि! तुब्भेहि मम भडभरिओ सगडो हिओ ता इमं पि बइल्लं गेण्हह। मम पुण सत्तुयादुपालिय देह, जं घेत्तूण वच्चामि त्ति। न य अहं जस्स व तस्स व हत्थेणं गेण्हामि, जा तुज्झ घरिणी पाणेहि वि पिययरी सव्वालंकारभूसिया तीए दायव्वा, ततो मे परा तुट्ठी भविस्सइ। जीवलोगब्भंतरं व अप्पाणं मन्निस्सामि।"

ततो तेहिं सक्खी आहूया, भणियं च – "एवं होउ" त्ति।

ततो ताणं पुत्तमाया सत्तुयादुपालियं घेत्तूण निग्गया, तेण सा हत्थे गहिया, घेत्तूण य तं पट्ठिओ।

तेहिं वि भणिओ – "किमेयं करेसि?"

तेण भणियं – "सत्तुदोपालियं नेमि।"

ततो ताणं सद्देण महाजणो संगहिओ, पुच्छिया–"किमेयं?" त्ति। ततो तेहिं जहावत्तं सव्वं परिकहियं। समागयजणेण य मज्झत्थेणं होऊण ववहारनिच्छओ सुओ, पराजिया य ते गंधियपुत्ता। सो य किलेसेण त महिलियं मोयाविओ, सगडो अत्थेण सुबहुएण सह परिदिण्णो।

(वसुदेवहिण्डी–प्रथमखण्डम्)

———:०:———

१३

नडपुत्तो रोहो

उज्जेणी नामेण वित्थिण्णसुरभवणा समुद्धुरधणोहा मालवमंडलमंडणभूआ नयरी समत्थि । तत्थ जियसत्तू नामा रिउपक्खविक्खोहकारओ नयगुणसणाहो सइ गुणी सुदढपणओ नरनाहो आसी ।

अह उज्जेणिसमीवे सिलागामो गामो । तत्थ य भरहो नडो । सो य तग्गामे पहू, नाडयविज्जाए लद्धपसंसो य । तस्स णामेण रोहओ, गामस्स य सोहओ सुओ ।

अन्नया कयाइवि मया रोहयमाया । तओ भरहो घरकज्जकरणकए अण्णं तज्जणणिं संठवेइ ।

रोहओ य बालो। सा य तस्स हीलापरायणा हवइ। तो तेण सा भणिया—"अम्मो! जं ममं सम्मं न वट्टसि, न तं सुंदरं होही। एत्तो अहं तह काहं जह तं मे पाएसु पडसि।"

एवं कालो वच्चइ। अह अण्णया कयाइवि ससिपयासधवलाए रयणीइ सो एगसज्जाए जणगसहिओ पासुत्तो। तो रयणिमज्झभागे उट्ठित्ता उब्भएण होऊणं उच्चसरेणं जणओ उट्ठाविय भासिओ जहा—"ताय! पेक्खसु एस कोइ परपुरिसो जाइ!"

स सहसुट्ठिओ जाव निद्दामोक्खं काऊणं लोयणेहिं जोएइ ताव तेण न दिट्ठो कोइ पुरिसो।

ततो रोहओ पुट्ठो—"वच्छा! सो कत्थ परपुरिसो?"

तेण जणओ भणिओ—"इमेणं दिसाविभागेणं सो तुरियतुरियं गच्छंतो मे दिट्ठो।"

तओ सो महिलं नट्ठसीलं परिकालिय तीए सिढिलायरो जाओ। सा पच्छायावपरिगया भासइ—

"वच्छ! मा एवं कुणसु।"

रोहओ भणइ—"कहं मम लट्ठं न वट्टसि?"

सा बेइ—"अह लट्ठं वट्टिस्सं। तओ तुमं तहा कुणसु जहा एसो तुह जणओ मज्झ आयरं कुणइ।"

इमं रोहेण पडिवन्नं। सा वि तह वट्टिउं लग्गा।

अण्णया कयावि रयणिमज्झे सुत्तुट्ठिओ सो जणगं भणइ—"ताय! सो एस पुरिसो! पुरिसो!"

पिउणा पुट्ठं — "सो कहिं" ति।

तओ नियय चेव छायं दंसित्ता भणइ — "इमं पेच्छह" त्ति।

स विलक्खमणो जाओ, पुच्छइ — "किं सो वि पुरिसो आसी?"

बालेण 'आम' ति भणिय।

जणओ चिंतेइ — "अव्वो! बालाण केरिसुल्लावा!" इय चिंतिऊण भरहा तीइ पणराओ संजाओ।

(उपदेशपद)

—— o :——

चत्तारि मित्ता

इह आसि बसंतपुरे परोप्पर नेह–निब्भरा मित्ता ।
खत्तिय–माहण–वाणिय–सुवण्णयार त्ति चत्तारि ॥ १ ॥

ते अत्थविढवणत्थं चलिया देसंतरं नियपुराओ ।
पत्ता परिब्भमंता भूमिपइट्ठम्मि नयरम्मि ॥ २ ॥

रयणीइ तस्स बाहि उज्जाणे तरुतलम्मि पासुत्ता ।
पढमपहरम्मि चिट्ठइ जग्गतो खत्तिओ तत्थ ॥ ३ ॥

पेच्छइ तरुसाहाए पलंबमाणं सुवण्णपुरिस सो ।
विम्हियमणेण भणियं अणेण सो एस अत्थो त्ति ॥ ४ ॥

कणयपुरिसेण संजत्तमत्थि अत्थो परं अणत्थजुओ ।
तो खत्तिएण वुत्तं जइ एवं ता अलं अम्ह ॥ ५ ॥

बीए जामे जग्गेइ माहणो सोवि पिच्छइ तहेव ।
तइयम्मि वाणिओ तं दट्ठूण न लुब्भए तम्मि ॥ ६ ॥

जग्गइ चउत्थजामे सुवण्णयारो सुवण्णपुरिसं तं ।
दट्ठूण विम्हियमणो भणइ इमं एस अत्थो त्ति ॥ ७ ॥

पुरिसेण जपियं एस अत्थि अत्थो परं अणत्थजुओ ।
जंपइ सुवण्णयारो न होइ अत्थो अणत्थजुओ ॥ ८ ॥

पुरिसो जपइ तो किं पडामि ? पडसु त्ति जंपइ कलाओ ।
पडिओ सुवण्णपुरिसो छिंदइ सो अंगुलिं तस्स ॥ ९ ॥

खड्डाए पक्खित्तो सुवण्णपुरिसो सुवण्णयारेण ।
गोसम्मि पत्थिया ते सुवण्णयारेण तो भणिया ॥ १० ॥

किं देसंतरभमणेण अत्थि एत्थवि इमो कणयपुरिसो ।
खड्डाइ मए खित्तो तं गिण्हह विभज्जिउं सव्वे ॥ ११ ॥

तो सव्वेवि नियत्ता अंगुलिकणगेण भत्तमाणेउं ।
वणिओ सुवण्णयारो य दोवि पत्ता नयरमज्झे ॥ १२ ॥

चिंतियमिमेहिं हणिमो खत्तियमाहणसुए उवाएण ।
अम्हं चिय दोण्हं जेण होइ एसो कणयपुरिसो ॥ १३ ॥

भुत्तूण सयं मज्झे समागया गहियकुसुमतंबोला ।
खत्तियमाहणजुग्गं विसमिस्सं भोयणं घेत्तुं ॥ १४ ॥

बाहिं ठिएहिं तं चेव चिंतियं किं चिरं ठिया मज्झे ।
तुब्भे त्ति भणंतेहिं दुन्निवि खग्गेण निग्गहिया ॥ १५ ॥

विसमिस्सं भत्तं भुंजिऊण दिय--खत्तियावि वावन्ना ।
इअ एसा पाविड्ढी पाविज्जइ पावपसरेण ॥ १६ ॥

(कुमारपालप्रतिबोध.—चतुर्थः प्रस्तावः)

——:०:——

१५

रोहिणीए दक्खत्तणं

ते ण काले ण ते ण समए ण रायगिहे नाम नयरे होत्था। तत्थ ण रायगिहे णयरे सेणिए नामं राया होत्था।

तत्थ ण रायगिहे नयरे धण्णे नाम सत्थवाहे परिवसति अड्ढे, दित्ते, विउलभत्तपाणे अपरिभूए। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स भद्दा नाम भारिया होत्था अहीणपंचिंदियसरीरा कंता, पियदंसणा, सुरूवा।

तस्स णं धन्नस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्ताय चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा—धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए।

तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा—उज्झिया, भोगवातिया, रक्खतिया, रोहिणिया।

तते णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कदाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था—

"एवं खलु अहं रायगिहे णयरे बहूणं राईसर पभिईणं सयस्स कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य करणिज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतणेसु य गुज्झे, रहस्से, निच्छए, ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे, मेढी, पमाणे, आहारे, आलंबणे, चक्खुमेढीभूते, सव्वकज्जवट्टावए।

"तं ण णज्जइ जं मए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंबस्स किं मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सति ?

"तं सेयं खलु मम कल्लं विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं उवक्खडावेत्ता मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरियणं, चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्तणाइणियगसयण०

चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं विपुलेणं असणपाणखादिमसा-दिमेणं धूवपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरतो चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पच पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किहं वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा संवड्ढेति वा ?"

एवं सपेहेइ, सपेहित्ता मित्तणाति० चउण्हं सुण्हाणं कुल-घरवग्गं आमंतेइ, आमतित्ता विपुलं असणं पाण खादिमं सादिमं .... जाव सक्कारेति समाणेति, सक्कारित्ता सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाति० चउण्ह य सुण्हाण कुलघरवग्गस्स पुरतो पंच सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्हा उज्झितिया तं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी –

"तुमं ण पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पच सालिअक्खए गेण्हाहि, गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जा-एज्जासि" त्ति कट्टु सुण्हाए हत्थे दलयति, दलइत्ता पडिविसज्जेति।

तते णं सा उज्झिया धण्णस्स "तह त्ति" एयमट्ठं पडि-सुणेति, पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच

सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमति, एगंतमवक्कमि-याए इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जेत्था —

"एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं ममं ताओ इमे पंच सालि-अक्खए जाएस्सति, तया णं अहं पल्लंतराओ अन्ने पंच सालि-अक्खए गहाय दाहामि" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेति, एडित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था।

एवं भोगवतीयाए वि, णवर सा छोल्लेति, छोल्लित्ता अणु-गिलति, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया।

एवं रक्खिया वि, नवरं गेण्हति, गेण्हित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जेत्था—

"एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तनाति० चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरतो सद्दावेत्ता एवं वदासी—'तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ .. जाव पडिदिज्जाएज्जासि' त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयति, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं" ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता ते पंच सालि-अक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ,

पक्खिवित्ता ऊसीसामूले ठावेइ, ठावित्ता तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ ।

तए णं से धण्णे सत्थवाहे तस्सेव मित्त० जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेति, सद्दावित्ता . जाव "तं भवियव्वं एत्थ कारणणं, तं सेयं खलु मम एए सालिअक्खए सारक्खमाणीए, संगोवेमाणीए, सवड्ढेमाणीए" त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एते पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह, करित्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह, वावित्ता दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयानिक्खए करेह, करित्ता वाडिपक्खेवं करेह, करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेण संवड्ढेह" ।

तते णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति, गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवंति विहरंति ।

तए णं ते कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केदारं सुपरिकम्मियं करेंति,

करित्ता ते पंच सालिअक्खए ववंति, वावित्ता दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेंति, करित्ता वाडिपरिक्खेवं करेति, करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति ।

तते णं ते सालीअक्खए अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साळी जाया किण्हा किण्हो-भासा निउरंबभूया पासादीया, दंसणीया, अभिरूवा, पडिरूवा ।

तते णं ते साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया, आगयगंधा, खीराइया, बद्धफला, पक्का, परियागया, सल्लइया, पत्तइया, हरियपव्वकडा जाया यावि होत्था ।

तते णं ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए .. जाव सल्लइए पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं असियएहिं लुणेति, लुणित्ता करयलमलिते करेति, करित्ता पुणंति, तत्थ णं चोक्खाणं, सूयाणं, अखडाण, अफोडियाणं छड्डछड्डापूयाणं सालीण मागहए पत्थए जाए ।

तते णं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति, पक्खिवित्ता उपलिंपंति, उपलिंपित्ता लंछियमुद्दिते करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेति, ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति ।

तते णं ते कोडुंबिया दोच्चम्मि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, करित्ता ते साली ववंति, दोच्चं पि तच्चं पि उक्खयणिहए.... जाव लुणेति . जाव चलणतळमलिए करेति, करित्ता पुणंति, तत्थ ण सालीणं बहवे कुडए जाए,.... जाव एगदेसंसि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति ।

तते ण ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि बहवे केदारे सुपरिकम्मिए करेंति, जाव लुणेंति, लुणित्ता संवहंति, संवहित्ता खलयं करेंति, करित्ता मलेंति, जाव बहवे कुंभा जाया ।

तते णं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति,.... जाव विहरंति । चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया ।

तते ण तस्स धण्णस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था—

"एवं खलु मम इओ अतीते पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच सालिअक्खता हत्थे दिन्ना । तं सेयं खलु मम कल्लं पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए, जाणामि

वाव काए किहं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया ?" त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता कल्लं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं ...जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर-वग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

" एवं खलु अहं पुत्ता ! इतो अतीते पंचमसि संवच्छ-रंसि इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि, ' जया णं अहं पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएसि ' त्ति कट्टु तं हत्थंसि दलयामि, से नूणं पुणा अट्ठे समट्ठे ? "

" हंता अत्थि । "

" तं णं पुत्ता ! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएहि । "

तते णं सा उज्झितिया एयमट्ठं धण्णस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पल्लातो पंच सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी —

"एए णं ते पंच सालिअक्खए" त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयति ।

तते णं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवहसावियं करेति, करित्ता एवं वयासी —

"किं णं पुत्ता ! एए चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने ?"

तते णं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी —

"नो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए एए णं अन्ने" ।

तते णं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते मिसिमिसेमाणे उज्झितियं तस्स मित्तनाति० चउण्ह सुण्हाण कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समुच्छिय च सम्मज्जिअं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेति ।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वतिते पंच य से महव्वयाति उज्झियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हीलणिज्जे संसारकंतारं अणुपरियट्टइस्सइ, जहा सा उज्झिया ।

एवं भोगवइया वि। नवरं तस्स कुलघरस्स कंडितियं च कोट्टंतिय च पीसंतियं च एवं रुधतियं च रंधंतियं च परिवेसंतियं च परिभायंतियं च अब्भितरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ।

एवामेव समणाउसो! जो अम्हं समणो वा समणी वा पंच य से महव्वयाइं फोडियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं, बहूणं समणीण, बहूण सावयाणं, बहूणं सावियाणं हीलणिज्जे, जहा व सा भोगवतिया।

एवं रक्खितिया वि। नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हाति, गेण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालिअक्खए धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयति।

तते णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खितियं एव वदासी—

"किं णं पुत्ता! ते चेव एए पच सालिअक्खए उदाहु अन्ने?" त्ति।

तते णं रक्खितिया धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—

"ते चेव ते पंच सालिअक्खए णो अन्ने।"

तते णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खितियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य कंसदूसविपुलधण-संतसारसावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेति ।

एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महव्वयाति रक्खियाति भवति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं, बहूणं समणीण, बहूण सावयाण, बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे जहा ...सा रक्खिया ।

रोहिणिया वि एवं चेव । नवरं "तुब्भे ताओ ! मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाहि, जेण अहं तुब्भं ते पंच सालि-अक्खए पडिणिज्जाएमि ।"

तते ण से धण्णे सत्थवाहे रोहिणि एवं वदासी—

"कहं णं तुम मम पुत्ता ! ते पंच सालिअक्खए सगड-सागडेणं निज्जाइस्ससि ?"

तते ण सा रोहिणी धण्ण सत्थवाह एवं वदासी —

"एवं खलु ताती ! इओ तुब्भे पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त .... जाव बहवे कुंभसया जाया, तेणेव कमेणं । एवं खलु ताओ ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएमि ।"

तते णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुयं सगड-सागडं दलयति। तते णं रोहिणी सुबहुं सगडसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेति, विहाडित्ता पल्ले उब्भिदति, उब्भिदित्ता सगडीसागडं भरेति, भरित्ता रायगिहं नगरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे, जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति।

तते णं रायगिहे नगरे बहुजणो अन्नमन्नं एवमातिक्खति—

"धन्ने णं देवाणुप्पिया! धण्णे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणिया सुण्हा, जीए णं पच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाएति।"

तते ण से धण्णे सत्थवाहे ते पच सालिअक्खए सगड-सागडेण निज्जाएतिते पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठे पडिच्छति, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तनाति० चउण्ह य सुण्हाण कुलघर-वग्गस्स पुरतो रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं पमाणभूयं ठावेति।

एवामेव समणाउसो! ... जाव पंच महव्वया संवड्ढिया भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं अच्चणिज्जे संसार-कंतारं वीतीवइस्सइ जहा व सा रोहिणीया।

(श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम्, अध्ययन ७)

१६

चिब्भडियावंसगो

एगो मणुस्सो चिब्भडियाण भरिएण सगडेण नयरं पविसइ। सो पविसंतो धुत्तेण भण्णइ—"जो एवं चिब्भडियाण सगडं खाएज्जा तस्स तुमं किं देसि?"

ताहे सागडिएण सो धुत्तो भणिओ—"तस्साहं तं मोयगं देमि जो नगरद्दारेण ण णिप्फिडइ।"

धुत्तेण भणाति—"तोऽहं एयं चिब्भडियासगडं खायामि, तुमं पुण तं मोयगं देज्जासि जो नगरद्दारेण ण नीसरति।"

पच्छा सागडिएण अब्भुवगए धुत्तेण सक्खिणो कया। तओ सगडं अहिट्ठित्ता तेसिं चिब्भडियाणं मणयं मणयं चक्खित्ता चक्खित्ता पच्छा तं सागडियं मोदकं मग्गति। ताहे सागडिओ भणति—

"इमे चिब्भडिया ण खाइया तुमे।"

धुत्तेण भण्णति—"जइ न खाइया चिब्भाडिया अग्घवेह तुमं।"

तओ अग्घाविएसु कइया आगया, पासति खाइया चिब्भडिया, ताहे कइया भणंति—"को एया खइया चिब्भडिया किणइ?"

तओ करणे ववहारो जाओ। 'खइय' त्ति जिओ सागडिओ। ताहे धुत्तेण मोदग मग्गिज्जति। अच्चाइओ सागडिओ, जूत्तिकरा ओलग्गिया, ते तुट्ठा पुच्छंति, तोसि जहावत्त सव्वं कहेति। एवं कहिते तेहि उत्तरं सिक्खाविओ।

तओ तेण खुड्डयं मोदग णगरदारे ठवित्ता, भणिओ मोदगो—"जाहि, जाहि मोदग!" स मोदगो न णीसरइ नगरद्दारेण।

तो तेण सागाडिएण सक्खिणो वुत्ता—"मए तुम्हाकं समक्ख पडिन्नायं—'ज अहं जिओ भविस्सामि तो सो मोदगो मया दायव्वो जो नगरद्दारेण न णीसरइ,' एसो न णीसरइ।" ततो जिओ धुत्तो।

(दशवैकालिकवृत्तिः)

१७

असंखयं जीवियं

असंखय जीविय मा पमायए जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं विजाणाहि जणे पमत्ते किण्णु विहिसा अजया गहिन्ति ? ॥१॥

जे पावकम्मेहि धणं मणूसा समाययन्ती अमइ गहाय ।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे वेराणुबद्धा नरय उवेन्ति ॥२॥

तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एव पया पेच्च इहं च लोए कडाण कम्माण न मुक्ख अत्थि ॥३॥

संसारमावन्न परस्स अट्ठा साहारणं ज च करेइ कम्म ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति ॥४॥

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पणट्ठे व अणन्तमोहे नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥५॥

सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी न वीससे पण्डिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं भारुण्डपक्खी व चरऽप्पमत्ते ॥६॥

चरे पयाइं परिसंकमाणो जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
लाभन्तरे जीविय वूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥७॥

छन्दंनिरोहेण उवेइ मोक्खं आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरऽप्पमत्ते तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥८॥

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा एसोवमा सासयवाइयाणं ।
विसीयई सिढिले आउयंमि कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥९॥

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउ तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोयं समया महेसी आयाणुरक्खी चरमप्पमत्ते ॥१०॥

मुहं मुहं मोहगुणे जयन्तं अणेगरूवा समणं चरन्तं ।
फासा फुसन्ति असमंजसं च न तेसि भिक्खू मणसा पउस्से ॥११॥

मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं मायं न सेवे पयहेज्ज लोहं ॥१२॥

जेऽसंखया तुच्छा परप्पवाई ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो कंखे गुणे जाव सरीरभेउ ॥१३॥

त्ति बेमि ॥

(उत्तराध्ययनम् ४)

१८

कूणियजुद्धं

तते णं से कूणिए राया पउमाईए देवीए अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं विन्नविज्जमाणे अन्नदा कदाइ वेहल्लं कुमारं सद्दावेति, सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायति।

तते णं से वेहल्ले कुमारे कूणियं रायं एवं वयासी—

"एवं खलु सामी! सेणीएणं रन्ना जीवंतेणं चेव सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके य हारे दिण्णे। तं जइ णं सामी! तुब्भे मम रज्जस्स य जणवयस्स य अद्धं दलयह ता णं अहं तुब्भं सेयणयं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं दलयामि।"

तते णं से कूणिए राया वेहल्लस्स कुमारस्स एयमट्ठं नो आढाति, नो परिजाणइ; अभिक्खणं अभिक्खणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं जायति।

"कूणिए राया सेयणयं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं तं जाव न उद्दालेति ताव ममं सेयं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडस्स सभंडमत्तोवकरणं आताए चंपातो नयरीतो पडिनिक्खमित्ता वेसालीए नयरीए अज्जग चेडगं[५२] रायं उवसंपाज्जित्ताणं विहरित्तए।"

एवं वेहल्ले कुमारे संपेहेति, सपेहित्ता कूणियस्स रन्नो अंतराणि पडिजागरमाणे विहरति।

तते णं से वेहल्ले कुमारे अन्नया कयायि कूणियस्स रन्नो अंतरं जाणाति सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवकरणं आयाए चंपाओ नयरीतो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वेसाली नगरी तेणेव उवागच्छति; वेसालीए नगरीए अज्जगं चेडयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरति।

तते णं से कूणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एवं खलु वेहल्ले कुमारे ममं असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय अज्जगं चेडयं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। तं सेयं खलु मम सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं गिण्हिउं दूतं पेसित्तए।' एवं संपेहेति, दूतं सद्दावेति, एवं वदासी—

"गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! वेसालिं नगरिं। तत्थ णं तुमं मम अज्जगं चेडग रायं वद्धावेत्ता एवं वयासी—

"एवं खलु सामी कूणिए राया विन्नवेति। 'एस णं वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदितेणं सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं गहाय इह हव्वमागते। तेण तुब्भे सामी! कूणियं रायं अणुगेण्हमाणा सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्ल कुमारं पेसेह'।"

तते णं से दूए जेणेव वेसाली नगरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चेडगं वद्धावित्ता एवं वयासी—"एवं खलु सामी! कूणिए राया विन्नवेइ। एस णं वेहल्ले कुमारे (तहेव भाणियव्वं जाव) वेहल्ल कुमारं संपेसेह।"

तते णं से चेडए राया तं दूयं एवं वयासी—"जह चेव णं देवाणुप्पिया! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए तहेव ण वेहल्ले वि कुमारे सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए। सेणिएणं रन्ना जीवंतेणं चेव वेहल्लस्स कुमारस्स सेयणके अट्ठारसवंके हारे पुव्वदिन्ने। तं जइ णं कूणिए राया वेहल्लस्स रज्जस्स य जणवयस्स य अद्धं दलयति तो णं अहं सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणामि, वेहल्लं कुमारं पेसेमि।"

तं दूयं संमाणेति, पडिविसज्जेति।

तते णं से दूते चेडएणं रन्ना पडिविसज्जिए समाणे वेसालिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निगच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव चंपा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूणियं रायं वद्धावित्ता एवं वदासी—

"चेडए राया आणवेति—'जह चेव णं कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए मम नत्तुए....(तं चेव भणियव्वं जाव) वेहल्लं कुमारं पेसेमि'। तं न देति णं सामी! चेडए राया सेयणगं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं नो पेसेति।"

तते णं से कूणिए राया दुच्चं पि दूयं सद्दावेति। सद्दावित्ता एवं वयासी—

"गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! वेसालिं नगरिं तत्थ णं तुमं ममं अज्जगं चेडगं रायं वद्धावेत्ता एवं वयासी—

'एवं खलु सामी! कूणिए राया विन्नवेइ — जाणि काणि रयणाणि समुप्पज्जंति सव्वाणि ताणि रायकुलगामीणि। सेणियस्स रन्नो रज्जसिरिं करेमाणस्स पालेमाणस्स दुवे रयणा समुप्पण्णा, तं०—सेयणए गंधहत्थी अट्ठारसवंके हारे। तं णं तुब्भे सामी! रायकुलपरंपरागयं ट्ठिइयं अलोवेमाणा सेयणगं गंधहत्थिं

अट्ठारसवंकं च हारं कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणह, वेहल्लं कुमारं पेसेह'।"

तते णं से दूते तहेव. .जाव चेडगं वद्धावेत्ता एवं वयासी—

"एवं खलु सामी! कूणिए राया विन्नवेइ—'जाणि काणि .. जाव वेहल्ल कुमार पेसेह'।"

तते णं से चेडए राया त दूयं एव वयासी—"जह चेव णं देवाणुप्पिया! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते, चेल्लणाए देवीए अत्तए (जहा पढमं जाव) वेहल्ल कुमार च पेसेमि।"

तं दूयं सक्कारेति, समाणेति, पडिविसज्जेति।

तते णं से दूए जाव कूणियस्स रन्नो वद्धावित्ता एवं वयासी—

"चेडए राया आणवेति—'जह चेव णं देवाणुप्पिया! कूणिए राया सेणियस्स रन्नो पुत्ते चेल्लणाए देवीए अत्तए....जाव वेहल्लं कुमारं पेसेमि'। तं न देति णं सामी! चेडए राया सेयणगं गंधहात्थिं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं कुमारं नो पेसेति।"

तते णं से कूणिए राया तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते मिसिमिसेमाणे तच्चं दूतं सद्दावेति, एवं वयासी —

" गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! वेसालीए नयरीए चेडगस्स रन्नो वामेणं पादेण पायवीढं अक्कमाहि, अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणावेहि, पणावित्ता आसुरुत्ते मिसिमिसेमाणे तिवलीभिउडिं निडाले साहट्टु चेडगं रायं एवं वयासि —' हं भो चेडगा राया ! अपत्थियपत्थिया ! एस णं कूणिए राया आणवेति — पच्चप्पिणाहि णं कूणियस्स रन्नो सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं च हारं, वेहल्लं कुमारं पेसेह । अहव जुज्झसज्जे चिट्ठाहि । एस णं कूणिए राया सबले, सवाहणे, सखंधावारे णं जुज्झसज्जे इहं हव्वं आगच्छति । "

तते णं से दूते जेणेव चेडए राया तेणेव उवागच्छइ चेडग रायं वद्धावित्ता एवं वयासी—

" एस णं सामी ! मम विणयपडिवत्ती इमा णं कूणियस्स रन्नो ' । आणत्तो चेडगस्स रन्नो वामेणं पाएणं पादपीढं अक्कमति अक्कमित्ता आसुरुत्ते कुंतग्गेणं लेहं पणावेति (तं चेव), "....सखंधावारे णं इहं हव्वं आगच्छति । "

तते णं से चेडए राया तस्स दूतस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते एवं वयासी —

" न अप्पिणामि ण कूणियस्स रण्णो सेयणगं अट्ठारस-वंकं हार, वेहल्लं च कुमारं नो पेसेमि। एस ण जुज्झसज्जे चिट्ठामि।"

तं दूयं असक्कारित, असंमाणितं अवद्दारेणं निच्छुहावेइ।

तते ण से कूणिए तस्स दूतस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते कालादीए दस कुमारे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी —

"एवं खलु देवाणुप्पिया! वेहल्ले कुमारे ममं असंविदितेणं सेयणगं गंधहत्थिं अट्ठारसवंकं अंतेउरं सभंडं च गहाय चंपातो निक्खमति, निक्खमित्ता वेसालिं अज्जगं चेडगं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। तते णं मए सेयणगस्स गंधहत्थिस्स अट्ठारसवंकस्स च हारस्स अट्ठाए दूया पेसिया। ते य चेडएणं रन्ना इमेणं कारणेणं पडिसेहिता अदुत्तरं च णं ममं तच्चे दूते असक्कारिते अवद्दारेण निच्छुहाविते। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं चेडगस्स रन्नो जुद्धं गिह्लित्तए।"

तए णं कालाइया दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति।

तते णं से कूणिए राया कालादीते दस कुमारे एवं वयासी —

" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु सएसु रज्जेसु पत्तेयं पत्तेयं हत्थिखंधवरगया पत्तेय पत्तेयं तीहिं दंतिसहस्सेहिं एवं तीहिं आससहस्सेहिं तीहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए सतेहितो सतेहितो नगरेहिंतो पडिनिक्खमित्ता ममं अंतियं पाउब्भवह । "

तते णं ते कालाइया दस कुमारा कूणियस्स रन्नो एयमट्ठं सोचा .... जाव जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागता ।

तते णं से कूणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दाविता एवं वयासी —

" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेकं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगयरहजोहचाउरंगिणि सन्नाहेह, मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।

तते णं से कूणिए राया तीहिं दंतिसहस्सेहिं .... तीहिं आससहस्सेहिं तीहिं मणुस्सकोडीहिं चंपं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव कालादीया दस कुमारा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कालाईएहिं दसकुमारेहिं सद्धिं एगतो मेलायति ।

तते णं से कूणिए राया तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं, तेत्तीसाए आससहस्सेहिं, तेत्तीसाए मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए सुभेहिं वसहीपायरासेहिं नातिविगट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे वसमाणे अंगजणवयस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, जेणेव विदेहे जणवये, जेणेव वेसाली नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाते ।

तते णं से चेडए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलका अट्ठारस वि गणरायाणो सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी —

" एवं खलु देवाणुप्पिया ! वेहल्ले कुमारे कूणियस्स रन्नो असंविदिते ण सेयणग अट्ठारसवकं च हारं गहाय इहं हव्व-मागते । तते णं कूणिएण सेयणगस्स अट्ठारसवंकस्स य अट्ठाए ततो दूया पेसिया, ते य मए इमेण कारणेणं पडिसेहिया । तते णं से कूणिए मम एवमट्ठं अपडिसुणमाणे चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इहं हव्वमागच्छति । त किं नं देवाणुप्पिया ! सेयणगं अट्ठारसवंकं कूणियस्स रन्नो पच्चपिणामो, वेहल्लं कुमारं पेसेमो उदाहु जुज्झित्था ? "

तते णं नव मल्लई, नव लेच्छती कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो चेडगरायं एवं वदासी —

"न एवं सामी ! जुत्तं वा पत्तं वा रायसरिसं वा जं णं सेयणगे अट्ठारसवंके च कूणियस्स रन्नो पच्चप्पिणिज्जति, वेहल्ले य कुमारे सरणागते पेसिज्जति । तं जइ णं कूणिए राया चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे जुज्झसज्जे इह हव्वमागच्छति, तते णं अम्हे कूणिएणं रन्ना सद्धिं जुज्झामो ।"

तते णं से चेडए राया ते नव मल्लई नव लेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो एवं वदासी—

"जइ णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे कूणिएण रन्ना सद्धिं जुज्झह तं गच्छह णे देवाणुप्पिया ! सतेसु सतेसु रज्जेसु ... तीहिं दंतिसहस्सेहि, तीहिं आससहस्सेहिं, तीहिं रहसहस्सेहिं, तीहिं मणुस्सकोडीहिं सद्धिं सपरिवुडा य सतेहिंतो नगरेहिंतो पडिनिक्खमित्ता मम अतियं पाउब्भवह ।"

तते णं से चेडए राया तीहिं दंतिसहस्सेहिं ... जाव संपरिवुडे वेसालिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, जेणेव ते नव मल्लती नव लेच्छती कासीकोसलका अट्ठारस वि गणरायाणो तेणेव उवागच्छति ।

तते णं से चेडए राया सत्तावन्नाए दंतिसहस्सेहिं, सत्तावन्नाए आससहस्सेहिं, सत्तावन्नाए रहसहस्सेहिं, सत्तावन्नाए

मणुस्सकोडीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए सुभेहिं वसहीपात-रासेहिं, नातिविगिट्ठेहिं अंतरेहिं वसमाणे वसमाणे विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं निगच्छति,. जेणेव देसपंते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता खंधावारनिवेसण करेति, करित्ता कूणियं रायं पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे चिट्ठति ।

तते ण से कूणिए राया सव्विड्ढीए जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चेडगस्स रन्नो जोयणंतरियं खंधावार-निवेसं करेति ।

तते ण ते दोन्नि वि रायाणो रणभूमि सज्जावेंति, सज्जावित्ता रणभूमि जयंति ।

तते ण से कूणीए तेत्तीसाए दंतिसहस्सेहिं .... जाव मणुस्सकोडीहिं गरुलवूह रएति, रइत्ता गरुलवूहेणं रहमुसलं[५४] संगामं उवायाते ।

तते णं से चेडए राया सत्तावन्नाए मणुस्सकोडीहिं सगडवूहं रएति, सगडवूहेण रहमुसल संगामं उवायाते ।

तते णं ते दोन्नि वि राईणं अणीया संनद्धा गहियाउह-पहरणा मगातितेहिं फलतेहि निकट्ठाहिं असीहि अंसागएहिं तूणेहिं सजीवेहि य धणूहिं समुक्खित्तेहि सरेहि समुल्लालिताहिं

बाहाहिं छिप्पत्तूरेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठसीहनाय-बोलकलकलरवेणं समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा हयगया हयगतेहिं, गयगया गयगतेहिं, रहगया रहगतेहिं, पायत्तिया पायत्तिएहिं अन्नमन्नेहिं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।

तते णं ते दोण्ह वि राईणं अणीया णियगसामीसासणा-णुरत्ता महता जणक्खयं जणवहं जणप्पमद्दणं जणसंवट्टकप्पं नच्चंतकबंधवारभीमं रुहिरकद्दमं करेमाणा अन्नमन्नेणं सद्धिं जुज्झंति ।

(निरयावलीसूत्रम्)

——:०:——

१९

दुवे कुम्मा

ते ण काले ण ते ण समए ण वाणारसी नामं नयरी होत्था ।

तीसे ण वाणारसीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसि-भागे गंगाए महानदीए मयंगतीरद्दहे नामं दहे होत्था,— अणु-पुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजले, अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने, संछन्नपत्तपुप्फपलासे, बहुउप्पल–पउम–कुमुय–नलिण–सुभग सोगंधियपुंडरीय–महापुंडरीय–सयपत्त–सहसपत्त – केसरपुप्फो-वचिए, पासादीए, दरिसणिज्जे, अभिरूवे, पडिरूवे ।

तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुंसुमाराण य सइयाण य साहस्सियाण य सयसाह-

सियाण य जूहाइं निब्भयाइं, निरुविग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणगातिं अभिरममाणगातिं विहरंति।

तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए होत्था। तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति, — पावा, चंडा, रोद्दा, तल्लिच्छा, साहसिया, लोहितपाणी, आमिसत्थी, आमिसाहारा, आमिसप्पिया, आमिसलोला, आमिसं गवेसमाणा रत्तिं वियालचारिणो दिया पच्छन्नं चावि चिट्ठंति।

तते ण ताओ मयंगतीरद्दहातो अन्नया कदाइं सूरियंसि चिरत्थमियसि, लुलियाए संझाए, पविरलमाणुसंसि णिसंतपडिणिसंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी, आहार गवेसमाणा सणियं सणियं उत्तरंति, तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वतो समता परिघोलेमाणा परिघोलेमाणा वित्ति कप्पेमाणा विहरंति।

तयणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मयंगतीरे दहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेण परिघोलेमाणा परिघोलेमाणा वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति।

तते णं ते पावसियाला ते कुम्मए पासंति, पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तते णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति, पासित्ता भीता, तत्था, तसिया, उव्विग्गा, संजातभया हत्थे य पादे य गीवाए य सएहिं सएहि काएहिं साहरंति, साहरित्ता निच्चला, निप्फंदा तुसिणीया सचिट्ठंति।

तते ण ते पावसियालया जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवा-गच्छंति, उवागच्छित्ता ते कुम्मगा सव्वतो समंता उव्वत्तेंति, परियत्तेंति, आसारेति, ससारेति, चालेति घट्टेंति, फंदेंति, खोभेति, नहेहि आलुंपति, दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स आबाहं वा पबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए छविच्छेय वा करेत्तए।

तते णं ते पावसियालया एए कुम्मए दोच्चं पि तच्चं पि सव्वतो समंता उव्वत्तेंति. जाव नो चेव णं संचाएंति करित्तए। ताहे संता, तंता, परितंता, निव्विन्ना समाणा सणियं सणिय पच्चोसक्केति, एगंतमवक्कमंति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति।

तत्थ णं एगे कुम्मगे ते पावसियालए चिरंगते दूरंगए जाणित्ता सणियं सणियं एगं पायं निच्छुभति।

तते णं ते पावसियालया तेणं कुम्मएणं सणियं सणियं एगं पायं नीणियं पासंति, पासित्ता ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घं, चवलं, तुरियं, चंडं, वेगितं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति, दंतेहिं अक्खोडेंति, ततो पच्छा मंसं च सोणियं च आहारेंति, आहारित्ता तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वतेंति .... जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए, ताहे दोच्चं पि अवक्कमंति। एवं चत्तारि वि पाया जाव सणियं सणियं गीवं णीणेति। तते णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं गीवं णीणियं पासति, पासित्ता सिग्घं, चवलं, तुरियं, चंडं नहेहिं दंतेहिं कवालं विहाडेंति, विहाडित्ता तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवित्ता मंसं च सोणियं च आहारेति।

एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंच य से इंदियाइं अगुत्ताइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूण समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे परलोगे वि य णं आगच्छति बहूणं दंडणाणं, संसारकतारं अणुपरियट्टति, जहा से कुम्मए अगुत्तिदिए।

तते णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चए कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वतेंति

.... जाव दंतेहिं अक्खुडेंति .... जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए।

तते णं ते पावसियाल्गा पि तच्चं पि .... जाव नो संचाएंति तस्स कुम्मगस्स किंचि आबाहं वा विबाहं वा .... जाव छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे सता, तंता, परितंता, निव्विन्ना समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया।

तते णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरगए जाणित्ता सणियं सणियं गीवं नेणेति, नेणित्ता दिसावलोयं करेइ, करित्ता जमगसमगं चत्तारि वि पादे नीणेति, नीणेत्ता ताए उक्किट्ठाए कुम्मगईए वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्तनातिनियग-सयणसबंधिपरियणेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था।

एवामेव समणाउसो! जो अम्हं समणो वा समणी वा पंच से इंदियाति गुत्ताति भवति से णं इहभवे अच्चणिज्जे जहा उ से कुम्मए गुत्तिंदिए।

(श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम्, अध्ययनम् ४)

२०

जन्नस्स समुप्पत्ती

सुणिऊण जन्नवयणं, पुच्छइ मगहाहिवो मुणिपसत्थं ।
जन्नस्स समुप्पत्ती, कहेहि भयवं परिफुडं मे ॥ ६ ॥

अह भाणिउं पयत्तो, अणयारो सुमहुराए वाणीए ।
आसि अओज्झाहिवई, इक्खागुकुलुब्भवो राया ॥ ७ ॥

नामेण महासत्तो, अजिओ भज्जा य तस्स सुरकन्ता ।
पुत्तो य वसुकुमारो, गुरुसेवाउज्जयमईओ ॥ ८ ॥

खीरकयम्बो त्ति गुरू, सत्थिमई हवइ तस्स वरमहिला ।
पुत्तो वि हु पव्वयओ, नारयविप्पो हवइ सीसो ॥ ९ ॥

अह अन्नया कयाई, सत्थं आरण्णयं वणुद्देसे ।
कुणइ तओ अज्झयणं, सीससमग्गो उवज्झाओ ॥ १० ॥

अह बम्भणस्स पुरओ, आगासत्थेण तेण साहूणं ।
जीवाण दयट्ठाए, भणियं अणुकम्पजुत्तेणं ॥ ११ ॥

चउसु वि जीवेसु सया, एक्को वि हु नरगभविओ भणिओ ।
सुणिऊण उवज्झाओ, खीरकयम्बो तओ भीओ ॥ १२ ॥

वीसज्जिया सहाया, निययघरं तो लहुं समल्लीणो ।
भणिओ सत्थिमईए, पुत्त ! पिया ते न एत्थाओ ॥ १३ ॥

तेणं पिइए सिट्ठं, एही ताओ अवस्स दिवसन्ते ।
तद्दंसणूसुयमणा, अच्छइ मग्गं पलोयन्ती ॥ १४ ॥

अत्थमिओ च्चिय सूरो, तह वि घरं नागओ उवज्झाओ ।
सोगभरपीडियङ्गी, सत्थिमई मुच्छिया पडिया ॥ १५ ॥

आसत्था भणइ तओ, हा कट्ठं मन्दभागधेज्जाए ।
किं मारिओ सि दइओ, एगागी कं दिसं पत्तो ॥ १६ ॥

किं सव्वसङ्गरहिओ, पव्वइओ तिव्वजायसंवेगो ।
एवं विलवन्तीए, निसा गया दुक्खियमणाए ॥ १७ ॥

अरुणुग्गमे पयट्टो, पव्वयओ गुरुगवेसणट्ठाए ।
पेच्छइ नईतडट्ठं, पियरं समणाण मज्झम्मि ॥ १८ ॥

निग्गन्थं पव्वइयं, दट्ठूण गुरुं कहेइ जणणीए ।
सुणिऊण अइविसण्णा, सत्थिमई दुक्खिया जाया ॥ १९ ॥

अह नारओ वि तइया, गुरुपत्तिं दुक्खियं सुणेऊणं ।
आगन्तूण पणामं, करेइ संथावणं तीए ॥ २० ॥

तइया जियारिराया, पव्वइओ वसुसुयं ठविय रज्जे ।
आगासनिम्मलयरं, फलिहमयं आसणं दिव्वं ॥ २१ ॥

पव्वययनारयाणं, तच्चत्थनिरूवणी कहा जाया ।
अह नारएण भणियं, दुविहो धम्मो जिणक्खाओ ॥ २२ ॥

पढममहिंसा सच्चं, अदत्तपरिवज्जणं च बम्भं च ।
सव्वपरिग्गहविरई, महव्वया होन्ति पञ्च इमे ॥ २३ ॥

सेसा अणुव्वयधरा, गिहिधम्मपरा हवन्ति जे मणुया ।
पुत्ताइभेयजुत्ता, अतिहिविभागे य जन्ने य ॥ २४ ॥

एत्तो अजेसु जन्नो, कायव्वो नारओ भणइ एवं ।
ते पुण अजा अविज्जा, जवाइयंकुरपरिमुक्का ॥ २५ ॥

तो पव्वएण भणियं, वुच्चन्ति अजा पसू न संदेहो ।
ते मारिऊण कीरई, जन्नो एसा भवइ दिक्खा ॥ २६ ॥

तो नारएण भणिओ, पव्वयओ मा तुमं अलियवादी ।
होऊण जासि नरयं, दुक्खसहस्साण आवासं ॥ २७ ॥

भणइ तओ पव्वयओ, अत्थि वसू अम्ह एत्थ मज्झत्थो ।
एगगुरुगहियविज्जो, तस्स य वयणं पमाणं मे ॥ २८ ॥

अह पव्वयेण य लद्धुं, माया विसज्जिया वसुसयासं ।
भणइ पहु पक्खवायं, पुत्तस्स महं करेज्जासि ॥ २९ ॥

अह उग्गयम्मि सूरे, पव्वयओ नारयओ य जणसहिया ।
पत्ता नरिन्दभवणं, जत्थच्छइ वसुमहाराया ॥ ३० ॥

भणिओ य नारएणं, वसुराया सच्चवाइणो तुम्हे ।
जं गुरुजणोवइट्ठं, त च्चिय वयणं भणेज्जाहि ॥ ३१ ॥

जइ वीहिया अविज्जा, वुच्चन्ति अजा पसू गुरुवइट्ठा ।
एयाणं इक्कयरं, भणाहि सच्चेण सत्तो सि ॥ ३२ ॥

अह भणइ वसुनरिन्दो, तच्चत्थं पव्वएण उल्लवियं ।
अलियं नारयवयण, न कयाइ सुयं गुरुसगासे ॥ ३३ ॥

एवं च भणियमेत्ते, फलिहामयआसणेण समसहिओ ।
धरणिं वसू पविट्ठो, असच्चवाई सहामज्झे ॥ ३४ ॥

पुढवी जा सत्तमिया, महातमा घोरवेयणाउत्ता ।
तत्थेव य उववन्नो, हिंसावयणालियपलावी ॥ ३५ ॥

धिद्धि त्ति अलियवाई, पव्वयवसु जणेण उग्घुट्ठं ।
पत्तो च्चिय सम्माणं, तत्थेव य नारओ विउलं ॥ ३६ ॥

पावो वि हु पव्वयओ, जणधिक्कारेण दुमियसरीरो ।
काऊण कुच्छियतवं, मरिऊणं रक्खसो जाओ ॥ ३७ ॥

सरिऊण पुव्वजम्मं, जणधिकारेण दुसहं वयणं ।
वेरपडिउञ्चणत्थे, बम्भणरूत्वं तओ कुणइ ॥ ३८ ॥

बहुकण्ठसुत्तधारी, छत्तकमण्डलुगणित्तियाहत्थो ।
चिन्तेइ अलियसत्थं, हिंसाधम्मेण संजुत्तं ॥ ३९ ॥

सोऊण तं कुसत्थं, पडिबुद्धा तावसा य विप्पा य ।
तस्स वयणेण जन्नं, करेन्ति बहुजन्तुसंवाहं ॥ ४० ॥

गोमेहनामधेए, जन्ने पायाविया सुरा हवइ ।
भणइ अगम्मागमणं, कायव्वं नत्थि दोसोऽत्थ ॥ ४१ ॥

पिइमेहमाइमेहे, रायसुए आसमेहपसुमेहे ।
एएसु मारियव्वा, सएसु नामेसु जे जीवा ॥ ४२ ॥

जीवा मारेयव्वा, आसवपाणं च होइ कायव्वं ।
मंसं च खाइयव्वं, जन्नस्स विही हवइ एसा ॥ ४३ ॥

(पउम-चरियम् उद्देशः ११)

——:०:——

२१

जीवणोवायपरिक्खा

बंभदत्तो कुमारो कुमारामच्चपुत्तो सेट्ठिपुत्तो सत्थवाहपुत्तो, एए चउरोऽवि परोप्परं उल्लावेइ — जहा को भे केण जीवइ? तत्थ रायपुत्तेण भणियं – "अहं पुन्नेहिं जीवामि," कुमारामच्चपुत्तेण भणियं – "अहं बुद्धीए," सेट्ठिपुत्तेण भणियं – "अहं रूवस्सित्तणेण," सत्थवाहपुत्तो भणइ –"अहं दक्खत्तणेण।"

ते भणंति –"अन्नत्थ गतुं विन्नाणेमो।"

ते गया अन्नं णयरं जत्थ ण णज्जंति, उज्जाणे आवासिया, दक्खस्स आदेसो दिन्नो –"सिग्घं भत्तपरिव्वयं आणेहि।"

सो वीहिं गंतुं एगस्स थेरवाणिययस्स आवणे ठिओ। तस्स बहुगा कइया एंति, तद्दिवसं को वि ऊसवो। सो ण पहुप्पति पुडए बंधेउं। तओ सत्थवाहपुत्तो दक्खत्तणेण जस्स जं उवउज्जइ लवणतेल्लघयगुडसुंठिमिरिय एवमाइ तस्स तं देइ। अइविसिट्ठो लाहो लद्धो, तुट्ठो भणइ–"तुम्हेत्थ आगंतुया उदाहु वत्थव्वया?"

सो भणइ–"आगंतुया।"

"तो अम्ह गिहे असणपरिग्गहं करेज्जह।"

सो भणइ–"अन्ने मम सहाया उज्जाणे अच्छंति, तेहिं विणा नाहं भुंजामि"

तेण भणियं–"सव्वेऽपि एंतु।"

तेण तेसिं भत्तसमालहणतबोलाइ उवउत्तं तं पञ्चण्हं रूवयाणं।

बिइयदिवसे रूवस्सी वणियपुत्तो वुत्तो–"अज्ज तुमे दायव्वो भत्तपरिव्वओ।"

"एवं भवउ" त्ति सो उट्ठेऊण गणियापाडगं गओ अप्पयं मंडेउं। तत्थ य देवदत्ता नाम गणिया पुरिसवेसिणी बहूहिं रायपुत्तसेट्ठिपुत्तादीहिं मग्गिया णेच्छइ, तस्स य तं

रूवसमुदयं दट्ठूण खुब्भिया। पडिदासिए गंतूण तीए माउए कहियं जहा – दारिया सुंदरजुवाणे दिट्ठि देइ।

तओ सा भणइ –"भण एय मम गिहमणुवरोहेण एज्जह इहेव भत्तवेलं करेज्जह।" तहेवागया, सइओ दव्ववओ कओ।

तइयदिवसे बुद्धिमन्तो अमच्चपुत्तो संदिट्ठो अज्ज तुमे भत्तपरिव्वओ दायव्वो।

"एवं हवउ" त्ति सो गओ करणसालं। तत्थ य तइओ दिवसो ववहारस्स छिज्जंतस्स परिच्छेज्जं न गच्छइ। दो सवत्तीओ, तासिं भत्ता उवरओ, एक्काए पुत्तो अत्थि, इयरी अपुत्ता य। सा तं दारयं णेहेण उवचरइ, भणइ य –"मम पुत्तो।" पुत्तमाया भणइ य –"मम पुत्तो"। तासिं ण परिच्छिज्जइ। तेण भणिय –"अहं छिंदामि ववहारं, दारओ दुहा कज्जउ, दव्वंपि दुहा एव।"

पुत्तमाया भणइ –"ण मे दव्वेण कज्जं दारगोऽवि तीए भवउ, जीवन्तं पासिहामि पुत्तं।"

इयरी तुसिणिया अच्छइ।

ताहे पुत्तमायाए दिण्णो।

तहेवागया, तहेव सहस्सं उवओगो ।

चउत्थे दिवसे रायपुत्तो भणिओ—"अज्ज रायपुत्त ! तुम्हेहिं पुण्णाहिएहिं जोगवहणं वहियव्वं ।"

"एवं भवउ" त्ति । तओ राजपुत्तो तेसिं अंतियाओ णिग्गंतुं उज्जाणे ठियो ।

तंमि य णयरे अपुत्तो राया मओ । आसो अहिवासिओ । जीए रुक्खच्छायाए रायपुत्तो णिवण्णो सा ण ओयत्ताति । तओ आसेण तस्सोवरि ठाइऊण हिसितं, राया य अभिसित्तो ।

तहेवागया । तहेव अणेगाणि सयसहस्साणि जायाणि ।

———:०:———

२२

को नरगगामी

इओ य चेइविसए सुत्तिमतीए नयरीए खीरकयबो नाम उवज्झाओ। तस्स य पव्वयओ पुत्तो, नारओ नाम माहणो, वसू य रायसुओ। सेसा य ते सहिया वेयमारियं पढंति। कालेण य विसयसुहाणुकूलगतीए कयाइं च साहू दुवे खीरकयंबघरे भिक्खस्स ठिया। तत्थेगो अइसयनाणी, तेण इयरो भणिओ – "एए जे तिण्णि जणा, एएसि एक्को राया भविस्सइ, एगो नरगगामी, एगो देवलोयगामि" त्ति।

तं य सुयं खीरकदंबेण पच्छण्णदेसट्ठिएण। ततो से चिंता समुप्पण्णा – "वसू ताव राया भविस्सइ। पव्वय-नारयाणं को मण्णे नारगो भविस्सइ"? त्ति।

तेसिं परिच्छानिमित्तं छगलो णेण कित्तिमो कारिओ। लक्खरसगब्भं च कारिऊण णारओ णेण संदिट्ठो—"पुत्त! इमो छगलो मया मंतेण थंभिओ, अज्ज बहुलट्ठमीए संझावेला, वच्चसु, जत्थ कोइ न पस्सति तत्थ णं वहेऊण सिग्घमेहि" त्ति।

सो नारओ तं गहेऊण निग्गओ 'निस्संचाराए रच्छाए तिमिरगणे पच्छण्णं सत्थेण वहेमि' त्ति चिंतेऊण 'उवरि तारगा नखत्ताणि य पस्सति' त्ति वणगहणमतिगतो। तत्थ चिंतेइ—'वणस्सइओ सचेयणाओ पस्संति'। देवकुलमागतो, तत्थ वि देवो पस्सति, ततो निग्गतो चिंतेति—"भणियं—'जत्थ न कोइ पस्साति तत्थ णं वहेयव्वो' तो अहं सयमेव पस्सामि।" 'अवज्झो एसो नूणं'—ति नियत्तो। उवज्झायस्स जहाविचारियं कहेइ। तेण भणिओ—

"साहु पुत्त! नारय! सुट्ठु ते चिंतियं। वच्च मा कस्सइ कहयसु त्ति एयं रहस्सं" ति।

बितियराईए य पव्वयओ तहेव संदिट्ठो। तेण रत्थामुहं सुण्णं जाणिऊण सत्थेण आहतो, सित्तो लक्खारसेण 'रुहिरं' ति मण्णमाणो सचेलं ण्हाओ, गिहमागतो पिउणो कहेइ।

तेण भणिओ –" पावकम्म ! जोइसियदेवा वणप्फतीओ य पच्छण्णचारियगुज्झया पस्संति जणचरियं। सयं च पस्समाणो 'न पस्सामि' त्ति विवाडेसि छगलगं। गतो सि नरगं। अवसर" त्ति।

नारदो य गहिअविज्जो खीरकयंबं पूएऊण गओ सयं ठाणं।

वसू दक्खिणं दाउकामो भणिओ उवज्झाएण –" वसू! पव्वयकस्स समाउयस्स रायभावं गतो सिणेहजुत्तो भविज्जासि। एसा मे दक्खिणा, अहं महंतो" त्ति।

वसू य राया जातो चेईए नयरीए। खीरकदंबो य कालगतो। पव्वयओ उवज्झायत्तं करेइ।

पव्वयसीसा य कयाइं णारयसमीपं गया। ते पुच्छिआ नारएण वेयपयाण अत्थ वितह वण्णेंति, जह –'अजेहिं जतियव्वं' ति, सो य अजसद्दो छगलेसु तिवरिसपज्जुवसिएसु य बीएसु वीहि-जवाणं वट्टए, पव्वयसीसा छगले भासंति।

नारएण चिंतियं – " वच्चामि पव्वयसमीवं। सो वितहवादी बोहेयव्वो, उवज्झायमरणदुक्खिओ य दट्ठव्वो" ति संपहारिऊण गतो उवज्झायगिहं। वंदिया उवज्झायिणी। पव्वयओ य संभासिओ –" अप्पसोगेण होएयव्वं" ति।

कयाइं च महाजणमज्झे पव्वयओ 'रायपूजिओ अहं' त्ति गव्विओ पण्णवेति —" अजा छगला, तेहि य जइयव्वं" ति।

नारएण निवारिओ —" मा एवं भण। समाणो वंजणाहिलावो, अत्थो पुण धण्णेसु निपतति दयापक्खण्णुमतीए य" त्ति।

सो न पडिवज्जति। ततो तेसिं समच्छरे विवादे वट्टमाणे पव्वयओ भणाति —" जइ अहं वितहवादी ततो मे जीहच्छेदो विउसाणं पुरओ, तव वा।"

नारएण भणिओ —" किं पइण्णाए? मा अधम्मं पडिवज्जह। उवज्झायस्स आदेसं अहं वण्णेमि।"

सो भणति —" अहं वा किं समईए भणामि? अहं पि उवज्झायपुत्तो, पिउणा मम एवमातिक्खियं" ति।

ततो नारएण भणियं —" अत्थि णे तइयओ आयरियसीसो खत्तियहरिकुलप्पसूओ वसू राया उवरिचरो, तं पुच्छिमो, जं णे सो लवति तं पमाणं।"

पव्वइएण भणियं —" एवं भवउ" त्ति।

ततो पव्वएण माऊए कहियं विवादवत्थु। तीए भणिओ –"पुत्त ! दुट्ठु ते कयं। नारओ पिउणो ते निच्चं सम्मओ गहणधारणासंपण्णो।

सो भणति –"मा एव संलवसि। अहं गिहीयसुत्तत्थो नारयकं वसुवयणवडिहयं छिण्णजीहं निव्वासेमि। दच्छिहिसि" त्ति।

सा पुत्तस्स अपत्तियंती गया वसुसमीवं। पुच्छिओ य तीए संदेहवत्थुं –"किह एयं उवज्झायमुहाओ अवधारितं" ति।

सो भणति –"जहा नारओ भणाति तह तं, अहमवि एवंवादी।"

ततो सा भणाति –"जइ एवं तुमं सि मे पुत्तं विणासेतओ, तओ तव समीवे एव पाणे परिच्चयामि" त्ति जीहं पगड्ढिया।

पासत्थेहि य वसू राया भणितो –"देव ! उवज्झाइणीए वयणं पमाणं कायव्वं। जं चेत्थ पावगं तं समं विभजिस्सामो" त्ति।

सो तीसे मरणनिवारणत्थं पासत्थेहि य माहणेहिं पव्वयगपक्खिएहिं गाहिओ। ततो कहंचि पडिवण्णो 'पव्वयपक्खं भणिस्सं' ति। ततो माहणी कयकज्जा गया सगिहं।

बितियदिवसे जणो दुहा जातो —" केइ नारयं पसंसिया, केइ पव्वयं । पुच्छिओ वसू —" भण किं सच्चं ? " ति ।

सो भणति —" छगला अजा, तेहि जइयव्वं " ति ।

तम्मि समए देवयाए सच्चपक्खिकाए आहयं सीहासणं भूमीए ठवियं । वसु उवरिचरो होऊण भूमीचरो जातो ।

(वसुदेवहिण्डी–प्रथमखण्डम्)

——:०.——

२३

साहसवज्जा

(१) साहसमवलम्बन्तो पावइ हियइच्छियं न सन्देहो ।
जेणुत्तमङ्गमेत्तेण राहुणा कवलिओ चन्दो ॥ १०७ ॥

(२) तं किं पि साहसं साहसेण साहन्ति साहससहावा ।
जं भविऊण दिव्वो परम्मुहो धुणइ नियसीसं ॥ १०८ ॥

(३) थरहरइ धरा खुब्भन्ति सायरा होइ विम्भलो दइवो ।
असमववसायसाहस-सलद्धजसाण धीराणं ॥ १०९ ॥

(४) जह जह न समप्पइ विहिवसेण विहडन्तकज्जपरिणामो ।
तह तह धीराण मणे वड्ढइ बिउणो समुच्छाहो ॥ ११३ ॥

(५) हियए जाओ तत्थेव वड्ढिओ नेय पयडिओ लोए ।
ववसायपायवो सुपुरिसाण लक्खिज्जइ फलेहिं ॥ ११५ ॥

(६) न महुमहणस्स वच्छे मज्झे कमलाण नेय खीरहरे ।
ववसायसायरे सुपुरिसाण लच्छी फुडं वसइ ॥ ११८ ॥

२४

दीणवज्जा

(१) परपत्थणापवन्नं मा जणणि जणेसु एरिसं पुत्तं ।
उयरे वि मा धरिज्जसु पत्थणभङ्गो कओ जेण ॥ १३३ ॥

(२) ता रूवं ताव गुणा लज्जा सच्चं कुलक्कमो ताव ।
ताव च्चिय अहिमाणो 'देहि' त्ति न भण्णए जाव॥१३४॥

(३) तिणतूलं पि हु लहुयं दीणं दइवेण निम्मियं भुवणे ।
वाएण किं न नीयं अप्पाणं पत्थणभएण ॥ १३५ ॥

(४) थरथरथरेइ हिययं जीहा घोलेइ कण्ठमज्झम्मि ।
नासइ मुहलावण्णं 'देहि' त्ति परं भणन्तस्स ॥ १३६ ॥

(५) किसिणिज्जन्ति लयन्ता उदहिजलं जलहरा पयत्तेण ।
धवलीहुन्ति हु देन्ता देन्त–लयन्तन्तरं पेच्छ ॥ १३७ ॥

२५

सेवयवज्जा

(१) जं सेवयाण दुक्खं चरित्तविवज्जियाण नरणाह ! ।
तं होउ तुह रिऊण अहवा ताणं पि मा होउ ॥ १५१ ॥

(२) भूमिसयणं जरचीरबन्धणं बम्भचेरयं भिक्खा ।
मुणिचरिय दुग्गयसेवयाण धम्मो परं नत्थि ॥ १५२ ॥

(३) सव्वो छुहिओ सोहइ मढदेउलमन्दिरं च चच्चरयं ।
नरणाह ! मह कुडुम्बं छुहछुहियं दुब्बलं होइ ॥ १६१ ॥

२६

सीहवज्जा

(१) किं करइ कुरङ्गी बहुसुएहि ववसायमाणरहिएहिं ।
एक्केण वि गयघडदारणेण सिंही सुहं सुवइ ॥ २०० ॥

(२) मा जाणह जइ तुङ्गत्तणेण पुरिसाण होइ सोण्डीरं ।
मडहो वि मइन्दो करिवराण कुम्भत्थलं दलइ ॥ २०२ ॥

(३) बेण्णि वि रण्णुप्पन्ना बज्झन्ति गया न चेव केसरिणो ।
संभाविज्जइ मरणं न गञ्जणं धीरपुरिसाणं ॥ २०३ ॥

—:o:—

२७

विजयो चोरो

ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णामं नयरे होत्था। तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए नामं राया होत्था। तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणासिलए नामं चेतिए होत्था।

तस्स णं गुणसिलयस्स चेतियस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे जिण्णुज्जाणे यावि होत्था विणट्ठदेवउले परिसडिय-तोरणघरे नाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिवच्छच्छाइए अणेगवाल-सयसंकणिज्जे यावि होत्था।

तस्स णं जिन्नुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भग्गकूवए यावि होत्था।

तस्स णं जिन्नुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था,—किण्हे, किण्होभासे, रम्मे, महामेहनिउरंबभूते, बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य तणेहि य कुसेहि य खाणुएहि य संछन्ने, पलिच्छन्ने, अंतो झुसिरे, बाहिं गंभीरे, अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था।

तत्थ णं रायगिहे नगरे धण्णे नामं सत्थवाहे अड्ढे, दित्ते, विउलभत्तपाणे।

तस्स णं धन्नस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था, —सुकुमालपाणिपाया, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा, लक्खण-वंजणगुणोववेया, माणुम्माणप्पमाणपडिपुन्नसुजातसव्वंगसुंदरंगी, ससिसोमागारा, कंता, पियदंसणा, सुरूवा, करयलपरिमियतिव-लियमज्झा, कुंडलुल्लिहियगंडलेहा, कोमुदिरयणियरपडिपुण्ण-सोमवयणा, सिंगारागारचारुवेसा, पडिरूवा वंझा, अवियाउरी यावि होत्था।

तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पंथए नाम दासचेडे होत्था,—सव्वंगसुंदरंगे मंसोवचिते बालकीलावणकुसले यावि होत्था।

तते णं से धण्णे सत्थवाहे रायगिहे नयरे बहूण नगर-निगमसेट्ठिसत्थवाहाणं अट्ठारसण्ह य सेणिप्पसेणीणं बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य ..जाव* चक्खुभूते यावि होत्था। नियगस्स वि य णं कुडुंबस्स बहुसु य कज्जेसु....जाव चक्खु-भूते यावि होत्था।

तत्थ णं रायगिहे नगरे विजए नाम तक्करे होत्था,—पावे, चंडालरूवे, भीमतररुद्दकम्मे, आरुसियदित्तरत्तनयणे, भमरराहु-वन्ने, निरणुक्कोसे, निरणुतावे, दारुणे, पइभए, निसंसतिए, निरणुकंपे, अहि व्व एगंतदिट्ठिए, खुरे व एगंतधाराए, गिद्धे व आमिसतल्लिच्छे, अग्गिमिव सव्वभक्खे, जलमिव सव्वगाही, उक्कंचणवंचणमायानियडिकूडकवडसाइसंपओगबहुले, जूयपसंगी, मज्जपसंगी, भोज्जपसंगी, मंसपसंगी, दारुणे, हिययदारए, साहसिए, संधिच्छेयए, विस्संभघाती, परस्स दव्वहरणम्मि निच्चं अणुबद्धे, तिव्ववेरे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइगम-णाणि य निग्गमणाणि य दाराणि य अवदाराणि य छिंडिओ य खंडिओ य नगरनिद्धमणाणि य संवट्टणाणि य निव्वट्टणाणि य जूवखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागाराणि य तक्करघराणि य सिंगाडगाणि य तियाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य

---

* पृष्ठ ९९ पंक्ति ९.

नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे, मग्गमाणे, गवेसमाणे, बहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहितस्स य दुक्खियस्स य विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्गं च छिद्दं च विरहं च अतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहराति ।

बहिया वि य णं रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य उज्जाणेसु य वाविपोक्खरणीदीहियागुंजालियासरेसु य सरपंतिसु य सरसपंतियासु य जिण्णुज्जाणेसु य भग्गकूवएसु य मालुयाकच्छएसु य सुसाणएसु य गिरिकंदरलेणउवट्ठाणेसु य विहरति ।

तते णं तीसे भद्दाए भारियाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था —"अहं धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं बहूणि वासाणि सद्दफरिसरसगंधरूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरामि । नो चेव णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि । तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव

सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं, जासिं मन्ने णियगकुच्छिसंभूयाति थणदुद्धलुद्धयाति महुरसमुल्लावगाति मम्मणपयंपियाति थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणाति मुद्धयाई थणयं पिबंति। ततो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंगे निवेसियाइं देति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिते। तं अहं णं अधन्ना, अपुन्ना, अलक्खणा, अकयपुन्ना एत्तो एगमवि न पत्ता। तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जलते सूरिए धण्णं सत्थवाहं आपुच्छित्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्तनातिनियगसयणसबंधिपरिजणमहिलाहिं सद्धिं सपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया णागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इंदाणि य खंदाणि य रुद्दाणि य सेवाणि य वेसमणाणि य तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य....जाव वेसमणपडिमाण य महरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता जाणुपायपडियाए एवं वइत्तए—'जइ णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारिगं वा पयायामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमि' त्ति कट्टु उवातियं उवाइत्तए।"

तते णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाता समाणी हट्ठतुट्ठा विपुलं असणपानखातिमसातिमं उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता सुबहुं पुप्फगंधवत्थमल्लालंकारं गेण्हति, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणिं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करोति, जलकीडं करेति, करित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तं सुबहुं पुप्फगंधमल्लं गेण्हति, गेण्हित्ता जेणामेव नागघरए य .. जाव वेसमणघरए य तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तत्थ णं नागपडिमाण य ..जाव वेसमणपडिमाण य आलोए पणाम करेइ, ईसिं पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता नागपडिमाओ य....जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थेणं पमज्जति, उदगधाराए अब्भुक्खेति, अब्भुक्खित्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ, लूहित्ता महरिहं वत्थारुहणं च मल्लारुहणं च गंधारुहणं च चुन्नारुहणं च वन्नारुहणं च करेति, करित्ता जाव धूवं डहति, डहित्ता जाणुपायपडिया पंजलिउडा एवं वयासी—

"जइ णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि तो णं अहं जायं च....जाव अणुवड्ढेमि" त्ति कट्टु उवातियं करेति, करित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुलं असणपाणखातिमसातिमं आसाएमाणी विहरति। जिमिया सुईभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया।

अदुत्तरं च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुन्नमासिणीसु विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता बहवे नागा य....जाव वेसमणा य उवायमाणी नमंसमाणी विहरति।

तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ कालंतरेणं आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था।

तते णं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं सुकुमालपाणिपादं दारगं पयाया।

तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्मं करेंति, करित्ता तहेव विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता तहेव मित्तनाति० भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति — "जम्हा णं अम्हं इमे दारए बहूणं नागपडिमाण य .... जाव वेसमण-

पडिमाए य उवाइयलद्धे णं तं होउ णं अम्हं इमे दारए 'देवदिन्न' नामेणं"।

तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेति।

तते णं से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दारयं कडीए गेण्हति, गेण्हित्ता बहूहिं डिंभएहि य डिंभिगाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे अभिरममाणे अभिरमति।

तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइं देवदिन्नं दारयं ण्हाय, कयबलिकम्मं, कयकोउयमंगलपायच्छित्तं, सव्वालंकार-भूसियं करेति, पंथयस्स दासचेडयस्स हत्थयंसि दलयति।

तते णं से पंथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्नं दारगं कडिए गिण्हति, गिण्हित्ता सयातो गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेति, ठवित्ता बहूहिं डिंभएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि होत्था विहरति।

इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि बाराणि य अवदाराणि य तहेव आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसेमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारग सव्वालकारविभूसियं पासति, पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए, गढिए, गिद्धे, अज्झोववन्ने पथयं दासचेडं पमत्तं पासति, पासित्ता दिसालोयं करेति, करेत्ता देवदिन्नं दारगं गेण्हति, गेण्हित्ता कक्खंसि अल्लियावेति, अल्लियावित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहेइत्ता सिग्घं, तुरियं, चवल रायगिहस्स नगरस्स अवदारेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे, जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवादेन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवित्ता आभरणालंकार गेण्हति, गेण्हित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं भग्गकूवए पक्खिवति, पक्खिवित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छयं अणुपविसति, अणुपविसित्ता निच्चले, निप्फंदे, तुसिणीए दिवसं खिवेमाणे चिट्ठति ।

तते णं से पंथए दासचेडे तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे

देवदिन्नदारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुतिं वा खुतिं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव. सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी —

"एवं खलु सामी! भद्दा सत्थवाही देवदिन्नं दारयं ण्हायं .... जाव मम हत्थंसि दलयति। तते णं अहं देवदिन्नं दारयं कडीए गिण्हामि, गिण्हित्ता .... जाव मग्गणगवेसणं करेमि, तं न णज्जति णं सामी! देवदिन्ने दारए केणइ हते वा अवहिए वा अवखित्ते वा"

तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंथयदासचेडयस्स एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूते समाणे परसुणियत्ते चपगपायवे धसत्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सन्निवइए।

तते णं से धन्ने सत्थवाहे ततो मुहुत्तंतरस्स आसत्थे पच्छागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वतो समंता मग्गण-गवेसणं करेति। देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गेहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता महत्थं पाहुडं गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव नगर-गुत्तिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं महत्थं पाहुडं उवणयति, उवणतित्ता एवं वयासी —

"एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नाम दारए इट्ठे उंबरपुप्फं पिव दुलहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए। तते ण सा भद्दा देवदिन्नं ण्हायं सव्वालंकारविभूसिय पंथगस्स हत्थे दलाति .... जाव अवखित्ते वा, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! देवदिन्नदारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह।"

तए णं ते नगरगोत्तिया धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा सन्नद्धबद्धवम्मियकवया, गहियाउहपहरणा धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अतिगमणाणि य .... जाव पवासु य मग्गणगवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं, निच्चेट्ठं, जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा! हा! अहो अकज्जमिति कट्टु देवादिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेति, उत्तारित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थे णं दलयंति।

तते णं ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छयं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता विजयं

तक्करं ससक्खं, सहोढं, सगेवेज्जं, जीवग्गाहं गिण्हंति, गिण्हित्ता अट्ठिमुट्ठिजाणुकोप्परपहारसंभग्गमहियगत्तं करेंति, करित्ता अवउडाबंधणं करेति, करित्ता देवदिन्नगस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति, गेण्हित्ता विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति, बंधित्ता मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहं नगरं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता रायगिहे नगरे कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य निवाएमाणा निवाएमाणा छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पक्किरमाणा पक्किरमाणा महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वदंति —

"एस णं देवाणुप्पिया! विजए नामं तक्करे ... जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी बालघायए बालमारए, तं नो खलु देवाणुप्पिया! एयस्स केति राया वा रायपुत्ते वा रायमच्चे वा अवरज्झति, एत्थट्ठे अप्पणो सयाति कम्माइं अवरज्झति" त्ति कट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हडिबंधणं करेंति, करित्ता भत्तपाणनिरोहं करेति, करित्ता तिसंझं कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा निवाएमाणा विहरंति।

तते णं से धण्णे सत्थवाहे मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं रोयमाणे विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स

सरीरस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं निहरणं करेति, करित्ता बहूइं लोतियातिं मयगकिच्चाइं करेति, करित्ता केणइ कालंतरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था।

तते णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहिं, वधेहिं, कसप्पहारेहिं य तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ने।

से णं ततो उव्वट्टित्ता अणादीयं, अणवदग्गं, दीहमद्धं, चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सति।

एवामेव जंबू! जे णं अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिए समाणे विपुलमणिमुत्तियधणकणगरयणसारेणं लुब्भति से विय एवं चेव।

(श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम्, अध्ययनम् २)

—:०:—

२८

कमलामेला

बारवईए बलदेवपुत्तस्स निसढस्स पुत्तो सागरचंदो रूवेणं उक्किट्ठो, सव्वेसिं संबादीणं इट्ठो।

तत्थ य बारवईए वत्थव्वस्स चेव अण्णस्स रण्णो कमलामेला नाम धूआ उक्किट्ठसरीरा। सा य उग्गसेणपुत्तस्स णभसेणस्स वेरेल्लिया।

इतो य णारदो कलहदालियं विमग्गमाणो सागरचंदस्स कुमारस्स सगासं आगतो। अब्भुट्ठिओ, उवविट्ठे समाणे पुच्छति — "भगवं! किंचि अच्छेरयं दिट्ठं?"

"आमं दिट्ठं।"

"कहिं ! कहेह ।"

"इहेव बारवईए कमलामेला णाम दारिया ।"

"कस्सइ दिण्णिआ ?"

"आमं"

"कथं मम ताए समं संपओगो भवेज्जा" ?

"ण याणामि" त्ति भणित्ता गतो ।

सो य सागरचदो तं सोऊण णवि आसणे, णवि सयणे धितिं लभति । तं दारियं फलए लिहंतो णामं च गिण्हतो अच्छति ।

णारदोऽवि कमलामेलाए अतिअं गतो । ताए वि पुच्छिओ — "किंचि अच्छेरय दिट्ठपुव्वं" ति ।

सो भणाति — "दुवे दिट्ठाणि, रूवेण सागरचंदो, विरूवत्तणेण णभसेणओ" । सागरचदे मुच्छिता, णहसेणए विरत्ता, णारएण समासासिता । ताए भणितं — "भगवं किह मम सो भत्ता होज्जति ?"

तेण भणियं — "अहं करेमि तेण ते सह संजोगं" ति । ततो तीसे रूवं पट्टियाए लिहिऊणं गतो सागरचंदसगासं । सो तम्मि अज्झोववन्नो न खाति न पिबति ।

ताहे सागरचंदस्स माता अण्णे य कुमारा आदण्णा मरइ त्ति। ततो संबो उवागतो जाव पेच्छति सागरचंदं विलवमाणं। तेणं सो चिंताकुलेण ण णातो एंतो। ताहे पच्छतो ठाइऊण संबेण अच्छीणि दोहि वि हत्थेहि छादिताणि। सागरचंदेण भणितं — "कमलामेल" त्ति?

संबो हसिऊण भणति — "णाहं कमलामेला, कमलामेलो अहं पुत्ता!"।

सो पाएसु पडिऊणं भणति — "ताल! उत्तमपुरिसा सच्चपइन्ना, तो मम कमलामेलं मेलवेहि" त्ति।

संबेण अब्भुवगतं। ततो चितेति — "अहो मए आलो अब्भुवगओ। इदाणीं किं सक्कमण्णहाकाउं? णिव्वहियव्वं"।

ततो पज्जुन्नसगासं पाडिहारियं पन्नत्तिविज्जं मग्गति। तेण दिन्ना।

ततो कमलामेलाए विवाहदिवसे विज्जाए पाडिरूवं विउव्विऊणं अवहरिता कमलामेला चेव। तए उज्जाणे सागरचंदस्स तीए सह विवाहं काऊणं उवललंता अच्छंति।

विज्जापडिरूवगं पि विवाहे वट्टमाणे अट्टहासं काऊणं उप्पातितं। ततो जातो खोभो। ण णज्जति केण हारिय? त्ति।

णारदो पुच्छितो भणति—"रेवतउज्जाणे दिट्ठ त्ति, केणवि विज्जाहरेण अवहिय" त्ति ।

ततो सबलवाहणो णिग्गतो कण्हो । संबो विज्जाहररूवं काउणं संपलग्गो जुद्धं । सव्वे परातिता । कण्हेण सद्धिं लग्गो । ततो जाहेऽणेण णातो रुट्ठो तातो त्ति, ततो से चलणेसु पडितो । कण्हेण अंबाडितो ।

संबेण भणितं—"एसा अम्हेहिं गवक्खेणं अप्पाणं मुयंति किह वि संभाविता" ।

ततो कण्हेण उवगमितो उग्गसेणो । पच्छा इमाणि भोगे भुंजमाणाणि विहरंति ।

अरिट्ठनेमी समोसरितो । ततो सागरचंदो कमलामेला य सामिसगासे धम्मं सोऊण गहिताणुव्वयाणि सावगाणि संवुत्ताणि ।

ततो सागरचंदो अट्ठमिचउद्दसीसु सुन्नघरे सुसाणेसु वा एगराइयं पडिमं गतो । णभसेणेणं आयण्णिऊणं तंबियाओ सूती घडाविताओ । ततो सुन्नघरे पडिमं ठियस्स तस्स वीससु वि अंगुलीणहेसु आहोडियातो, सम्ममहियासेमाणो य वेयणाभिभूतो कालगतो देवो जातो ।

ततो बितियदिवसे गवेसंतेहिं दिट्ठो। अक्कंदो जातो। दिट्ठा सूतीतो। गवेसंतएहिं तंबकुट्टगसगासे उवलद्धं णभसेणएण कारितातो त्ति। रूसिता कुमारा। णभसेणग मग्गंति। जुद्धं दोण्ह वि बलाणं संपलग्गं। ततो सागरचंदो देवो अंतरे ठाऊणं उवसामेति। पच्छा कमलामेला भगवतो सगासे पव्वइया।

(आवश्यकउपोद्घातनिर्युक्तिः — भावानुयोगः)

——:०:——

सम्मइगाहा*

दव्वं खित्त कालं भावं पज्जाय–देस–संजोगे ।
भेदं च पडुच्च समा भावाण पण्णवणपज्जा ॥ ६० ॥

ण हु सासणभत्तीमेत्तएण सिद्धंतजाणओ होइ ।
ण त्रिजाणओ वि णियमा पण्णवणाणिच्छिओ णामं ॥ ६३ ॥

सुत्तं अत्थनिमेणं न सुत्तमेत्तेण अत्थपडिवत्ती ।
अत्थगई उण णयवायगहणलीणा दुरभिगम्मा ॥ ६४ ॥

तम्हा अहिगयसुत्तेण अत्थसंपायणम्मि जइयव्वं ।
आयरियधीरहत्था हंदि महाणं विलंवेन्ति ॥ ६५ ॥

---

* इन गाथाओं का सार टिप्पण नं. ५५ में दिया गया है वह देखना चाहिये ।

जह जह बहुस्सुओ संमओ य सिस्सगणसंपरिवुडो य ।
अविणिच्छिओ य समए तह तह सिद्धंतपडिणीओ ॥ ६६ ॥

चरण–करणप्पहाणा ससमय–परसमयमुक्कवावारा ।
चरण–करणस्स सारं णिच्छयसुद्धं ण याणंति ॥ ६७ ॥

णाणं किरियारहियं किरियामेत्तं च दो वि एगंता ।
असमत्था दाएउं जम्म–मरणदुक्ख मा भाइ ॥ ६८ ॥

जेण विणा लोगस्स वि ववहारो सव्वहा न निव्वडइ ।
तस्स भुवणेक्कगुरुणो नमो अणेगंतवायस्स ॥ ६९ ॥

(सन्मतितर्कप्रकरणम्—३ काण्डः)

———:०:———

३०

नीइवज्जा

(१) सन्तेहि असन्तेहि य परस्स किं जम्पिएहि दोसेहिं ।
अत्थो जसो न लब्भइ सो वि अमित्तो कओ होइ ॥८२॥

(२) पुरिसे सच्चसमिद्धे अलियपमुक्के सहावसंतुट्ठे ।
तवधम्मनियममइए विसमा वि दसा समा होइ ॥ ८४ ॥

(३) सीलं वरं कुलाओ दालिद्दं भव्वयं च रोगाओ ।
विज्जा रज्जाउ वरं खमा वरं सुट्ठु वि तवाओ ॥ ८५ ॥

(४) सीलं वरं कुलाओ कुलेण किं होइ विगयसीलेण ।
कमलाइं कद्दमे संभवन्ति न हु हुन्ति मलिणाइं ॥ ८६ ॥

(५) जं जि खमेइ समत्थो धणवन्तो जं न गव्वमुव्वहइ ।
जं च सविज्जो नमिरो तिसु तेसु अलङ्किया पुहवी ॥८७॥

(६) छन्दं जो अणुवट्टइ मम्मं रक्खइ गुणे पयासेइ ।
सो नवरि माणुसाणं देवाण वि वल्लहो होइ ॥ ८८ ॥

(७) छणवञ्चणेण वरिसो नासइ दिवसो कुभोयणे भुत्ते ।
कुकलत्तेण य जम्मो नासइ धम्मो अधम्मेण ॥ ८९ ॥

(८) छन्नं धम्मं पयडं च पोरिसं परकलत्तवञ्चणयं ।
गंञ्जणरहिओ जम्मो राढाइत्ताण संपडइ ॥ ९० ॥

—:०:—

३१

धीरवज्जा

(१) सिग्घं आरुह कज्जं पारद्धं मा कहिं पि सिढिलेसु ।
पारद्धसिढिलियाइं कज्जाइ पुणो न सिज्झन्ति ॥ ९२ ॥

(२) झीणविहवो वि सुयणो सेवइ रण्णं न पत्थए अन्नं ।
मरणे वि अइमहग्घं न विक्किणइ माणमाणिक्कं ॥ ९४ ॥

(३) बे मग्गा भुवणयले माणिणि ! माणुन्नयाण पुरिसाणं ।
अहवा पावन्ति सिरिं अहव भमन्ता समप्पन्ति ॥ ९६ ॥

(४) नमिऊण जं विढप्पइ खलचलणं तिहुयणं पि किं तेण ।
माणेण जं विढप्पइ तणं पि तं निव्वुइं कुणइ ॥ १०० ॥

(५) ते धन्ना ताण नमो ते गरुया माणिणो थिरारम्भा ।
जे गरुयवसणपडिपेल्लिया वि अन्नं न पत्थन्ति ॥ १०१ ॥

(६) तुङ्गो च्चिय होइ मणो मणंसिणो अन्तिमासु वि दसासु ।
अत्थन्तस्स वि रविणो किरणा उद्धं चिय फुरन्ति ॥ १०३ ॥

(७) ता वित्थिण्णं गयणं ताव च्चिय जलहरा अइगहीरा ।
ता गरुया कुलसेला जाव न धीरेहि तुलन्ति ॥ १०४ ॥

(८) मेरू तिणं व सग्गं घरङ्गणं हत्थछित्तं गयणयलं ।
वाहलियाइ समुद्दा साहसवन्ताण पुरिसाणं ॥ १०५ ॥

(९) संघडियघडियविघडिय–घडन्तविघडन्तसंघडिज्जन्तं ।
अवहत्थिऊण दिव्वं करेइ धीरो समारद्धं ॥ १०६ ॥

——:०:——

३२

पिउकिच्चविचारो

मगहापुरे अरहंतसासणरओ उसभदत्तो नाम इब्भो। तस्स य सीलालंकारधारिणी धारिणी नाम भारिया। सा य पुण्णदोहला अतीतेसु नवसु मासेसु पयाया पुत्तं। कयजायकम्मस्स य कयं नाम "जंबु" त्ति। धाइपरिक्खित्तो य सुहेण वड्ढिओ। कलाओ य णेण गहीयाओ। पत्तजोवणो य अलंकारभूओ मगहाविसयस्स जहासुहमभिरमइ।

तम्मि य समए भयवं सुहम्मो गणहरो रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए समोसरिओ। सोऊण य सुहम्मसामिणो आगमणं परमहरिसिओ बरहिणो इव जलधरानिनादं जंबुनामो पवहणाभिरूढो निज्जाओ। भयवंतं तिपयाहिणं काऊण सिरसा नमिऊण आसीणो।

गणहरेण जंबुनामस्स परिसाए य (धम्मो) पकहिओ। तं सोऊण जंबुनामो विरागमग्गमस्सिओ वंदिऊण गुरुं विन्नवेइ — "सामि! तुब्भं अंतिए मया धम्मो सुओ, तं जाव अम्मापियरो आपुच्छामि ताव तुब्भं पायमूले अत्तणो हियमायरिस्सं।"

भगवया भणियं — "किच्चमेयं भवियाणं।"

तओ पणमिऊण पवहणमारूढो जंबुनामो आगयमग्गेण य पट्ठिओ। पत्तो य नियगभवणं। अम्मापियरं कयप्पणामो भणइ —

"अम्मयाओ! मया अज्ज सुहम्मसामिणो समीवे जिणोवएसो सुओ। तं इच्छं, जत्थ जरामरणरोगसोगा नत्थि तं पदं गंतुमणो पव्वइस्सं। विसज्जेह मं।"

तं च तस्स निच्छयवयणं सोऊण बाहसलिलपच्छाइज्जवयणाणि भणंति —

"सुट्ठु ते सुओ धम्मो, अम्ह पुण पुव्वपुरिसा अणेगे अरहंतसासणरया आसी, न य 'पव्वइय' त्ति सुणामो। अम्हे वि बहुं कालं धम्मं सुणामो, न उण एसो निच्छओ समुप्पन्नपुव्वो। तुमे पुण को विसेसो अज्जेव उवलद्धो जओ भणसि 'पव्वयामि' त्ति?"

तओ भणइ जंबुनामो —"अम्मताओ! को वि बहुणा वि कालेण कज्जविणिच्छयं वच्चइ, अवरस्स थेवेणावि कालेणं विसेसपरिण्णा भवति"।

तओ भणंति —"जाय! जया पुणो एहिति सुधम्मसामी विहरंतो तया पव्वइस्ससि।"

"अम्मयाओ! अहं संपयं बालभावेण भोयणाभिलासी जिब्भिंदियपडिबद्धो, सुहमोयगो मे अप्पा। जया पुण पंचिंदियविसयसपलग्गो भवेज्जा तया अणेगाणं जम्ममरणाणं आभागी भवेज्ज। ता मरणभीइरं विसज्जेह मं, पव्वइस्सं।"

एवं भणता कलुणं परुण्णा भणइ णं जणणी—

"जाय! तुमे कओ निच्छओ, मम पुण चिरकाल चिंतिओ मणोरहो—कया णु ते वरमुहं पासिज्जं ति। तं जइ तुमं पूरेसि तो संपुण्णमणोरहा तुमे चेव अणुपव्वइज्जा।"

भणिया य जबुनामेणं—"अम्मो! जइ तुमं एसोऽभिप्पाओ तो एवं भवउ, करिस्सं ते वयणं, ण उण पुणो पडिबंधेयव्वो त्ति कल्लाणादिवसेसु अतीतेसु।"

तओ तीए तुट्ठाए भणियं—"जाय! जं भणासि तं तह काहामो। अत्थि णे पुव्ववरियाउ इब्भकन्नगाउ। ताउ

तुहाणुरूवाउ 'पुव्ववरियाउ' त्ति करेमो तेसिं सत्थवाहाणं विदितं ।"

संदिट्ठं च तेसिं—'पव्वइहिइ जंबुनामो कल्लाणे निव्वत्ते, किं भणह?' त्ति ।

तेसिं च णं वयणं सोऊण सह घरिणीहिं संलावो जातो विसण्णमाणसाणं 'किं कायव्वं' ति ।

सा य पवित्ती सुया दारियाहिं । ताओ एक्केक्कनिच्छयाउ अम्मापियरं भणंति—"अम्हे तुम्हेहिं तस्स दिन्नाउ, धम्मओ सो ने य भवति, जं सो ववसिहीति सो अम्ह वि मग्गो" त्ति ।

तं च तारिसं वयणं सोऊणं सत्थवाहेहिं विदिअं कयं उसभदत्तस्स ।

पसत्थे य दिणे पमक्खिओ जंबुनामो विहिणा, दारियाउ वि सगिहेसु । तओ महतीए रिद्धीए चंदो विव तारगासमीवं गओ बधूगिहाणि । ताहिं सहिओ सिरिमिव किति ऊच्छीहिं व निअगभवणमागतो । तओ कोउगसएहिं ण्हविओ सव्वालंकार-विभूसिओ य अभिणंदिओ पउरजणेणं । पूजिया समणमाहणा, नागरया सयणो य पओसे वीसत्थो भुंजइ । जंबुनामो य

मणिरयणपईवुज्जोयं वासघरमुवगतो सह अम्मापिऊहिं, साहि य नववहूहि ।

इयम्मि देसयाले जयपुरवासिणो विंझरायस्स पुत्तो पभवो नाम कलासु गहियसारो, तस्स भाया कणीयसो पहू नामेणं तस्स पिउणा रज्जं दिन्नं ति पभवो माणेण निग्गओ, विंझगिरिपायमूले विसमपएसे सन्निवेसं काऊणं चोरियाए जीवइ ।

सो जंबुनामविभवमागमेऊण विवाहूसवमिलिअं च जणं, तालुग्घाडणिविहाडियकवाडो चोरभडपरिवुडो अइगतो भवणं । ओसोवितस्स य जणस्स पवत्ता चोरा वत्थाभरणाणि गहेउं । भणिया जंबुनामेण असंभंतेण — "भो! भो! मा छिवह निमंतियागयं जण" ।

तस्स वयणसमं थंभिया ठिया पोत्थकम्मजक्खा विव ते निच्चिट्ठा । पभवेण य वहूसहिओ दिट्ठो जंबुनामो सुहासणगतो तारापरिविओ विव सरयपुण्णिमायंदो ।

ते य चोरे थंभिए दट्ठूण भणिओ पभवेणं—

"अहमुहं पभवो नाम सुमो विहं विज्जासमुहयवत्थ से तुमं देहि विज्जं थंभणिं मोक्खणिं च, अहं तुब्भं देमि ताल्लुग्घाडणिं ओसोवणिं च"

भणिओ जंबुनामेण — "पभव ! सुणाहि, अहं सयणं विभवं च इमं वित्थिन्नं चइऊण पभायसमए पव्वइउकामो, भावओ मया सव्वारंभा परिचत्ता ।"

तं च सोऊण पभवो परमविम्हिओ उवविट्ठो — "अहो ! अच्छरियं !! जं इमेणं एरिसी विभूई तणपूलिया इव सव्वहा परिचत्ता, एरिसो महप्पा वंदणीउ" त्ति विणयपणओ भणइ—

"जंबुनाम ! विसया मणुयलोयसारा, ते इत्थिसहिओ परिभुंजाहि । साहीणसुहपरिच्चायं न पंडिया पसंसंति । अकाले पव्वइउं कीस ते कया बुद्धी ? परिणयवया धम्ममायरंतो न गराहिया ।"

*   *   *   *

पुणो कयंजली विन्नवेइ पभवो — "सामी ! लोगधम्मो वि ताव पमाणं कीरउ, पिउणो उवयारो कओ होइ, तेसिं पुत्तपच्चयं तित्ति वण्णंति वियक्खणा — 'निरिणो य पुरिसो सग्गगामी होइ' ।"

ततो जंबुनामो भणइ — [illegible] परमत्थो, [illegible] पुत्ता [illegible] भवंतरगयस्स अविण्णाओ उवयारबुद्धीए [illegible] करिज्जा । न य पुत्तपच्चया तित्ती पिउणो, 'सयंकय[illegible]

फलभागिणो जीवा'। जं पुत्तो देइ पियरं उद्दिसिऊण सा न भत्ती। जहा जम्मणं परायत्तं, तहा आहारो वि सकम्म-निविट्ठो। जे य खीणवंसा ते निराधारा अतित्ता सव्वमणागयकालं कहं वट्टिहिंति? पुत्तसादिट्ठं वा भत्तपाणं अचेयणं कहं पिउसमीवमेहति? तमुद्दिस्स वा जं कयं पुण्णं? जो पिता पितामहो वा कम्मजोगेण कुंथु पिपीलिया वा तणुसरीरो जातो होज्जा, तम्मि य पदेसे जइ पुत्तो उदगं तन्निमित्तं तस्स देज्जा, तस्स कहं पस्ससि उवगारं अवगारं वा? अहवा सुणाहि —

"तामलित्तीनयरीते महेसरदत्तो सत्थवाहो। तस्स पिया समुद्दनामो वित्तसचय–सारक्खण–परिवुड्ढिलोभाभिभूओ मओ मायाबहुलो महिसो जाओ तम्मि चेव विसए। माया वि से उवहि–नियडिकुसला बहुला नाम चोक्खवाइणी पइसोकेण मया सुणिया जाया तम्मि चेव नयरे।

"तम्मि य समए पिउकिच्चे सो महिसो णेण किणेऊण मारिओ। सिद्धाणि य वंजणाणि पिउमंसाणि, दत्ताणि जणस्स। बितियदिवसे तं मंसं मज्जं च आसाएमाणो, तीसे माउसुणिगाए मंसखंडाणि खिवइ, सा वि ताणि परितुट्ठा भक्खइ।

"साहू य मासखवणपारणए तं गिहमणुपविट्ठो, पस्सइ य महेसरदत्तं परमपीतिसंपउत्तं। तदवत्थं च ओहिणा आभोएऊण चिंतिअं अणेणं—

"'अहो! अन्नाणयाए एस पिउमंसाणि खायइ, सुणिगाए य देइ मंसाणि।' 'अकज्जं' ति य वोत्तूण निग्गओ।

"महेसरदत्तेण चिंतियं— 'कीस मन्ने साहू अगहियभिक्खो 'अकज्जं' ति य वोत्तूण निग्गओ?' आगओ य साहुं गवेसंतो, विवित्तपएसे दट्ठूण, वंदिऊण पुच्छइ— 'भयवं! किं न गहियं भिक्ख मम गिहे? जं वा कारणमुदीरियं तं कहेह'।

"साहुणा भणिओ— 'सावग! ण ते मंतुं कायव्वं।' पिउरहस्सं कहियं। तं च सोऊण जायससारनिव्वेओ तस्सेव समीवे मुक्कगिहवासो पव्वइओ।"

(वसुदेवहिण्डी–प्रथमखण्डम्)

——:०:——

टिप्पणियां

१. तते णं — जहां शब्द से नहीं जुडा हुआ 'णं' का प्रयोग आता है वहां वह अलंकार के लिये समझना। 'तते' शब्द का अर्थ "उसके बाद" है। इस शब्द की मूल प्रकृति 'त' (तत्) शब्द है। 'ततो' 'तओ' (ततः) के समान इसकी उपपत्ति मालूम होती है। कई जगह 'तते' के अर्थ मे 'तए' का भी प्रयोग आता है। संभव है कि 'तया' तथा 'तइया' (तदा) का उच्चारांतर यह 'तए' हो।

२. अम्मापियरो —"मातापिता"। मातावाचक 'अंबा' शब्द का यह 'अम्मा' शब्द भिन्न प्रकार का उच्चार है। जैसे 'अंब' का 'आम' (आम्र) उच्चारण होता है वैसे ही म् के साहचर्य से ब् का भी 'म' उच्चारण हो गया है। इस शब्द का प्रयोग माता अर्थ मे पाली में भी आता है।

३. कट्टु —'कृत्वा' के अर्थ में यह आर्षप्रयोग है। व्याकरण के नियम से यह निष्पन्न नहीं होता है। परन्तु उच्चारण की दृष्टि से इसका पृथक्करण इस प्रकार हो सकता है। 'कृत्वा'-गत स्वरसहित व का संप्रसारण अर्थात् उकार करके उच्चार-भार समान रखने के लिये तकार का द्वित्व हो गया है — कृत्वा–कत्तु–कट्टु।

४. **जेणामेव** — 'येन एव — जेण एव'। "जिस तरफ" अर्थ का सूचक, विभक्त्यन्त प्रतिरूपक 'जेण' अव्यय है। उच्चार की सुगमता के लिये 'जेण एव' का 'जेणामेव' हो गया है। यह प्रयोग, प्राचीन प्राकृत में बहुत आता है।

५ **समणे भगवं** — मागधी भाषा मे पुंलिंग में प्रथमा के एकवचन मे 'ए' प्रत्यय लगता है। तदनुसार 'समण' (श्रमण) शब्द से यह 'समणे' बना है। आर्ष प्राकृत मे कोई कोई प्रयोग मागधी भाषा के भी आते हैं।

भगवं — शौरसेनी मे (८–४–२६५) के अनुसार 'भवत्' और 'भगवत' शब्द के प्रथमा के एकवचन में न् का मकार हो जाता है। तदनुसार इस रूप की उपपत्ति होती है। मागधी की तरह आर्षप्राकृत मे कोई प्रयोग शौरसेनीका भी आता है।

६. **तिक्खुत्तो** — 'वार' के अर्थ में 'कृत्वस्' प्रत्यय का प्रयोग संस्कृत में आता है। आचार्य हेमचन्द्र ने इसके बदले प्राकृत व्याकरण मे (८–२–१५८ सूत्र में) 'हुत्तं' का प्रयोग बताया है। 'तिक्खुत्तो' शब्द में 'खुत्तो' रूप 'कृत्वस्' का सरल उच्चारान्तर है। यह 'खुत्तो' 'हुत्तं' का पूर्ववर्ती उच्चार मालूम होता है — कृत्वस्–खुत्तो–हुत्तं। पाली भाषा में 'खुत्तो' के स्थान में "खत्तुं" का प्रयोग आता है — तिखत्तुं।

७. **आयाहिणं पयाहिणं** — 'आदक्षिणं प्रदक्षिणं'। पूज्य पुरुष के आसपास दाहिनि ओर से बांई ओर घूमना —

प्रदक्षिणा करना । ८-२-७२ सूत्र के अनुसार दक्खिण्ण, दाहिण (दक्षिण) ये दो रूप होते हैं । आदाहिणं पदाहिणं के स्थान में इधर 'द' का लोप करके आयाहिणं, पयाहिणं प्रयोग किया गया है । कई जगह आदाहिणं पदाहिणं प्रयोग भी आता है

८. वदासी — व्याकरण के सामान्य नियम के अनुसार 'वदीअ' रूप होता है (८-३-१६३). परंतु ८-३-१६२ के अनुसार यह आपवादिकरूप आर्ष प्राकृत में बनाया गया है ।

९. देवाणुप्पिया — 'देवाना प्रिय: – देवों के वल्लभ' । 'देवों के वल्लभ' अर्थ मे 'देवानंपियो' शब्द का प्रयोग अशोक की धर्मलिपि में भी आता है । 'देवाणप्पिय' वा 'देवाणंपिय' की जगह 'देवाणुप्पिय' ऐसा आर्षप्रयोग हुआ है । इस शब्द का प्रयोग श्रमणसंस्कृति के ग्रंथों में वारंवार आता है । परंतु ब्राह्मणसंस्कृति के पाणिनि उत्तरकालीन विद्वानों ने इसका 'मूर्ख' अर्थ बताया है । संभव है कि जैनों और बौद्धों के इस प्रिय शब्द का उपहास करने के लिये, पाणिनि के वार्तिककार ने इसको 'मूर्ख' अर्थ में लगा लिया हो । इसके पहले इसका ऐसा अर्थ न था । वार्तिक के अनुसार ही जैनाचार्य हेमचंद्र ने भी जैनधर्म के इस अच्छे से अच्छे शब्द को स्वरचित कोश में 'जाल्म' का पर्यायरूप बताया है (अभिधानचिंतामणि, मर्त्यकांड श्लो० १६) । मूल सिद्धहेमव्याकरण में ऐसे अर्थ के लिये कोई स्थान नहीं है

परंतु उसके लघुन्यासकार ने "देवानांप्रिय" शब्द का 'ऋजु' और 'मूर्ख' अर्थ बताया है। पिछले आगमटीकाकारों ने तो देवाणुप्पिय की उपर्युक्त मूल व्युत्पत्ति को लक्ष में न रख कर, उसका साम्य 'देवानुप्रिय' से बताया है। संभव है कि 'देवानांप्रिय' को उन्होंने अपने तत्कालीन साहित्य में मूर्ख अर्थ में देखा हो और इससे भ्रान्ति में पड़ कर यह नई विचित्र कल्पना की हो।

१०. उंबरपुप्फमिव — उंबरे के पेड को फूल नहीं होते हैं इस लिये वे दुर्लभ है। इस प्रकार 'उंबरे के फूल की तरह दुर्लभ'। उंबर शब्द का संस्कृत उच्चार उदुंबर है। उंबर की तरह प्राकृत में दूसरा प्रयोग उउंबर भी होता है।

११. से जहा नामए — बौद्ध पिटक ग्रंथों में इसके स्थान में 'सेय्यथा' प्रयोग आता है। उसका अर्थ 'तद्यथा' है। तत् शब्द का मागधी मे पुंलिंग में 'से' रूप होता है। परन्तु इधर आर्षता के कारण इसका प्रयोग नपुंसक लिंग में भी हुआ मालूम होता है। 'नामए' शब्द भी 'से' की तरह ही लिङ्गप्रत्यय से प्रयुक्त हुआ है। इसका संस्कृत उच्चारण नामकं — नाम है।

१२. पव्वतित्तए — "प्रव्रजितुम् – प्रव्रज्या लेने के लिये"। इस रूप के अंत का 'तए' 'तुम्' का अर्थ बताता है। पाली भाषा में तुम् के अर्थ में तवे का प्रयोग होता है और पाणिनीय ३–४–९ के अनुसार वैदिक संस्कृत में भी 'तवे' और 'तवै' का प्रयोग होता है। इन तीनों का

साम्य परस्पर स्पष्ट है। उक्त रूप में मुख्य धातु भज् है। साधारण नियम के अनुसार 'तए' प्रत्यय लगाने से उसका रूप 'पव्वइत्तए' होना चाहिए। और ऐसा कई जगह आता भी है। परन्तु इधर 'जि' के 'ज' का "व्यंजनों का प्रयोग" नियम १ अनुसार लोप हो कर, बचे हुए 'इ' स्वर के साथ त् का प्रयोग हुआ है। इसका खुलासा किसी भी प्राकृत व्याकरण में नहीं मिलता। अनेक प्रयोगों के देखने से मालूम होता है कि जहाँ उपर्युक्त नियम के अनुसार क् ग् च् ज् इत्यादि का लोप होता है वहाँ बचे हुए स्वर में तकार आ जाता है। जैसे कि सामाइअ (सामायिक) की जगह 'सामातीत'; आराधक की जगह 'आराहत' इ० आते हैं। इस तरह पुराणे रूपों में जो तकार आता है उसके लिए दो कल्पना हो सकतीं। एक तो लेखकों के लेखन सम्बन्धी भ्रम से क् ग् ज् वगेरे के लोप होने के बाद बचे हुए स्वर के स्थान में किंवा स्वरस्थानीय यकार के स्थान में 'त' लिखा गया हो। अथवा यह भी संभव है कि किसी काल में स्वरों के स्थान में त बोलने या लिखने की पद्धति ही रही हो। भरत के नाट्यशास्त्र में लिखा है कि चर्मण्वती नदी के पार अर्बुद के आसपास जो प्रदेश है, तत्सम्बन्धी पात्रों के लिये तकारबहुल भाषा का प्रयोग करना (ना. शा अ. १७, श्लो० ६२)। अस्तु। इसी कथासंग्रह में भी 'पगासाइं' की जगह 'पगासातिं' और 'हेउइं' की जगह 'हेउतिं' ऐसे अनेक प्रयोग आते हैं। उन सब के त् का खुलासा उक्त पद्धति से कर लेना चाहिये।

१३. **भंते** — यह शब्द 'भदंते' इस प्राकृत रूप का त्वरित उच्चार है। भदंते–भयंते–भंते। इस रूप की निष्पत्ति 'समणे' की तरह समझ लेना।

१४. **झियायमाणंसि** — "जलता हुआ"। पाली में 'जलने' अर्थ में 'झाय्' धातु का प्रयोग आता है। इसी धातु से वर्तमान कृदन्त होकर 'झियायमाणंसि' यह सप्तम्यंत आर्ष शब्द बना है।

संस्कृत में क्षय अर्थ में क्षै और क्षि धातु का प्रयोग आता है। 'व्यंजनों का प्रयोग' नियम ७ टिप्पण ९ के अनुसार क्ष का झ होकर आर्ष प्रयोग की गति से, संभव है कि इन दोनों धातुओं में से किसी एक से यह प्रयोग बना हो। परंतु टीकाकार ने इसका संस्कृत प्रतिशब्द 'ध्मायमाने' बताया है।

१५. **गहाय** — "गृहीत्वा – ग्रहण करके"। 'आदाय' 'निस्साय' इत्यादि रूपों की तरह यह आर्ष प्रयोग भी गह् धातु से निष्पन्न हुआ मालूम होता है। व्याकरण में जो गह् धातु के रूप निष्पन्न होते है उनमें इसके समान 'गहिय' 'गहिया' ये दो रूप हैं।

१६. **आयाए** — इस रूप की प्रकृति 'आया' (आत्मा) है। आर्ष होने के कारण इसको स्त्रीलिंग के तृतीया के एकवचन का प्रत्यय लगने से आयाए रूप हुआ है। आया के पर्याय अत्ता, आत्ता, आता शब्द भी आते हैं।

१७. **हियाए** — "हिताय – हित के लिये"। चतुर्थी के एकवचन में 'य' प्रत्यय लगता है। तदनुसार 'हियाय' ऐसा

होना चाहिए था। परंतु 'य' का आर्ष में ए उच्चार हो जाने से 'हियाए' रूप हो गया है। इसी तरह खमाए, सुहाए इत्यादि रूप भी समझ लेने।

१८. **मणामे**—"सुंदर"। पाली साहित्य में इस अर्थ में 'मनाप' शब्द का प्रयोग आता है। 'मणाम' शब्द भी 'मनाप' का ही भिन्न उच्चारण है। मनाप, मणाव, मणाम।

१९. **पाणेहिं, भूतेहिं, जीवेहिं, सत्तेहिं**—यद्यपि ये चारों शब्द लगभग समान अर्थवाले हैं तथापि टीकाकार ने इनका भेद इस प्रकार बताया है। स्पर्श और रसना इंद्रिय वाले; स्पर्श, रसना और घ्राणेन्द्रियवाले; स्पर्श, रसना, घ्राण और चक्षु इन्द्रियवाले ये सब प्राण हैं। वनस्पति भूत है। जिनको श्रोत्रेन्द्रियादि पांचों इंद्रियां पूर्ण हैं वे सब जीव है। और बाकी के पृथ्वी, पाणी इत्यादि सत्त्व कहलाते हैं।

२०. **संचाएति**—"सकता है"। आचार्य हेमचंद्र ने लिखा है कि शक् के अर्थ में चय् धातु का प्रयोग प्राकृत में होता है। 'संचाएति' इसी चय् का रूपान्तर है। संभव है कि शक् के आदि श का स उच्चार करने से प्राकृत में चय् का [illegible] हो गया हो—सक्—सय्—चय्।

अथवा संस्कृत में 'चय्' और 'चाय्' यह दो धातु भी अलग अलग मिलते हैं, इनमें से किसी एक से भी इस रूप की उत्पत्ति हो सकती है। धातु अनेकार्थक होने से [illegible] सकता है। परंतु शक् से ही इस रूप की निष्पत्ति उचित जान पड़ती है।

२१. **समुप्पज्जित्था** — "समुदपदिष्ट – उत्पन्न हुआ" भूतकाल का यह आर्ष प्रयोग है। आचार्य हेमचंद्र ने तो भूतकाल में 'ईअ' 'सी' 'ही' और 'हीअ' के अतिरिक्त और प्रत्यय नहीं बताये हैं। परंतु आर्ष प्राकृत में भूतकाल सम्बन्धी 'इत्था' प्रत्ययवाले बहुत से क्रियापद आते हैं। पाली भाषा में भूतकाल मे आत्मनेपद के तृतीयपुरुष के एकवचन में इत्थ प्रत्यय भी आता है, जैसे कि 'अभवित्थ'। संस्कृत भाषा मे प्रत्येक आत्मनेपदी सेट् धातु से भूतकाळ में प्रायः 'इष्ट' प्रत्यय लगता है। इस तरह इत्थ, इत्था, इष्ट इन तीनों प्रत्ययों में सादृश्य मालूम होता है।

२२. **हत्थिरायां** —'उत्तम हाथी'। यहां पर जो उत्तम हाथी के लक्षण बताये गयें हैं प्रायः वे ही लक्षण वाराही संहिता के 'हस्तिलक्षण' प्रकरण में भी (अ. ६६) आते हैं। उक्त संहिता में हाथी की चार जाति बताई है — भद्र, मंद, मृग, और मिश्र। उनमें सबसे उत्तम हस्ती 'भद्र' जाति का होता है।

२३. **लिंडणियरं** —"लिंडे के समूह को – लीदको"। गूजराती भाषा में नासिका के मलका वाचक 'लींट' शब्द प्रसिद्ध है। संस्कृत के 'श्लिष्ट' शब्द में से इसकी उत्पत्ति मालूम होती है। 'श्लिष्ट' शब्द के 'श्' का लोप कर देने से और 'ष्ट' का 'ट' करके उसके पूर्व अनुस्वार लगा देने से 'लिंट' शब्द सहज ही हो जाता है — श्लिष्ट–लिट्ट–लिंट। उपर्युक्त लिंट से ही 'मल' अर्थ की सदृशता के कारण ट् का ड् होकर 'लींड' शब्द बना हुआ मालूम होता है। लाद,

लींट, लींडी इ० शब्द भी इसी 'क्लिष्ट' के रूपान्तर हैं। जैसे मल का वाचक लींट शब्द है वैसे ही 'सेढित' शब्द भी इसी अर्थ में आता है। इसकी उपपत्ति भी 'श्लिष्ट' में से ही पूर्ववत् होती है। लेकिन इस पक्ष में श्लिष्ट के ल् का लोप कर देना आवश्यक है। देशी भाषा में 'नासिका की ध्वनि' अर्थ में 'सिंढा' शब्द आता है वह भी श्लिष्ट का ही अपभ्रंश मालूम होता है। गूजराती का 'सेडा' शब्द भी इसी तरह आया है। नासिका के और कंठ के मल अर्थ में जो शब्द आते हैं वे सब श्लिष्ट धातु से बने हुए मालूम होते है। श्लेष्म का भ्रष्ट 'सळेखम' श्लेष्म शब्द में मात्र स्वरों के मिला देने से हो जाता है। 'श्लिष्' धातु का अर्थ चिकणाइ है इसी अर्थ के साम्य से मलवाचक उक्त सब शब्द इस धातु से बने हुए मालूम होते है। खेल शब्द भी नासिका के मल के अर्थ में आता है। इसकी उपपत्ति भी श्लेष शब्द के अक्षरों का व्यत्यय करने से और ष् का ख् बोलने से हो जाती है।

लींड शब्द का साम्य यदि संस्कृत भाषा के लेष्टु शब्द के साथ बताया जाय तो लेष्टु, लेड्डु, लींडु, लींड इस प्रकार उच्चारण भेद से लींड शब्द बन जाता है। परन्तु इसकी अपेक्षा पूर्वोक्त पद्धति द्वारा श्लिष्ट शब्द से इसका साम्य अधिक संगत लगता है।

२४. कालधम्मुणा —"कालधर्मेण – कालधर्म से – मरण से"। सामान्यतः तृतीया के एकवचन में धम्म शब्द का 'धम्मेण' रूप होता है। परन्तु आर्षप्राकृत में अनेक जगह

'कम्मुणा' 'कम्मुणा' ऐसे तृतीयांतरूप भी आते हैं। पाली भाषा में भी ऐसे रूप होते हैं जैसे — कम्मुना, अद्धुना इ०।

२५. लेस्साहिं — संसार स्थित बद्ध आत्मा के एक प्रकार के अध्यवसाय को लेश्या कहते हैं। वे संख्या में छः है — कृष्ण, नील, कापोत, तेज, पद्म, शुक्ल। इनके स्वरूप को समझने के लिये यह एक उदाहरण है—

(१) जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपनी सुखसुविधा के लिये हजारों प्राणियों को विवश रक्खें,— अर्थात् जिन प्राणियों के द्वारा वह स्वयं सुखसुविधा प्राप्त करता है, उन प्राणियों के सुख की जरा भी परवाह न करे, ऐसे मनुष्य की मनोवृत्ति को कृष्णलेश्या कह सकते हैं।

(२) जो मनुष्य अपने आराम में तो जरा भी कसर नहीं आने देता, परन्तु वह आराम जिन प्राणियों के शारीरिक श्रम से मिलता है, उनकी भी समय समय पर अजपोषण समान स्वार्थदृष्टि से कुछ सार संभाल लेता रहता है, इस मनुष्य की वृत्ति को नीललेश्या कहते हैं।

(३) जो व्यक्ति पूर्वोक्त न्याय से अपने सुखसंपादक परिश्रमजीवी प्राणियों की जरा और अधिक सँभाल रखता है, ऐसे सुखैषी मनुष्य की चित्तवृत्ति को कापोतलेश्या कहते हैं।

इन तीनों चित्तवृत्तियों में प्राणियों के प्रति अकारण मैत्री की कल्पना तक नहीं होती। इनमें केवल स्वार्थ का ही निरंकुश शासन रहता है।

(४) जो मनुष्य अपने निजी आराम को तो कमती करे तथा आराम में सहायता देनेवाली व्यक्तियों की भी उचित रूप से ठीक ठीक सार सँभाल रक्खे — इस मनुष्य की वृत्ति को तेजोलेश्या का नाम दिया जा सकता है ।

(५) जो मनुष्य अपनी सुविधाओं को जरा और अधिक कमती कर के अपने आश्रितों की तथा अपने संसर्ग में आनेवाले अन्य भी प्रत्येक प्राणियों की — बिना किसी खेद मोह और भय से—भले प्रकार सार सँभाल रखता है, उस मानव की मनोवृत्ति पद्मलेश्या कही जाती है ।

(६) जो शान्तात्मा अपने सुखसाधनों को सर्वथा न्यून कर के, मात्र अपने शरीरनिर्वाह योग्य साधारण सी सामग्री के लिये भी किसी प्राणी को लेशमात्र कष्ट न पहुंचावे, तथैव किसी वस्तु पर लोलुपता न हो—हृदय में सतत समभाव की स्थापना हो—ऐसा व्यवहार रक्खे, एवं मात्र आत्मभान से ही संतुष्ट रहे, इस मनुष्य की सुविशुद्ध वृत्ति को शुक्ललेश्या कहते हैं ।

२६. **तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं** — "तदावरणीयानां कर्मणां क्षयोपशमेन — ज्ञान को आवृत करनेवाले कर्मों के कुछ भाग के क्षय से और कुछ भाग के उपशमसे" ।

२७. **ईहापूहमग्गणगवेसणं** —"ईहा–अपोह–मार्गण–गवेषणम्" । जब कोई अनुभूत वस्तु देखी जाती है तब पूर्वानुभव की स्मृति के लिये चित्त में जो व्यापारपरंपरा

चलती है उसके द्योतक ये सब शब्द है। "यह मैंने पहले कहीं देखा है" ऐसे चित्तव्यापार को ईहा कहतें हैं। जो इस समय दीख रहा है और जो पहले देखा है इन दोनों के साम्य वैषम्य को खोजने की तर्क कोटी को अपोह कहते हैं। इसी प्रकार उत्तरोत्तर बढती हुई निर्णय लानेवाली खोज को क्रम से मार्गण और गवेषण कहते हैं।

२८. **सन्निपुव्वे** — "संज्ञिपूर्वम्"। जैन शास्त्र में "संज्ञी" (समनस्क) और "असंज्ञी" (अमनस्क) इस प्रकार जीव के दो भेद माने गये हैं।

जिस प्राणी का पूर्वजन्म संज्ञी की योनि का हो उसको 'सन्निपुव्व' कहते हैं और उसको जो पूर्वभव का स्मरण होता है उसे भी "सन्निपुव्व" कहते हैं।

२९. **पहारेत्थ** — "प्र+अधारयिष्ट – विचार किया" 'पहारेत्थ' में आया हुआ 'इत्थ' प्रत्यय भूतकाल का सूचक है। आर्ष प्राकृत में ही ऐसा प्रयोग आता है। विशेष के लिए देखो टिप्पणी नं. २१।

३

३०. **तेणं कालेणं तेणं समएणं** — "तेन कालेन, तेन समयेन – उस काल में और उस समय में।" यहां तृतीया विभक्ति सप्तमी के अर्थ में समझना। प्राकृत भाषा में इस प्रकार विभक्तिओं का व्यत्यय बहुत जगह आता है।

अथवा टीकाकारों का ऐसा भी अभिप्राय है कि 'ते काले ते समए' ऐसा सम्बंध पदच्छेद करना और 'णं' को वाक्यालंकार अर्थ में समझना। आचार्य हेमचन्द्र ने विभक्तिओं के व्यत्यय के बारे में अपने प्राकृत व्याकरण ८, ३, मे १३४ से ले कर १३७ तक के सूत्र बताये हैं।

११. आयरियउवज्झायाण—"आचार्योपाध्यायानाम्"। जैन शास्त्र में शिल्पाचार्य, कलाचार्य और धर्माचार्य इस भाँति आचार्य के तीन भेद बताये गये हैं। धर्मग्रंथो में विशेषतः धर्माचार्य का जिकर आता है। जो ज्ञान, दर्शन और चारित्र में पूर्णतया सावधान हो, सूत्र, अर्थ और सूत्रार्थ के विषय में अपना खास कौशल रखता हो और संघ की व्यवस्था का आधारभूत हो उसको आचार्य कहते हैं। उसके आंतरिक गुण इस प्रकार हैं। पंचेन्द्रिय का निग्रह, शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन, क्रोध, मान, माया और लोभ से रहित होना, मन को वश में रखना, निस्पृहता और द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को समझने की प्रतिभा।

जो जिनभगवान के कहे हुए बारह अंग को पढाता हो, और उसके अनुसार ही उपदेश देता हो उसे उपाध्याय कहते हैं। इसके भी आंतरिक गुण आचार्य के समान होते हैं।

१२. पंचमहव्वएसु—"पंचमहाव्रतेषु"। मुमुक्षु के लिये जैन शास्त्र में पांच महाव्रत बताये गये हैं। जैसे कि:— सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, (सब प्रकार की हिंसा का

त्याग) सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, (सब प्रकार के असत्य का त्याग) सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, (सर्व प्रकार की चोरी का त्याग) सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, (सर्व प्रकार के मैथुन का त्याग) सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं (सब प्रकार के परिग्रह का त्याग)। इसके अतिरिक्त सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं (सर्व प्रकार के रात्रीभोजन का त्याग) भी बताया गया है। ऐसे व्रत वैदिक परंपरा में और बौद्ध परंपरा मे भी हैं।

२३. **छज्जीवनिकाएसु** — " षड्जीवनिकायेषु – जीव के छ प्रकार के समूह में "। (१) पृथ्वीकाय–मिट्टी, (२) अप्काय–जल, (३) तेउकाय–तेज, अग्नि, (४) वाउकाय–वायु, (५) वनस्पतिकाय–वनस्पति, (६) त्रसकाय–अन्य सब प्राणी, अळसिया से ले कर मनुष्य तक।

आचारांग सूत्र में (अध्य. १ उद्देश ६) अंडज, पोतज, जरायुज, रसज, संस्वेदज, संमूर्छिम, उद्भिज्ज, औपपातिक — इस तरह से जीव के प्रकार अर्थात् भेद बताये गये हैं। ऐसे ही प्रकार अन्य दर्शनों में भी प्रसिद्ध है।

२४. **सावगाणं** — " श्रावकाणाम् "। श्रावक शब्द का सामान्य अर्थ 'सुननेवाला' होता है। लेकिन जैनशास्त्र में इसका अर्थ, जैनधर्म को पालनेवाला गृहस्थ है। इसके लिये दूसरा शब्द श्रमणोपासक भी है। श्रावक शब्द का प्रचार बौद्धग्रंथों में भी 'बुद्ध के उपासक' के अर्थ में आता है। स्त्री उपासकों को साविगा–श्राविका कहते हैं।

३५. दुंडणाणि — "दण्डनानि"। यहां दंडन शब्द का भाव नरक के दुःख से है। जिस तरह का नरक का स्वरूप जैनशास्त्र में आता है उसी तरह का महाभारतादि वैदिक ग्रंथों में और सुत्तनिपातादि बौद्ध ग्रंथों में भी मिलता है।

३६. जितसत्तू — जैसे बौद्ध जातकों में जहांतहां ब्रह्मदत्त राजा का नाम आता है वैसे ही जैन कथाओं में जितशत्रु राजा और उसके साथ धारिणी राणी का नाम आता है। कथा के आरंभ में किसी भी राजा का नाम आना ही चाहिए इस पद्धति के अनुसार कथाकारों ने इस नाम को जहांतहां रख दिया है। वास्तव में इस नाम का कोई राजा था या नहीं यह अतीत इतिहास के अन्धकार में है।

३७. सुंकेणं — "शुल्केन – मूल्य से"। सुंक के अतिरिक्त प्राकृत में शुल्क शब्द के सुंग और सुक्क प्रयोग भी होते हैं। हिंदी भाषा में जकात अर्थ में जो चूंगी शब्द का व्यवहार होता है वह सुंग का ही भिन्न उच्चारण है।

३८. रुक्खाउव्वेयकुसलो — "वृक्षायुर्वेदकुशलः – वृक्षों के आयुर्वेद में कुशल"। वाराही संहिता में ५४ वां अध्याय में वृक्षायुर्वेद के संबंध में लिखा गया है। उसमें पेड़ों के रोगों का ज्ञान, उसकी चिकित्सा, फलनाश की चिकित्सा, पेड़ों के वृद्धि के प्रयोग इत्यादि पेड़ों के संबंध में सब हकीकत बताई गई है। और किस वृक्ष को कहां लगाना, कौन वृक्ष बीजरोप्य है अर्थात् बीज से लगाया जाता है

और कौन वृक्ष काण्डरोप्य है अर्थात् गाँठ से लगाया जाता है यह बात भी बताई गई है। इस विद्या में जो कुशल है उसको वृक्षायुर्वेदकुशल कहते हैं।

३९. **ण्हविय** — "स्नापित – स्नान कराया हुआ"। हज्जाम अर्थात् नाई के अर्थ में प्राकृत मे 'ण्हाविय' और संस्कृत में तत्समान नापित शब्द का प्रयोग होता है। कोश-कारों ने 'नापित' शब्द की व्युत्पत्ति कुछ और ही तरह से की है। परन्तु, जहाँ तक शब्द एवं अर्थ का सम्बन्ध है, वहां तक उपर्युक्त 'स्ना' धातु से सम्बन्ध रखनेवाली व्युत्पत्ति ही अधिक ठीक प्रतीत होती है। 'स्नान कराना' इस अर्थ में 'स्ना' धातु का प्रेरक प्रत्ययान्त 'स्नाप्' शब्द प्रयुक्त होता है। विचार करने से मालूम होगा कि इस प्रेरकान्त 'स्ना' धातु से ही ण्हाविय एवं नापित शब्द का उद्भव होना विशेष संगत है। क्योंकि आजकल भी नापित लोग स्नान कराने का काम करते हैं। बरात मे वर को नापित ही स्नान कराता है। पुराने जमाने मे भी इसी तरह की पद्धति थी ऐसा मालूम होता है। क्योंकि जैन आगमों में जहां शिरोमुंडन और उसके बाद शुद्ध होने की हकीकत का उल्लेख आता है वहाँ आलंकारिक शाला में नापित के पास जाने का उल्लेख मिलता है। नापित का दूसरा नाम आलंकारिक भी है।

४०. **दिण्णवत्थजुयलो** — "दत्तवस्त्रयुगलः – जिसको दो वस्त्र दिये गये हैं"। भगवान महावीर के समय के

लोग दो ही वस्त्र पहेनते थे। देश की आबोहवा के अनुसार सब लोग ऐसा ही वेश रखते थे। जैन आगमों में बडे बडे संपत्तिवाले इभ्य श्रमणोपासकों के जो वर्णन आते हैं उनमें भी उनके लिये दो ही वस्त्र पहेरने का उल्लेख मिलता है। आजकल भी मिथिला और बंगाल बिहार में प्रायः यही प्रथा विद्यमान है।

४१. **आयवयकुसलेणं** —"आयव्ययकुशलेन – उपार्जन करने में और व्यय करने में कुशल"। नीतिशास्त्रकारों ने कहा है कि आय का चतुर्थांश संगृहीत रखना, चतुर्थांश व्यापार में लगाना, चतुर्थांश धर्म और अपने भोग में लगाना, और चतुर्थांश अपने स्वजनों के पोषण में लगाना। दूसरे नीतिकार ऐसा भी कहते हैं कि आय से आधा, अथवा उससे ज्यादा अंश धर्म में लगाना और बाकी से पूर्वोक्त अपने दूसरे काम करने। ऐसा करनेवाला आयव्ययकुशल कहा जाता है। आचार्य हेमचंद्ररचित योगशास्त्र में धर्म के योग्य होनेवाले आदमी के जो गुण गिनाये गये हैं उनमें भी आयोचित व्यय करने का गुण खास गिनाया है।

४२. **गंधजुत्ति** —"गंधयुक्ति"। पुराने जमाने के लोग अनेक प्रकार के सुगंधीद्रव्य अपने घरों में तैयार करते थे। वाराही संहिता में ७६ वां अध्याय सुगंधीद्रव्य बनाने की तरकीबें बताने को रचा गया है। उसके अनुसार गंधयुक्ति बनानेवाला गंधयुक्तिनिपुण कहा जाता था।

४

४३. कम्पिल्लपुरे — देखो ‘ भगवान महावीर की धर्मकथाओ ’ का कोश ।

४४. पञ्चविहे —‘ पञ्चविधान् ’। रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श इनसे उत्पन्न होनेवाले पांच प्रकार के विलास ।

४५. पञ्चाणुव्वइयं —“पञ्चाणुव्रतिकम्” । पांच अणुव्रत-वाला । पांच अणुव्रत के लिये देखो ‘ भगवान महावीरना दश उपासको ’ का कोश ।

४६. सत्तसिक्खावइयं — “ सप्तशिक्षाव्रतिकं – सात शिक्षाव्रतवाला ” । देखो ‘भ. म. ना दश उपासको’ का कोश।

४७. चउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ° — ‘ चतुर्दशी–अष्टमी–उद्दिष्टा–पूर्णमासीषु — चौदश, आठम, अमावस और पूनम इन तिथियों मे ’ (विशेष के लिये देखो ‘भ. म. नी धर्मकथाओ’ का कोश) ।

४८. पोसहं —‘ पोषधम् ’ जैनधर्म मे प्रचलित एक प्रकार का व्रत । विशेष के लिये देखो ‘ भ. म. ना दश उपासको ’ का कोश ।

४९. फासुएसणिज्जेणं — ‘ प्रासुक-एषणीयेन – जिसमें जीवजंतु नहीं है ऐसा और जिसको शास्त्र के अनुसार बराबर खोजा गया है ऐसा ’ । जैन श्रमणों को प्रासुक और एषणीय आहार मिले तो ही लेना अन्यथा नहीं, ऐसा शास्त्रीय विधान है ।

५०. **गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स** — "गोशालस्य मस्करिपुत्रस्य"। आजीवक संप्रदाय का एक प्रसिद्ध तीर्थंकर। विशेष के लिये देखो 'भ. म. ना दश उपासको' का कोश।

५१. **उट्ठाणे इ वा॰** — "उत्थानमिति वा, कर्म इति वा, बलमिति वा, वीर्यमिति वा पुरुषकारपराक्रम इति वा"। गोशालक के संबंध में जैन और बौद्ध ग्रंथो में ऐसा कहा गया है कि वह नियतिवादी था। उसके नियतिवाद का स्वरूप जो उपलब्ध है वह इस प्रकार है:— वस्तुमात्र नियत है अर्थात् इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन कोई नहीं कर सकता है। इसी लिये गोशालक कहता है कि वस्तु का उत्थान–उत्पत्ति नहीं है। उसमें परिवर्तन करने के लिये कर्म का, बल का, वीर्य का, पौरुषपराक्रम का भी सामर्थ्य नहीं है। इसलिये गोशालक कहता है कि जगत में उत्थानादि वस्तु हैं ही नहीं, सब वस्तु नियत हैं, नियत थीं और नियत रहेंगी; किसी को कोई दुःख या सुख नहीं दे सकता है; और प्राणी जो दुःख या सुख भोगता है वह भी कोई कर्मकृत नहीं है, प्रत्युत नियत है। गोशालक के संप्रदाय का दूसरा नाम आजीवक संप्रदाय भी है।

५२. **अज्जगं चेडगं** — "आर्यकं चेटकम् – पितामह अर्थात् दादा चेटक"। चेटक राजा वैशालिका था। वह गणसत्ताक राज्यों का मुखिया था। सूत्र में ऐसे अनेक उल्लेख आते हैं कि काशी कोशल के नवमल्लकी (मल्ल)

और नवलेच्छकी (लिच्छवी) गणराजा चेटक के आज्ञाधारक थे। चेटकराजा हैहयवंश का था। उसकी सात कन्याएँ थी। उसकी ज्येष्ठा नाम की लडकी भगवान महावीर के बडे भाई नंदीवर्धन के साथ ब्याही गई थी। वेहल्ल और कोणिक की माता चेलणा भी चेटक की लडकी थी। इसलिये चेटक, कोणिक और वेहल्ल का मातामह (नाना) होता था। चेटक की बहिन त्रिशला, भगवान महावीर की माता थी। चेटक के बारे में अधिक जानने के लिये पुरातत्त्व पु. १. पृष्ठ २६३ का लेख देखना चाहिये।

५३. **गणरायाणो** —" गणराजान: "। गणराजा का अर्थ करते हुए भगवती के टीकाकार अभयदेव लिखते हैं " समुत्पन्ने प्रयोजने ये गणं कुर्वन्ति ते गणप्रधाना: राजानो गणराजा: सामन्ता इत्यर्थ: "। प्रयोजन होने पर जो मिल करके प्रवृत्ति करते हैं वे गणराजा कहे जाते हैं। टीकाकार ने उन्हें सामंत कहे है। टीकाकार का यह अर्थ केवल शब्दार्थ मात्र हैं। गणराज्य का खास अर्थ तो 'समुदाय का राज्य' ऐसा होता है।

५४. **रहमुसल संगाम** —" रथमुशलम् संग्रामम् — रथमुशल नाम का संग्राम "। भगवतीसूत्र के ७ वें शतक के ९ वें उद्देशक में रथमुशल संग्राम का वर्णन आता है। तदनुसार वह संग्राम वज्जी विदेहपुत्र और मल्लकी और लिच्छवी राजाओं के बीच में हुआ था। भगवतीसूत्र में 'रथमुशल' शब्द का अर्थ इस प्रकार बताया है। " घोडा,

सारथी और बैठनेवाले योद्धा से रहित सिर्फ मुशल सहित एक रथ हजारों मनुष्यों को कुचलता हुआ जिस संग्राम में दौडता है उस संग्राम का नाम रथमुशलसंग्राम है।"

५५. **सम्मइगाहा** — सन्मतिगाथाः – सन्मातितर्कप्रकरण-की गाथायें।

उन गाथाओं का भावानुवाद नीचे दिया जाता है:—

"किसी भी प्रकार के मानव की मनोवृत्ति, किसी भी प्रकार के तत्त्वज्ञान व कर्मकाण्ड वा किसी भी प्रकार का सूक्ष्म वा स्थूल पदार्थ — इन सबों का स्वरूप को ठीक ठीक समझने के लिए उनके संबंध की निम्नलिखित बातें ध्यान में अवश्य रखनी चाहिए:

मूळ कारण, उत्पत्तिस्थान, समय, स्वभाव, होनेवाले व होनहार परिवर्तन, आधारस्थल, परिस्थिति — आसपास के संयोग और भेदप्रभेद ॥ ६० ॥

शास्त्र की भक्तिमात्र से कोई भी भक्त, उनके स्वरूप को ठीक ठीक नहि पा सकता है, शायद उस प्रकार से भी कोई भक्त, शास्त्रज्ञ होने का साहस दिखलावे तो भी उनमें उस ज्ञात शास्त्र का विवरण करने की योग्यता तो आती ही नहीं ॥ ६३ ॥

अर्थ का स्थान सूत्र–शास्त्र–है यह तो ठीक है, परन्तु इस कारण से मात्र सूत्र को रट लेने से अर्थ का भान नहीं होता। अर्थ का ज्ञान तो गूढ नयवाद की वास्तविक समझ पर निर्भर है ॥ ६४ ॥

इस कारण से सूत्ररटी लोगों को चाहिए कि वे अर्थ के संपादन में प्रबल प्रयत्न करें। क्योंकि कितनेक मात्र सूत्ररटी, अकुशल व धृष्ट आचार्य अर्थ में गरबड कर के उन महाशास्त्र की विडंबना करते हैं ॥ ६५ ॥

शास्त्र को समजने में जो ठीक निश्चित नहीं है ऐसा कोई आचार्य, प्रवाहगामी लोगों में बहुश्रुतपणे की ख्याति प्राप्त करता हो और उनका शिष्यसमुदाय भी ठीक ठीक हो तो वह आचार्य शास्त्र का प्रचारक नहीं है किन्तु शास्त्र का शत्रु है ॥ ६६ ॥

व्रत और नियमो में ही जो शुष्क भाव से रत रहेते हैं और स्वसिद्धान्त को समजने में सर्वथा उपेक्षा रखते हैं ऐसे कर्मकाण्डी लोक, उन व्रत व नियमों का शुद्ध उद्देश को ही नहीं जान पायें हैं ॥ ६७ ॥

जो ज्ञान, आचार में नहीं लाया जाता है वह निष्फल है आर जो आचार में विवेक नहीं होता है वह आचार — कर्मकाण्ड — भी निष्फल है अर्थात् ज्ञानरहित कोरा कर्मकाण्ड व कर्मकाण्डरहित कोरी विद्या यह दोनों एकान्त है। इस एकान्त — कदाग्रह — मार्ग से जन्म और मृत्यु के फेरे नहीं मीट सकते ॥ ६८ ॥

जिसके विना लोगों का व्यवहार भी सर्वथा नहीं हो सकता है ऐसा सर्वभुवनों का एकमात्र गुरु अनेकांतवाद — स्याद्वाद — को नमस्कार ॥ ६९ ॥

कोश

अइगमणाणि — (अतिगमनानि) प्रवेश के मार्ग ।

अइसंधिओ — (अतिसंधित.) ठगाया हुआ ।

अओज्झाहिवई — (अयोध्याधिपतिः) अयोध्या का राजा

अक्कमाहि — (आक्राम) आक्रांत कर ।

अक्खयणिहिं—(अक्षयनिधिम्) मंदिर का स्थायी कोश ।

अक्खोडेंति — (आक्षोटयन्ति) काटते हैं ।

अग्घवेह — (अर्घापयत) मूल्य कराओ ।

अचंकमणओ—(अचंक्रमणत :) नहीं चलने से ।

अच्चाइओ — (अत्यायितः) हैरान हुआ ।

अच्छणघरएसु — (आसनगृहेषु) आसन लगे हुए घरों में ।

अच्छंतस्स — (आसीनस्य) बैठे हुए का ।

अच्छंतेण — (आसीनेन) बैठे हुए से ।

अच्छा — (ऋक्षाः) रींछ ।

अच्छिज्जइ — (आस्यते) [क्यों] बैठा है ।

अजया — (अयताः) असंयमी

अजगं चेडगं — देखो टि. ४२।

अज्झत्थिए — (आध्यात्मिकम्) संकल्प ।

अज्झवसाणेणं—(अध्यवसानेन) अभिप्राय से ।

अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए—(आर्त-दुःखार्त-वशार्त-मानसगत.) आर्त नामक दुर्ध्यान से पीड़ित और चंचल मन को पाया हुआ ।

अट्टालग — (अट्टालक) अटारी, झरोखा ।

अट्ठगुणाए — (अष्टगुणया) आठ पड वाली से ।

अट्ठारसवंके — (अष्टादशवक्रः) जिसमें अठार वक्रिमाएँ होती हैं ऐसा हार ।

*अट्ठिमुट्ठिजाणु°—(अस्थि—मुष्टि—जानु—कूर्पर—प्रहार—संभग्न—मथित—गात्रम्) हड्डी से, मुष्टि से, जानु से, कोहणी से प्रहार करके जिसका गात्र तोड दिया गया है और मोड दिया गया है ।

अट्ठीमींज° — (अस्थि—मज्जा—प्रेमानुराग—रक्तः) जैसा अस्थि और मज्जा में प्रेम है, वैसे प्रेम से अनुरक्त ।

अड्ढातिज्जाति — (अर्धद्वितीयानि) अढाई ।

अणइक्कमणिज्जे — (अनतिक्रमणीयः) कोई अतिक्रम नहीं करा सकता है ऐसा ।

अणयारो — (अनगारः) घरबार रहित, सन्यासी ।

अणुगिलति — (अनुगिलति) निगल जाती ।

अणुट्ठिए — (अनुत्थिते) उदय के पहिले ।

अणुपुव्व°— (अनुपूर्व—सुजात—वप्र—गंभीर—शीतलजलः) जिसके वप्र—तट उत्तरोत्तर अच्छे हैं, और जिसमें गहरा एवं ठंडा जल है ऐसा ।

---

* शब्द के आगे का यह ० चिह्न 'आगे और समास है जो छोड दिया गया है' ऐसा सूचन करता है । उसकी संस्कृत छाया से उसका भान होवेगा ।

अणुवरोहेण — (अनुपरोधेन) बेरोकटोक से, संकोच न रख कर ।

अतित्थेणं—(अतीर्थेन) जहां घाट नहीं था उस जगह से ।

अतियाकुच्छी—(अजिकाकुक्षीः) बकरी जैसी कुक्षीवाला— अर्थात् बकरी की कुक्षी के समान कुक्षीवाला ।

अत्थामे — (अस्थामा) निर्बल ।

अन्नमन्नमणुव्वयया — (अन्योन्यानुव्रजका) एकदूसरे को अनुसरनेवाले ।

अन्नमन्नहियतिच्छियकारया — (अन्योन्यहृदयेप्सितकारकाः) एकदूसरे के हृदय की इच्छा के माफिक करनेवाले ।

अन्नाए — (अज्ञाते) नहीं जाने हुए ।

अपयस्स — (अपदस्य) विना पैरों के, सर्प आदि प्राणी का ।

अपासमाणे — (अपश्यमानः) नहीं देखता हुआ ।

अप्पियामि— (अर्पयामि) देता हूँ ।

अप्पेगतिया — (अपि एकैकाः) कितने ही [तकार उच्चारण के लिये देखो टि. १२, क. १] ।

अबिजा—(अबीजाः) बीजशक्ति से रहित ।

अब्भहिय — (अभ्यधिक) अधिकाधिक ।

अब्भितरियं च°— (अभ्यन्तरिकाम् च प्रेषणकारिकाम्) अंदर का लाना ले जाना करनेवाली ।

अब्भुक्खेति — (अभ्युक्षति) अभिषेक करती है ।

अब्भुवगए — (अभ्युपगते) स्वीकार करने के बाद ।

अभिगय° — (अभिगतजीवाजीव) जीव और अजीव के स्वरूप को पहिचाननेवाला ।

अभिरममाणगार्ति— (अभिरममाणकानि) खेलते हुए ।

अभिसमेसि — (अभिसमेषि अभि + सम् + एषि) जानता है ।

अमइं — (अमतिम्) दुर्बुद्धि ।

अम्मयाओ — (अम्बिकाः) माताएँ ।

अम्मो ! — (अम्ब !) हे माता ।

अरुच्चमाणम्मि — (अरुच्यमाने) पसन्द नहीं आवे ऐसा ।

अलोवेमाणा — (अलुम्पमानाः) लोप नहीं करते हुए ।

अल्लियावेति—(आलीयते) घुसाड देता है, रख लेता है ।

अल्लीण° — (आलीनप्रमाणयुक्त-पुच्छ) बराबर लगा हुआ और प्रमाणयुक्त है पुच्छ जिसका ।

अल्लेसेहिं — (अश्लेष्यैः) जिनमें दूसरे रंग नहीं मिले हों वैसे [रंगों से] ।

अवउडाबंधणं—(दे०)* हाथ को पीठ के पीछे बांधना ।

अवखित्ते—(अपक्षिप्तः) छलकाया हुआ ।

अवदालिय°— (अवदारितवदन-विवरनिर्लालिताग्रजिह्वः) फाडे हुए मुखरूप विवर से, जिसका जिह्वा का अग्र-भाग लटकता है ।

अवगय° — (अपगततृणप्रदेश-वृक्ष.) जिस प्रदेश में तृण और वृक्ष नहीं है ।

अवहत्थिऊण — (अपहस्तयित्वा) तिरस्कार करके ।

अवहिए—(अपहृत.) अपहृत ।

अवहिय त्ति — (अपहृता इति) अपहृत हुई थी, इस कारण से ।

अवंगुयदुवारे — (अपावृतद्वारः) जिनका गृहद्वार हमेशा खुला रहता है ।

अवियाउरी— (अविजननित्री) जन्म नहीं देनेवाली ।

---

* दे०=देश्य ।

असंखयं —(असंस्कृतम्) टूटने पर जिसका संस्कार न हो सके वैसा ।

असंखया —(असंस्कृता) अच्छे संस्कार से रहित ।

असोगाओ —(अशोकाः) शोक-रहित ।

अहतं —(अहतम्) नहीं टूटा हुआ, अक्षत ।

अहारातिणियाए —(यथारात्निकम्) रात्निक अर्थात् रत्न जैसा उत्तम—बड़ा आदमी। यथारात्निक अर्थात् बड़े छोटे के क्रम से [लिंग-परिवर्तन के लिये देखो टि. १६, क. १] ।

अहि व्व —(अहिः इव) सर्प के समान ।

अंगजणवयस्स —(अङ्गजनपदस्य) अंगदेश का [देखो 'भगवान महावीरनी धर्मकथाओ' का कोश] ।

अंतराणि —(अंतराणि) दोष ।

अंतरावासेहिं (अंतरावासैः) बीच के मुकामों से ।

अंतेउर° —(अंतःपुर-परिवार-संपरिवृतस्य) अंतःपुर के परिवार से परिवृत ऐसा—उसका ।

अंबाडितो —(दे०) तिरस्कृत ।

अंसागएहिं —(अंसागतैः) कंधे तक आये हुए ।

आइक्खियं —(पाली-आचिक्खति, संस्कृत-आ+चक्ष्, आख्याति) कहा हुआ ।

आइण्णा —(आचीर्णा) आचार में लाई हुई ।

आओसेज्जा —(आक्रोशयेयम्) आक्रोश करूं ।

आजीवियसमयंसि —(आजीविकसमये) आजीविक पंथ के सिद्धांत में ।

आढायंति —(आद्रियन्ते) आदर करते हैं ।

आणत्तो —(आज्ञप्तः) जिसको आज्ञा दी गई है, वह ।

आणिएल्लियं — (आनीतकम्) लाया हुआ ।

आतिक्खियं—(आख्यातम्) कहा है ।

आदण्णा—(दे०) विह्वल ।

आभिसेक्कं—(आभिषेक्यम्) पट्ट [हस्ती] ।

आभोएमाणे — (आभोगयन्) देखता हुआ ।

आयरं—(आदरम्) आदर को ।

आयरियं°—देखो टि. ३१ ।

आयवयकुसलेण—देखो टि.४१ ।

आयवंसि—(आतपे) धूप में ।

आयंताणं—(आचान्तानाम्) जल के आचमन से मुखशुद्धि किये हुए ।

आयाह—देखो टि. १६ क. १ ।

आयाभंडे—(आत्मभाण्डम्)आत्मा-रूप भाण्ड अर्थात् पात्र ।

आयारगोयर° — (आचार – गोचर – विनय – वैनयिक – चरण–करण–यात्रा–मात्रा – वृत्तिकम्) आचार–मधु-करी की विधि–विनय–विनय की क्रिया – अहिंसा आदि महाव्रतादि–आहार-शुद्धि आदि क्रियाएँ–संयम का निर्वाह–आहार का परिमाण–उक्त क्रियाएँ जिस में प्रवर्तित हों ऐसा [धर्म] ।

आरूसिय°—(आरोषित) रोष-युक्त ।

आरोहिज्जइ —(आरोप्यते) चढाया जाता है ।

आलिघरएसु — (आलिगृहेषु) आलि नामक वनस्पति के घरों में ।

आलो — (दे०) झूठा आरोप ।

आलोए—(आलोके) देखते ही ।

आवन्नसत्ता — (आपन्नसत्त्वा) गर्भवती ।

आवयमाणेसु — (आपतमानेषु) गिरते हुए ।

आवारीए—(दे० आपणि-कायाम्) दुकान में ।

आसत्था—(आश्वस्ताः) स्वस्थता पाये हुए ।

आसमेह—(अश्वमेध) अश्वमेध ।

आसवसंवर°— (आस्रव–संवर–निर्जरा–क्रिया –अधिकरण –बन्ध–मोक्ष–कुशलः) मन-वचन और काय की शुभाशुभ प्रवृत्ति — उक्त प्रवृत्ति का निरोध — जिसके द्वारा कर्मों का नाश हो ऐसी क्रिया—ये सब के आधारभूत जीव — और बन्ध और मोक्ष इन तत्त्वो में कुशल ।

आसंघो—(आसंगः) आसक्ति ।

आसाएमाणी—(आस्वादमाना) स्वाद लेती हुई ।

आसारेति—(आसारयति) इधर से उधर ले जाता है ।

आसित्तसंम°— (आसिक्त–संमार्जित–उपलिप्तम्) सींचा हुआ, साफ किया हुआ और लींपा हुआ ।

आसुपन्ने — (आशुप्रज्ञ) हाजरजवाबी ।

आसुरुत्ते — (आसुर्ययुक्तः) क्रोधाविष्ट ।

आसे — (अश्वः) घोडा ।

आहारे — (आधारः) आधार ।

आहुणिय — (आधूय) हिलाकर के ।

आहेवच्चं —(आधिपत्यम्) अधिपतिपणा

इब्भो — (इभ्य) धनवान । [विशेष के लिये देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश] ।

इय — (इति) ऐसा ।

ईहापूह° — देखो टि. २७, क. १ ।

उइण्णो — (अवतीर्णः) उतरा ।

उउयकुसुम° — (ऋतुजकुसुम-कृत – चामरकर्णपूरपरिमण्डिताभिरामः) ऋतुओं के फूलो से बनाये हुए चामर और कर्णपूर से परिमंडित तथा सुंदर ।

उऊसु—(ऋतुषु) ऋतुओं में।

उक्कंचण — (उत्कंचन) हलकी चीज को बडी बताना।

उक्खयनिक्खए—(उत्खातनिखातान्) खोद दिये हुए।

उच्छुभति — (उत्सर्भति उत्+सृभ्) मारता है।

उज्झणधम्मियं — (उज्झनधार्मिकम्) फेंकने योग्य—जूठा अन्न।

उट्टियाओ — (उष्ट्रिका) घृत आदि प्रवाही पदार्थों के भरने का ऊट जैसे आकार वाला मट्टी का एक पात्र-विशेष।

उट्ठाए — (उत्थया) उत्थान—शक्ति से।

उट्ठाणे° — देखो टि. ५१।

उट्ठाति—(उत्तिष्ठति) उठता है, आता है।

उत्तरिज्जं —(उत्तरीयम्) चद्दर, दुपट्टा।

उब्भएण — (ऊर्ध्वकेन) खडा हो कर के।

उब्भिन्ने — (उद्भिन्नम्) प्रकट हुआ।

उम्मतिं—(उन्मतिम्) उन्माद।

उयएण—(उदकेन) जल से।

उल्लपडसाडिगा — (आर्द्रपटशाटिका) जिसकी साडी और कपडे गीले हैं ऐसी।

उल्लावेइ—(उल्लापयति) बुलवाता है।

उवक्खडावेत्ता — (उपस्कारयित्वा) तैयार करा करके।

उवट्ठाणेसु—(उपस्थानेषु) एक प्रकार के मडपों मे।

उवतप्पामि — (उपतृप्या – तर्पया–मि) खुश करूं

उवप्पयाणं — (उपप्रदानम्) लालच, कुछ देना।

उवलद्धपुण्ण° — (उपलब्धपुण्यपापः) पुण्य और पाप के स्वरूप को जाननेवाला।

उवहिनियडिकुसला —(उपधिनिकृति–कुशलाः) छल-कपट में कुशल।

उवातियं — (उपयाचितम्) मनौति (गू० मानता)

उवायाते —(उपायातः) पहुंचा, गया ।

उव्वत्तेति —(उद्वर्तयति) उलट-पुलट करता है ।

ऊणजातिएण — (ऊनजातिजेन) हलकी जाति में पैदा हुए से ।

ऊसिय—(उच्छ्रित) ऊंचा ।

ऊसियफलिहे — (उच्छ्रित-परिघ) जिनके द्वार की अर्गला हमेशा ऊंची ही रहती है अर्थात् जिसका गृहद्वार कभी बन्द नहीं होता है ऐसा — दानी ।

एकसंकलितबद्धा — (एकशृङ्खलिकबद्धाः) जिनके नाम, अनुक्रम से लिखे हुए हैं ।

एगओ — (एकतः) एक जगह

एडेति — (एडयति) फेंकती है ।

एडेसि — (एलसि) फेंकता है ।

एतीए — (एतया) उसके साथ ।

एत्थाऽऽओ — (अत्रागतः) इधर आया हुआ ।

एवंविहकज्ज० — (एवंविधकार्यसज्जया) इस प्रकार के काम करने में तत्पर रहनेवाली से ।

एह — (एतस्य) इसकी ।

ओयत्तति — (अपवर्तते) हटती है ।

ओलग्गिया — (अवलगिताः) आश्रय लिया ।

ओलंडेति — (ओलण्डयति) खडखडाता है ।

ओसहभेसज्जेणं — (औषधभैषजेन) एक द्रव्य से बनी हुई दवाई औषध; और अनेक द्रव्य से बनी हुई दवाई भेषज [गूजराती : 'ओसडवेसड'] ।

ओसोवणिं — (अवस्वापिनीम्) निद्रायुक्त कर देने की विद्या ।

ओसोवितस्स — (अवसुप्तस्य) सोता हुआ ।

ओहतमण° — (अवहतमनः-संकल्प.) जिसके मन का संकल्प टूट गया है ।

कइया — (क्रयिका) खरीद करनेवाले ।

कओ — (कुतः) कहां से ।

कट्टु — (कृत्वा) करके ।

कडयेसु — (कटकेषु) पर्वत के किनारों में ।

कप्पडिय — (कार्पटिक·) भिक्षुक ।

कयवर—(कचवर) कूड़ा, मैला, कचरा ।

कयंसुपाएहि — (कृताश्रुपातैः) आंसुओं के साथ ।

करगा — (करका·) जल भरने का पात्र ।

करणसालं — (करणशालाम्) कचहरी में—अदालत में ।

करणे — (करणे) न्यायालय-कचहरी में ।

करयलपरिमिय° — (करतल-परिमित – त्रिवलिकमध्या) जिसका कटीभाग मुष्टिग्राह्य और त्रिवलीयुक्त है ऐसी स्त्री ।

करिसेण — (करीषेण) कंडेसे ।

कलहदलियं—(कलहदलिकाम्) कलह का कण ।

कसघायसए—(कषघातशतानि) चाबुक के सौ प्रहार ।

कसप्पहारे — (कशप्रहारः) चाबुक से ताडन ।

कहाविसेसेण — (कथाविशेषेण) विशेष प्रकार की बातचीत करते हुए ।

कहियं — (कुत्र) कहां ।

कंडितियं — (खण्डयन्तिकाम्) खांडनेवाली ।

कंपिल्लपुरे — देखो टि. ४३ ।

कंसदूस° — (कांस्य-दूष्य-विपुलधन-सत्सार- स्वापतेय-स्य) कांसा, कपड़े, विपुल धन, सारवाला – कीमती द्रव्य (गहने वगैरे) ।

कायंजका — (कृतञ्जकाः) समुद्र के आसपास रहनेवाला पक्षीविशेष ।
कायंसि — (काये) शरीर में ।
कालकम्बली — (कालकम्बलिका) काली कमली ।
कालधम्मुणा — देखो टि. २४, क. १ ।
काहं — (करिष्ये) करूंगा ।
काहामो — (करिष्यामः) करेंगे ।
काहावणेणं — (कार्षापणेन) कार्षापण (सुवर्ण के एक सिक्के का नाम) से ।
काही — (करिष्यति) करेगा ।
किच्चइ — (कृत्यते) दु.ख पाता है ।
किणा — (केन) किस प्रकार से, किस हेतु से ।
किण्होभासा — (कृष्णावभासा) काले ।
कित्तिमो —(कृत्रिमः) बनावटी ।
कित्तिया—(कियन्तः) कितनेक ।
किसिणिआन्ति — (कृष्णयन्ते) काले हो जाते हैं ।
किहं — (कथम्) कैसे; किस प्रकार से ।
कीलावण — (क्रीडापन) खेलाना ।
कीलावणगाइ —(क्रीडापनकानि) खिलौने ।
कंखिते — (कांक्षितः) उत्सुकता से फल की राह देखता हुआ ।
कुच्चएहि — (कूर्चकैः) कूर्चों से ।
कुडए — (कुडवाः) धान्य मापने का एक माप [विशेष के लिये देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश] ।
कुडएसु — (कुटकेषु) नीचे की ओर चौड़े तथा ऊपर की ओर संकीर्ण, ऐसे पर्वतों के स्थानों में ।
कुंडलुल्लिहिय° — (कुण्डलोल्लिखितगण्डलेखा) कुंडल से

चमकती हुई है कपोल-
पाली जिसकी ।

कुंदलोद्ध° — (कुन्दलोध्रउद्धत-तुषारप्रचुरे) जिस ऋतु में कुंद और लोध्र वृक्ष उद्धत [पुष्पसमृद्ध] होते हैं और तुषार-बर्फ अधिक पडती है, उस ऋतु में ।

कूणिए — (कोणिक.) [इस राजा के लिये देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश] ।

केयारं — (केदारम्) क्यारी को ।

कोकंतिया — (कोकन्तिकाः) लोमडी, लोंकडी ।

कोट्टंतियं — (कुट्टयन्तिकाम्) कूटनेवाली ।

कोडुंबियपुरिसे — (कौटुम्बिक-पुरुषान्) काम के लिये रखे हुए कुटुंब के आदमी [देखो 'भ. म नी धर्म-कथाओ' का कोश] ।

कोमुदिरयणियर°— (कौमुदी-रजनीकर-प्रतिपूर्ण-सौम्य-वदना) शरत् पूनम के चन्द्र जैसा प्रतिपूर्ण और सौम्य है मुख जिसका ।

कोला — (कोलाः) सूअर ।

कोसंबको — (कौशाम्बिकः) कोशाम्बी का रहनेवाला ।

कोसंबीओ — (कोशाम्बीत.) कोशाबी से [देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश] ।

खलयं — (खलकम्) खळा-खलिहान ।

खंडिओ — (दे०) किल्ले के छिद्र अर्थात् क्षुद्रमार्ग ।

खंद — (स्कन्दः) कार्तिकेय ।

खाइयव्वो — (खादितव्यः) खाने के योग्य ।

खाणुएहि — (स्थाणुकैः) ठूँठों से, सूके पेडों से ।

खाति — (खादति) खाता है ।

खातिमसातिमं — (खादिम-स्वादिमम्) फळमेवा इत्यादि और इलायची लौंग इत्यादि ।

खिप्पामेव — (क्षिप्रमेव) शीघ्र।
खीरहरे — (क्षीरधरे) समुद्र में।
खीराइया — (क्षीरकिताः) दूध-
वाले हुए।
खुतिं — (क्षुतिम्) छींक।
खुत्ते — (दे०) डूबा हुआ-
धँसा हुआ।
खुवे — (क्षुप.) छोटासा पेड।

गइंद — (गजेन्द्रः) बडा हाथी।
गड्डासु — (गर्तासु) खड्डों में।
गणरायाणो — देखो टि. ५३।
गणित्तिया — (दे०) जाप
करने के लिये रुद्राक्ष की
छोटी माला।
गयघडदारणेण — (गजघटदार-
णेन) हाथी के कुंभस्थल
को फाडनेवाले से।
गरुलवूहं — (गरुडव्यूहम्) सेना
की गरुड के आकार में
व्यूहरचना।
गहाय—देखो टि. १५, क. १।
गहियाउहपहरणा — (गृहीता-
युधप्रहरणाः) आयुध और
प्रहरण को ग्रहण किये
हुए।
गंधकासाईए — (गन्धकाषाय्या)
अंगोछे से।
गंधजुत्ति — देखो टि. ४२।
गंधियपुत्तेहिं — (गान्धिकपुत्रैः)
गांधी के लडकों से।
गाहावती — (गृहपतिः) गृहस्थ।
गिरिनगर — गिरनार–जूनागढ।
गिहाणिं — (गृहाणि) घरों में।
गुज्झया — (गुह्यकाः) यक्ष।
गुणसिलए — (गुणशिलके)
गुणशिल चैत्य में। देखो
'भ. म. नी धर्मकथाओ'
का कोश।
गुंजालिया — (गुंजालिका)
टेढी कियारी।
गुंडियं — (गुण्डितम्) युक्त।
गेण्हाहि — (गृहाण) ग्रहण कर।
गोमेह — (गोमेध) गोमेध।
गोसालस्स — देखो टि. ५०।

घत्तीहं — (दे० गवेषयिष्ये
तलास करूंगा।

घाइत्तए — (घातयितुम्) घात करने के लिए ।

चउक्काणि — (चतुष्काणि) चौक — वह स्थान, जहां चार रस्ते मिलते हों ।

चउहसट्ठ — देखो टि. ४७ ।

चउप्पयस्स —(चतुष्पदस्य) चार पैर वाले प्राणी का ।

चच्चराणि — (चत्वराणि) चौक, चौराहा ।

चम्मद्दि — (दे० सम्मर्द [?]) तूफान (?) ।

चयउ— (त्यजतु) त्याग कर दें ।

चंडिक्किए— (चण्डैकक:) प्रचड ।

चंपा —एक नगरी [देखो 'भ. म नी धर्मकथाओ' का कोश] ।

चारगसाला — (च. कशाला) कारागृह–जेल ।

चिट्ठितव्वं —(प्रा० चिट्ठ; सं० स्था – तिष्ठ – स्थातव्यम्) स्थिति करना ।

चित्तिज्जइ — (चित्र्यते) चित्रित किया जाता है ।

चिब्भडियावंसगो—(चिर्भटिकाव्यंसक:) खीरो—चीभडों— के लिये ठगाई करनेवाला ।

चियत्त—(दे० संमत) संमत ।

चिरत्थमियंसि — (चिरास्तमिते) सर्वथा अस्त होने पर ।

चिल्लला — (दे०) एक प्रकार के जंगली जानवर ।

चिल्ललेसु — (दे०) कीचडवाले स्थानों में ।

चुन्नारुहणं — (चूर्णारोपणम्) सुगंधित चूर्णो का देव को चढाना ।

चेइए — (चत्ये) चिता पर बनाया गया स्मारक [देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश] ।

चेइविसए — (चैदिविषये) चेदी देश में ।

चेट्ठसु — (चेष्टस्व) चेष्टा कर ।

चोक्खवाइणी — (चोक्षवादिनी) छूताछूत में आग्रह रखने वाली ।

चोक्ख — (चोक्ष) निर्मल ।

छगलो — (छागः) बकरा ।
छजीवनिकायएसु—देखो टि. ३३ ।
छणेसु — (क्षणेषु) उत्सवों में ।
छट्ठभत्तं — (षष्ठभक्तम्) छ टंक भक्त—आहार—नहीं लेने का मत अर्थात् लगातार दो दिन का उपवास ।
छविच्छेयं — (छविच्छेदम्) चमड़ी को छेदना ।
छाणुज्झियं — (छगणोज्झिकाम्) गोबर को फेंकनेवाली ।
छारुज्झियं — (क्षारोज्झिकाम्) राख को फेंकनेवाली ।
छारेण — (क्षारेण) राख से ।
छिज्जउ — (छिद्यताम्) काटा जाय ।
छिप्पत्तूरेणं — (दे० छिप्पत्तूर्येण) उस नाम के वाद्य से।
छिव — (स्पृश) स्पर्श कर ।
छिवापहारे — (दे०) चीकना चाबुक का प्रहार ।
छिड्डिओ — (दे० छिण्डिकाः – 'छिद्र' से) बाड के छिद्र —मार्ग ।

छुहछुहियं — (क्षुधाक्षुधितः) भूखा ।
छुहमारो — (क्षुधामारः) भुख-मरा, दुकाल ।
छुहिओ — (सुधितः) जिसके उपर चूना लगाया गया है ।
छूढाणि — (क्षिप्तानि) डाले—रखे ।
छोल्लेति — (दे० छल्ली=छाल) छाल निकालती है ।

जग्गंतो — (जाग्रत्) जागता हुआ ।
जणप्पमद्दणं — (जनप्रमर्दनम्) मनुष्यों का कच्चरघाण ।
जणमारिं — (जनमारिम्) मनुष्यों के नाशकों ।
जन्नवयणं — (यज्ञवचनम्) यज्ञ शब्द ।
जप्पभिइं — (यत्प्रभृति) जबसे ।
जम्बूलए —(जम्बूलकान्) जांबुक के आकार के जलपात्र-विशेष, चंबू यानी सुराई ।
जयम्मि — (जगति) जगत में ।

जयंति — (यजन्ति) पूजा करते हैं ।

जरचीर — फटे हुए कपडे ।

जाएस्सति — (याचिष्यते) मांगेगा ।

जातकम्मं — (जातकर्म) जन्म-संस्कार [देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश] ।

जातिसरण — (जातिस्मरणम्) पूर्व जन्म का स्मरण ।

जायं — (यागम्) याग को-पूजा को [देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश]।

जालघरएसु — (जालगृहेषु) जाली लगे हुए घरों में ।

जितसत्तू — देखो टि. ३६ ।

जिमियभुत्त° — (जिमितभुक्तोत्तरागतानाम्) खा पी कर आये हुए ।

जियारि — (जितारिः) अजित राजा का दूसरा नाम ।

जीवंतो — (अजीविष्यत्) जीता रहता ।

जीवियविप्पजढं — (जीविताविप्रहीणम्) जीवितरहित ।

जुंजिए — (दे०) बुभुक्षित ।

जूत्तिकरा — (युक्तिकराः) बुद्धिमान् लोग ।

जूयखलयाणि — (द्यूतखलकानि) द्यूत के स्थळ–जुए के अड्डे ।

जोइसियदेवा — (ज्योतिषिकदेवाः) सूर्य, चंद्र, तारे इत्यादि ।

जोएइ — (पश्यति ?) देखता है ।

जोगमज्जं — (योगमद्यम्) मूर्छित करने के लिये उपयोग में लाया जानेवाला एक प्रकार का मद्य ।

जोयणंतरियं — (योजनान्तरिकम्) एक योजन का अंतरवाला ।

झामेइ — (दे०) जलाता है । [देखो झियायमाणंसि] ।

झियायति — (ध्यायति) ध्यान-चिंतन करता है ।

झियायमाणंसि—देखो टि. १४, क. १ ।

झंखण — (दे०) शोक ।

झीणविहवो — (क्षीणविभवः) जिसका विभव क्षीण हो गया है ।

झुसिरे — (शुषिर.) पोला ।

टंकेसु — (टङ्केषु) एक तरफ कोरे हुए पर्वतों में ।

टिट्टियावेति — (टिट्टिकापयति) टट्टट्ट अवाज होवे, इस तरह हलाता है ।

ट्ठिइयं — (स्थितिकाम्) रीति ।

ठाणुखंडे — (स्थाणुखण्डम्) ठूंठा वृक्ष, ठूंठा ।

डालयंसि — (दे० 'दल' उपर से) डाल, शाखा ।

डिंडी — (दंडी ?) दंडधर पुरुष ।

णज्जति — (ज्ञायते) जाना जाता है ।

णज्जंति — (ज्ञायन्ते) ज्ञात हो ।

णवएहिं — (नवकैः) नये से ।

णवाऽऽयए — (नवाऽऽयतः) नव हाथ लंबा ।

णित्थरियव्वं — (निस्तरितव्यम्) पार जाना ।

णित्थारिए समाणे—(निस्तारितः सन्) बचाया हुआ ।

णिप्फिडइ — (निष्फेटति) बहार निकलता है ।

णियगकुच्छिसंभूयाति—(नीजक कुक्षी–संभूतानि) जो अपनी कुक्षी से पैदा हुए हो, वे ।

णिरय — (निरय) नरक ।

णिव्वत्तेमि — (निर्वर्तयामि) बनाऊं ।

णोल्लायंते—(नोदयन्) उखाडता हुआ ।

ण्हविय° — देखो टि. ३९ ।

ण्हाणोवदाइं — (स्नानोपदायिकाम्) स्नान के लिये जल देनेवाली ।

तए — (त्वया) तेरे से ।

तच्च — (तृतीय) तीसरा ।

तणपूलिआ — (तृणपूलिकाः) घास की पूलिका ।

तत्थमिय° — (त्रस्तमृगप्रसय-सरीसृपेषु) मृग, प्रसय [एक प्रकार का जंगली पशु] और सर्पों के त्रस्त होने पर ।

तत्था — (त्रस्ता) त्रास पाये हुए ।

तमाणाए — (तम् आज्ञया) उसको आज्ञा से ।

तयावरणिज्जाणं — देखो टि २६ क. १ ।

तरच्छा — (तार्क्ष्या.) जंगली प्राणी, साप या घोडा ।

तल्लिच्छा — (तल्लिप्सा.) उसको प्राप्त करने की इच्छावाले।

तसिया — (तर्षिता) क्लेश पाई हुई ।

तंबकुट्टगसगासे — (ताम्रकुट्टक-सकाशे) तांबा को कूटने-वाले के पास से ।

तंबियाओ — (ताम्रिकाः) तांबे की ।

ताते (तया) उसने ।

तामलित्तीनयरीते — (ताम्र-लिप्तिनगर्याम्) बंगदेश की राजधानी में ।

तालुग्घाडणि° — (तालोद्घाट-नीविघाटितकपाटः) ताला खोल देने की विद्या से जिसने दरवज्जे खोल दिये हैं ।

तालेज्जा — (ताडयेयम्) ताडना करू ।

तित्तिरिं — (तित्तिरिम्) तीतर को ।

तित्तिं — (तृप्तिम्) तृप्ति को ।

तियाणि — (त्रिकाणि) जहां तीन रास्ते मिलते हैं वैसे स्थान ।

तुट्ठीदाणं —(तुष्टिदानम्) इनाम ।

तुयट्टियव्वं — (त्वग्वर्तितव्यम् ?) करवट लेना, सो जाना ।

तूणेहिं — (तूणैः) बाणों से ।

तेणं कालेणं° — देखो टि. ३० ।

थणदुद्धलुद्धयाति — (स्तनदुग्ध-लुब्धकानि) स्तन के दूध में लुब्ध ।

थणयं — (स्तनजम्) दूध ।

थरहरइ — कांपती है ।

थंभिणिं —(स्तम्भिनीम्) स्तब्ध कर देने की विद्या ।

थूणामंडवं — (स्थूणामण्डपम्) कपडे से ढका हुआ मडप ।

थेर — (स्थविर) वृद्ध ।

थोर — (स्थूल) बडा ।

दच्छिहिसि—(द्रक्ष्यसि) देखेगी ।

दद्दरएणं — (दर्दरेण) पछाडने से ।

दलयइ — (ददाति) देता है, डालता है ।

दसपरिणाहे — (दशपरिणाहः) दश हाथ चौडा ।

दंडणाणि — देखो टि. ३५ ।

दायं — (दायम्) पर्व के दिवस में देने का दान ।

दासी — (अदात्) दिया ।

दाहवक्कंतीए—(दाहव्युत्कान्तिकः) दाहज्वरवाला ।

दाहामि — (दास्यामि) दूंगी ।

दाहिंति — (दास्यन्ति) देंगे ।

दिण्णभइ° — (दत्तभृतिभक्त-वेतनाः) जिनको तनख्वाह, खाना और रोजी दी गई है ।

दिणेस-दियहाण — (दिनेश-दिवसानाम्) सूर्य और दिन के बीच में ।

दिण्णो — (दत्तः) दिया ।

दिय — (द्विज) ब्राह्मण ।

दिया — (दिवा) दिन में ।

दिव्वं — (दैवम्) अदृष्टको ।

दिसालोयं — (दिशालोकम्) आसपास दिशाओं का देखना ।

दीविएणं — (दीप्तेन) जला हुआ (अग्नि से) ।

दीविया — (दीपिकाः) दीपका ।

दीहिया — (दीर्घिकाः) एक प्रकार की वापी--बावली ।

दीहियासु — (दीर्घिकासु) सीधी नीकों में ।

दुक्कुला — (दुष्कुला) दुष्ट कुल वाली ।

दुपयस्स — (द्विपदस्य) दो पैर वाला प्राणी का ।

दुरहियासा — (दुरधिसह्या) दु सह ।

दुरूहंति — (दूरोहन्ति) ऊपर चडते हैं ।

दूरा — (दूरात्) दूर से ।

देउलानि — (देवकुलानि) देव-मंदिर ।

देसए — (देशक.) शिक्षा देने वाला ।

देसपंते — (देशप्रान्ते) देश के सीमाभाग में ।

दोच्चंपि — (द्वितीयमपि) दूसरी दफे भी ।

धणसिरीए — (धनश्रिया.) धनश्री के पास ।

धणुपट्ठा° — (धनुःपृष्ठाकृति-विशिष्टपृष्टः) धनुष्य की आकृति जैसा जिसका पीठ-भाग है ।

धण्णभरियं — (धान्यभरितम्) अनाज से भरा हुआ ।

धण्णेसु — (धान्येषु) धान्य ।

धसत्ति — (धस इति) ' धस ' अवाज करके ।

धिज्जाइओ — (द्विजातिकः) ब्राह्मण । जैन टीकाकार ब्राह्मणों पर अरुचि बताने के लिये इसका प्रतिरूप ' धिग्जातीयः' —भी बतावे हैं ।

धितिं — (धृतिम्) धैर्य ।

धोयमाणं — (धाव्यमानम्) धुलवाना ।

नगरगुत्तिया — (नगरगोप्तृकाः) नगर की रक्षा करनेवाले ।

नगरनिद्धमणाणि — (नगर-निर्धमनानि) नगर के पाणी निकलने के मार्ग—' गटर '

नच्चंतकबंध° — (नृत्यत्-कबन्ध-वार-भीमम्) नाचते हुए-धडों के-समूह से-भयंकर।

नट्ठसुइए—(नष्टश्रुतिकः) जिसकी श्रवणशक्ति मंद हो गई है।

नत्तुए — (नप्तृकः) लडकी का लडका।

नदीकच्छेसु — (नदीकच्छेषु) नदी के किनारों पर।

नमिरो — (नम्र) नम्र।

नलिणि°—(नलिनीवनविध्वंसनकरे) कमलिनी के वन को नाश करनेवाला।

नागपडिमाण — (नागप्रतिमानाम्) नागों की मूर्तिओं को।

नातिविगट्ठेहिं — (नातिविकृष्टैः) बहुत दूर दूर के नही।

नाममुद्दं—(नाममुद्राम्) नामयुक्त मुद्रा—अंगूठी।

°निउरंब — (निकुरम्ब) समूह।

निकट्ठाहिं — (निष्कृष्टाभिः) निकाली हुई-खुली।

निग्गमणाणि — (निर्गमनानि) निकलने के मार्ग।

निग्गंथो — (निर्ग्रन्थः) आंतर और बाह्य ग्रंथ-परिग्रह से रहित, पापविमुक्त और निग्रहपरायण को निर्ग्रन्थ कहते हैं। जैन आगमों में यह शब्द जैन साधु के लिये प्रयुक्त होता है। इसी अर्थ में बौद्ध ग्रन्थो में निगंठ शब्द आता है।

निच्छूढं — (निक्षिप्तम्, निष्ठ्यूतम्) थूंका हुआ।

निच्छोडेज्जा — (निश्छोटयेयम्) छीन लूं।

निच्छुहावेइ — (निस्तुम्भापयति) निकलवा देता है।

निज्जाएति — (निर्यातयति) पूर्ण करता है।

निज्जाएत्तिते — (निर्यापितान्) निकाले हुए।

निप्पाणं — (निष्प्राणम्) प्राण-रहित ।

निब्बंधं — (निर्बन्धम्) आग्रह ।

निब्भच्छेज्जा — (निर्भर्त्सयेयम्) तिरस्कार करूं ।

निमिज्जइ — (निमीयते) बांधी जाती है ।

°नियडि — (°निकृति) वक-वृत्ति ।

निरिणो —(निर्+ऋण·) ऋण-मुक्त ।

निवाएमाणा — (निपातयमाना) लगाते हूए, मारते हुए ।

निव्वट्टणाणि — (निवर्तनानि) जहां मार्ग खतम होते हैं ऐसे स्थान ।

निव्वणे — (निर्व्रणान्) घाव से रहित ।

निव्वुइं — (निर्वृतिम्) शांति को ।

निसंसतिए—(नृशंसक·) निर्दय ।

निसामेत्तए — (निशमयितुम्) सुनने के लिये ।

निहरणं—(निर्हरणम्) स्मशान-यात्रा ।

निहाण — (निधान) संग्रह ।

नीणेइ — (नयति) ले जाता है ।

नीलुप्पलकया° — (नीलोत्पल-कृतापीडं·) जिसका जोगा नील कमल से बनाया हुआ हो ।

नेयाउयं — (नैयायिकम्) न्याययुक्त ।

नेहित्ति — (नयथ इति) ले जाते हो ।

पइपरिणामे — (पतिपरिणामे) पति के स्वभाव में ।

पइरिक्कं — (प्रतिरिक्तम्) एकांत ।

पओसे — (प्रदोषे) सायंकाल में ।

पकीरमाणा — (प्रकीरमाणाः) बिखेरते – डालते हुए ।

पक्केल्लयं — (पक्वम्) पका हुआ ।

पक्खिवावेत्तए — (प्रक्षेपापयितुम्) अंदर रखने के लिये ।

पगड्ढिया — (प्रकर्षिता) बहार खींची ।

पच्चप्पिणह — (प्रत्यर्पयत) वापिस दो ।

पच्चायाए — (प्रत्यायातः) पीछा आया, जन्म लिया ।

पच्चोरुहंति — (प्रत्यवरोहन्ति) ऊतरते हैं ।

पच्छागयपाणे — (पश्चादागतप्राणः) फिर से चैतन्य पाया हुआ ।

पज्जुवासति — (पर्युपास्ते) सेवा करता है ।

पञ्चविहे — देखो टि. ४४.

पञ्चाणुव्वइयं — देखो टि. ४६ ।

पट्टियाए — (पट्टिकायाम्) पाटी में ।

पडिग्गह — (प्रतिग्रह) पात्र ।

पडिच्छति — (प्रतीच्छति) स्वीकारता है ।

पडिदिज्जाएआसि— (प्रतिदद्याः) वापिस देना ।

पडिनिज्जाएहि — (प्रतिनय) वापिस ला ।

पडिन्नायं—(प्रतिज्ञातम्) प्रतिज्ञा की ।

पडिपुन्न°—(प्रतिपूर्णसुचारुकूर्मचरण.) प्रतिपूर्ण, सुन्दर और कछुवे के जैसे चरण हैं जिसके ।

पडिलाभेमाणे—(प्रतिलाभयन्) देता हुआ ।

पडिवालेमाणा — (प्रतिपालयमानाः) प्रतीक्षा करते हुए ।

पणावेहि — (प्रणामय) दे, सामने रख ।

पणियसालानि—(पण्यशालाः) करियाणे बेचने के स्थान ।

पण्हि —(पृष्णि) पानी-ऐडी ।

पत्तए — (पत्रके) कागज के टुकडे में ।

पत्तियामि — (प्रत्येमि) विश्वास करता हुं ।

पत्थरेऊण — (प्रस्तीर्य) बिछा करके ।

पत्थावं — (प्रस्तावम्) मौका, प्रसंग ।

पन्नत्तिविज्जं — (प्रज्ञप्तिविद्याम्) प्रज्ञप्ति नामक विद्या ।

पब्भारेसु — (प्राग्भारेषु) थोडे से नमे हुए पर्वतो के भागो में ।

पमायए — (प्रमाद्येः) प्रमाद करना ।

पम्हलसुकुमालाए — (पक्ष्मल-सुकुमारया) पुष्प के केसर की तरह सुकुमार से ।

पयई — (प्रकृति.) स्वभाव ।

पयमग्गं — (पदमार्गम्) पैदल-रास्ता ।

पयहेज्ज — (प्रजहीत) त्याग करें।

पया — (प्रजा) मनुष्यों को ।

पयाइं — (पदानि) पैरो को ।

पयाया — (प्रजाता) जन्म दिया।

पयायामि — (प्रजनयामि) जन्म दूं ।

परज्झा — (परध्या.) आत्मा से व्यतिरिक्त जड पदार्थो में दृष्टि रखनेवाले ।

परपत्थणापवन्नस् — (परप्रार्थना-प्रपन्नम्) भिखमंगा ।

परब्भाहए — (पराभ्याहतः) अधिक आघात पाया हुआ।

परमभागवउदिक्खा — (परम-भागवतदीक्षा) उत्तम-भागवत संप्रदाय की दीक्षा।

परमसुतिभूयाणं — (परमशुचि-भूतानाम्) बहुत स्वच्छ हुए ।

परसुणियत्ते — (परशुनिकृतः) परशु से कटा हुआ ।

परातिता — (पराजिताः) परा-जय को पाये हुए ।

परिघोलेमाणा — (परिघूर्णमाणा.) घूमते हुए ।

परिपेरंतेणं — (परिपर्यन्तेन) चारों बाजु ।

परित्तीकते — (परितीकृतः, परि-मितीकृतः) छोटा किया हुआ ।

परिभायंतियं — (परिभाजयन्ति-काम्) उत्सव के रोज परोसनेवाली ।

परियत्तेति—(परिवर्तयति) बार-बार घुमाता है ।

परियागते—(पर्यायागतान्) क्रम से बढे हुए ।

परिवेसंतियं — (परिवेषयन्तिकाम्) परोसनेवाली ।

परिसडियतोरणघरे — (परिशटिततोरणगृहम्) जहाँ पुराणे तोरण और घर के टुकडे पडे है ।

परिसोसिय° — (परिशोषित-तरुवरशिखरभीमतरदर्शनीये) जिससे बडे बडे पेड की टोच सूक गई हो और जो देखने में भयानक लगता है ।

पललिए—(प्रललितः) क्रीडाप्रिय।

पलंबलंबोदरा°—(प्रलम्बलम्बोदराधरकरः) जिसके उदर, ओंठ, और सूंढ लंबे है।

पलिच्छन्ने — (परिच्छन्नः) आच्छादित ।

पल्ललेसु—(पल्वलेषु) छोटा सा तालाब ।

पल्ला — (पल्यानि) अनाज भरने के भाजन ।

पवरगोण° — (प्रवरगोयुवकैः) उत्तम जवान बैलों से ।

पवाणि—(प्रपा) परबें–प्याऊ ।

पविट्ठो—(प्रविष्टः) बडगया–घूसा ।

पसवेसु — (प्रसवेषु) पुत्रादि जन्मप्रसंगो में ।

पसातेणं—(प्रसादेन) कृपासे ।

पसाहणघरएसु — (प्रसाधनगृहेषु) सजावट करने के घरों में ।

पसिणाति — (प्रश्ना.) प्रश्न ।

पसुमेहे—(पशुमेधे) पशुमेध यज्ञ ।

पहारेत्थ — देखो टि. २९, क. १ ।

पहुप्पति — (प्रभवति) समर्थ होता है ।

पंचमहव्वएसु — देखो टि. ३२ ।

पंडुरसुवि°—(पाण्डुर–सुविशुद्ध-स्निग्ध–निरुपहत– विशतिनख.) जिसके बीसों नख

श्वेत, विशुद्ध, चिकने और सभी प्रकार के दोषोंसे रहित हैं वह ।

पाइस्सामि — (पास्यामि) पीऊंगा ।

पाउप्पभायाए — (प्रात प्रभातायाम्) प्रात.काल में प्रभात होने पर ।

पाउब्भवह — (प्रादुर्भवत) हाजिर हो जाओ ।

पाउवदाइं- -(पादोपदायिकाम्) पैर धोने के लिये जल देनेवाली ।

पाउस — (प्रावृष्) वर्षाऋतु (आषाढ और श्रावण मास) ।

पाडगं — (पाटकम्) पाडा, महल्ला ।

पाडिहारियं—(प्रातिहारिकीम्) वापिस हो सके ऐसी ।

पाडुहुएहिं— दे० (प्रतिभू...) जामिन अर्थात् जमानत देनेवाले ।

पाणियपाए — (पानीयपाये) पानी पीने के लिये [निमित्तार्थक सप्तमी] ।

पाणेहिं, भूतेहि° — देखो टि. १९, क. १ ।

पादेउं—(पाययितुम्) पीने के लिये ।

पामोक्खं—(प्रमोक्षम्) उत्तर, जवाब ।

पायत्तिया — (पादातिकाः) पैदल सिपाही ।

पायपडिएण — (पादपतितेन) पैरो में पडने से ।

पायवघंस— (पादपघर्ष) वृक्षों का घर्षण ।

पायाविया— (पायिता) पिलाई हुई ।

पारासरा — (पराशराः) एक प्रकार के सर्प ।

पावति— (प्राप्नोति) पाता है –पहूंचता है ।

पावयणं — (प्रवचनम्) शास्त्र ।

पावसियालगा—(पापशृगालकाः) दुष्ट गीदड ।

पासत्थेहि — (पार्श्वस्थैः) पास में रहेनेवालोंने ।

पासपयट्टिए—(पाशप्रवृत्तकान्) मोहादिपाश से प्रवृत्ति करते हुए ।

पासवणस्स — (प्रस्रवणस्य, प्रस्रवणाय) लघुशंका के लिये ।

पासं—(पाशम्) फंदेको ।

पासिहामि—(द्रक्ष्यामि) देखूंगी।

पासुत्तो — (प्रसुप्त.) सोया हुआ ।

पाहुडं — (प्राभृतम्) भेट ।

पिइमेहमाइमेहे — (पितृमेध-मातृमेधे) पितृमेध और मातृमेध यज्ञ में ।

पिज्ज — (प्रेय) प्रेम ।

पिट्ठओवराहे—(पृष्ठत. वराह.) पीठ से वराह जैसा ।

पिट्ठंडीपंडुरे — (पिष्टपिण्डीपाण्डु-रान्) चावल के आटे की पिण्डी के समान श्वेत ।

पिहडए —(पिठरकान्) एक प्रकार के पात्र ।

पिहेइ — (पिदधाति) ढकता है ।

पिंडियाओ—(पिण्डिकाः) बलि ।

पीढफलग —(पीठफलक) पीठ पीछे रखने का पाटिया ।

पीणाइय — (दे०) टीका-कारने इसके स्थान में 'पैनायिक' (पीनाया) शब्द रक्खा है और उसका पर्याय देश्य 'मङ्गा' दिया हैं । 'मङ्गा' का अर्थ बलात्कार होता है । गुजराती में बलात्कार के अर्थ में जो 'पराणे' शब्द है, उसका संबंध इस 'पीणाइय' शब्द से मालूम होता है ।

पीसंतियं — (पेषयन्तिकाम्) पीसनेवाली ।

पुडए — (पुटकान्) पुड़िया ।

पुत्तपच्चयं — (पुत्रप्रत्ययम्) पुत्रनिमित्तक ।

पुप्फच्चणियं — (पुष्पार्चनिकाम्) पुष्पपूजाको ।

पुरिसवेसिणी — (पुरुषद्वेषिणी) पुरुषों के प्रति द्वेष करने-वाली ।

पुव्वरत्तावरत्त — (पूर्वरात्र-अपररात्र) रात्री का पूर्व भाग और रात्री का पिछला भाग [शीघ्र उच्चा-रण के कारण अपर का 'र' प्राकृत में चला गया है] ।

पेच्च — (प्रेत्य) परलोक ।

पेच्छणघरएसु — (प्रेक्षणगृहेषु) जिसमें देखने की चीजें लगीं हों, ऐसे घरों में — नाटकगृहों में ।

पोच्चडे — (दे०) पोचा ।

पोत्थकम्मजक्खा — (पुस्तकर्म-यक्षा.) मसाले से बनाई हुई यक्ष की मूर्ति जैसे जड़ ।

पोलंडेइ — (प्रोल्लण्डयति) वार-वार टकराता है ।

पोल्ल — (दे०) पहोळा [गुज-राती 'पोला' शब्द का इससे खास सम्बन्ध है । संस्कृत के बिस्तीर्णता-सूचक 'पृथुल' शब्द का प्राकृत रूप 'पिहुल' होता है । सभव है यह 'पिहुल' ही शीघ्र उच्चार करने से 'पोल्ल' शब्द बना हो] ।

पोसहं — देखो टि० ४८ ।

फलगं — (फलकं) लिखने का तक्ता–पाटी ।

फलतेहि — (फलकै.) ढाल से ।

फंदेइ — (स्पन्दयति) थोडा हिलाता है ।

फासा — (स्पर्शाः) अनेक प्रकार के दुःख ।

फासुएसणिज्जेण — देखो टि० ४९ ।

बइल्लं — (बलिवर्दम्) बैल को ।

बलियतरायं — (बलिकतरम्) गाढ ।

बहुकण्ठसुत्तधारी — (बहुकण्ठसूत्रधारी) कंठ में यज्ञोपवीत–जनेऊ पहननेवाला।

बहुलोहणिज्जा—(बहुलोभनीया) अधिक लुभानेवाले।

बंधेउं — (बद्धुम्) बांधने के लिये ।

बारवइए — (द्वारवत्याम्) द्वारिका में [देखो 'भ म. नी कथाओं' का टिप्पण]।

बालग्गाही —(बालग्राही) बालक को खेलानेवाला–रखनेवाला ।

बाहसलिल° — (बाष्पसलिल–प्रच्छादित–वदनानि) जिनके मुख अश्रुजल से ढके हुये है।

बाहिरपेसणकारिं — (बाह्यप्रेषणकारिकाम्) बहार का लाना ले जाना करनेवाली।

बिउणो — (द्विगुणः) दूना ।

बिलधम्मेणं — (बिलधर्मेण) जैसे बिल में अनेक मकोडे रहते हैं उसी तरह ठूंसठूंस के रहने की रीति से।

बोल —(दे०) [ब्रू] आवाज।

भती — (भृति) वेतन, तनखा ।

भत्तपरिव्वयं—(भक्तपरिव्ययम्) खानेपीने का खर्च ।

भंडागारिणिं—(भाण्डागारिणीम्) भांडार की व्यवस्था करनेवाली ।

भाइणेज्ज — (भागिनेय) भाणजा ।

भायं — (भागम्) मंदिर में देने का नियत अंश ।

भारुण्डपक्खी — (भारण्डपक्षी) एक तरह का अप्रमत्तपक्षी । ऐसा कहा जाता है कि उसके दो मुख एक शरीर और तीन पैर होते हैं ।

भासियवं — (भाषितवान्), बोला ।

भे — (युष्माकम्) तुम्हारा ।

भेय — (भेद) बुद्धिभेद ।

मइन्दो — (मृगेन्द्रः) सिंह ।

मइलिज्जन्तो — (मलिन्यमान) मलिन होता हुआ ।

मगतितेहिं — (दे०) हाथ में बंधे हुए ।

मगहापुरे — (मगधपुरे) मगध-देश की राजधानी में ।

मग्गया — (मार्गिता) चाही हुई ।

मङ्कुली — (मङ्कुला) असुन्दर ।

मज्झंमज्झेण — (मध्यमध्येन) बीचबीच में ।

मडहो — (दे०) छोटा ।

मणयं — (मनाक्) अल्प ।

मणामे — देखो टि. १८, क. १ ।

मम्मणपयंपियाति — (मन्मन-प्रजल्पितानि) बालक के अव्यक्त शब्द ।

मयगकिच्चाइं —(मृतककृत्यानि) मृत व्यक्ति के पीछे किये जानेवाले कार्य ।

मयवस° — (मदवशविकसत्कट-तटक्लिन्नगन्धमदवारिणा) जिसके द्वारा मद के वश से खिले हुए गंडतट गिले हो गये हैं, ऐसे गधवाले मद के पानी से ।

मयंगतीरद्दहे — (मतङ्गतीरद्रहः) मतंगतीर नाम का द्रह [विशेष के लिये देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश] ।

मरणभीरुं — (मरणभीरुम्) मरण से डरनेवाले को ।

मलावधंसी — (मलापध्वंसी) मल को नाश करनेवाला ।

मल्लसंपुडेहि — (मल्लसंपुटैः) शराव से, कोडिये से ।

मल्लारुहणं — (माल्यारोपणम्) देव को माला चडानी ।

महइमहालियाए — (महाति-महत्या) बडी से बडी [सभा] में ।

महणम्मि — (मथने) मथन करने में ।

महं — (मह्यम्–मम) मेरे को।

महंततुंब° — (महातुम्बकित-पूर्णकर्णः) जिसके कान बडे और तुंबे के जैसे गोळ है।

महाणसिणि — (महानसिकीम्) रसोईघर में काम करनेवाली।

महालिय — (महतीं) सारी [रात]।
(प्राकृत में 'ल्' प्रक्षिप्त है)।

महुमहणस्स — (मधुमथनस्य) मधुदैत्य को मारनेवाला कृष्ण।

महुरसमुल्लावगाणि — (मधुर-समुल्लापकानि) मधुर मधुर बोलनेवाले।

महेज्जा — (मथेयम्) हैरान करूं।

मंजूसं — (मञ्जूषाम्) बडी पेटी को [गूजराती 'मजूस']।

मंतुं — (मन्तुम्) क्रोध।

मंसु — (श्मश्रू) दाढीमूंछ।

माणमाणिक्कं—(मानमाणिक्यम्) मानरूप माणिक्य को।

माणुम्माण° — (मान–उन्मान–प्रमाण–) शरीर के अवयवों की, योग्य लंबाई और चौडाई—शरीर की योग्य ऊंचाई और वजन।

मा भाहि — (मा भैषीः) डरना नहीं।

माम — (दे मातुल) मामा।

मालुयाकच्छए — (मालुका-कच्छके) एक प्रकार की अधिक फैलती हुई वल्ली—[देखो 'भ. म. नी धर्म-कथाओ' टि. २, क. २]।

मालेसु — (मालेषु) पहाड जैसे ऊंचे जमीन के भागों में।

माहण — (ब्राह्मण) ब्राह्मण।

मिच्छा — (मिथ्या) मिथ्या।

मिरिय — (मरीच) मरी।

मिसिमिसेमाणे — (अनुकरण-शब्द) क्रोधाग्नि से मिस-मिस करता हुआ।

मिहोकहा॰ — (मिथःकथा) आपस की बातचीत ।

मीसिज्जइ —(मिश्र्यते) मिश्रित की जाती है ।

मुच्चमाणीओ —(मुच्यमाना.) मुक्त होती हुई ।

मुद्धयाइं — (मुग्धकानि) मुग्ध ऐसे बालक ।

मुहपोत्तीए — (मुखपोतिकया) मुँह पर रखने का कपडा ।

मेढी —(मेढि) आधारभूत ।

मेलयं —(मेलकम्) मेल ।

मोयणिं — (मोचनीम्) मुक्त कर देने की विद्या ।

याणामि — (जानामि) जानता हूं ।

यावि —(च+अपि) भी ।

रच्छाए —(रथ्यायाम्) शेरी-गली में ।

रडण —(रटन) चिल्लाहट ।

रयणियर —(रजनिकर) चंद्र ।

रहमुसलं — देखो टि. ५४ ।

रंधंतियं — (रन्धयन्तिकाम्) राधनेवाली ।

राईसर॰ — (राजा-ईश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिक-श्रेष्ठी-सार्थवाह-प्रभृतयः) मांडलिक राजा — युवराज अथवा अणिमादि सिद्धि-वाला पुरुष — खुश होकर राजाने जिनको पट्ट दिये हैं ऐसे पुरुष — जिसके आसपास वसति व गाम न हो वैसे स्थान [मडंब] के मालिक — कुटुम्ब-पालक — श्रीदेवता की मूर्तियुक्त सुवर्णपट को जिन्होंने मस्तक पर लगाया है वैसे धनिक — बडे बडे सार्थ को ले जानेवाले पुरुष — इत्यादि ।

रायसुए —(राजसूये) राजसूय यज्ञ में ।

लक्खाउव्वेयकुसलो — देखो टि. ३८ ।

रुधंतियं — (रुन्धयन्तिकाम् ?) शाली के तुष निकालने-वाली ।

रुवति — (रौति) रोती है ।

रूवस्सित्तणेणं — (रूपित्वेन) सुन्दर रूपवाला होने से ।

रूवोवलद्धि — (रूपोपलब्धि:) रूप की पहिचान ।

रेवतउज्जाणे — (रैवतोद्याने) गिरनार के उद्यान में [देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' टि. २, क. ५] ।

रोएमि — (रोचे) रुचि करता हूं ।

लइमयं — (लभितकम्) लिया है ।

लक्खण° — (लक्षण-व्यञ्जन-गुणोपेता) सामुद्रिक शास्त्र में कहे हुए शरीर के लक्षण — शरीर पर निकले हुये तिल और मषा आदि व्यंजन-चिह्न-और गुणों से युक्त ।

लक्खारस —(लाक्षारस) लाख का बनाया हुआ लाल रस ।

लट्ठं — (लष्टम् ?) अच्छी तरह से ।

लभे — (लभेत) प्राप्त करें ।

लयन्ता —(लान्त:) लेते हुए ।

लयप्पहारे — (लताप्रहार:) छडी, लाठी ।

लहुकरणजुत्त° — (लघुकरण-युक्तयोजितम्) शीघ्र योजित किये हुए पुरुषों से जुता हुआ ।

लिहंतो — (लिखन्) चित्रित करता हुआ ।

लिंडणियरं — देखो टि. २३. क. १ ।

लुब्भए — (लुभ्यते) लुब्ध होता है ।

लुलियाए — (लुलितायाम्) बीत गई है ।

लूहेइ —(दे०) साफ करती है ।

लेण° — (लयन) पहाड में खुदे हुए पत्थर के घरों में ।

लेस्साहिं — देखो टि. २५. क. १ ।

लोट्टएहि — (दे०) हाथी के बच्चे के साथ [तृतीया बहुवचन] ।

लोमहत्थगं — (लोमहस्तकम्) रोमो का बना हुआ झाड़ ।

वइत्तए — (वदितुम्) कहने के लिये ।

वक्खित्तस्य — (व्याक्षिप्तस्य) व्याक्षिप्त का ।

वग्गूहि —(वाग्भि) वचनों से ।

वच्चइ —(व्रजति) जाता है ।

°वच्छ — (वृक्ष) पेड ।

वच्छे — (वक्षसि) छाती में ।

वट्टिजासि — (वर्तेथाः) [तू] वर्तन करना ।

वड्ढो — (वड्ढः; वृद्धः) बडा ।

वड्ढावए —(वर्धापकः) बढानेवाला ।

वड्ढि — (वृद्धिः) ब्याज ।

°वणकरेणु —(वनकरेणुविविधदत्तकजप्रसवघातः) जिस पर वन की हथनिओंने अनेक तरेह से कमल के फूल का प्रहार दिया है, ऐसा ।

वत्तेज्जासि —(वर्तेथाः) वर्तन करें ।

°वत्थजुयल — देखो टि. ४० ।

वत्थव्वस्स — (वास्तव्यस्य) रहनेवाले का ।

वत्थारुहणं — (वस्त्रारोपणम्) देव को कपडा चढाना ।

वन्नारुहणं — (वर्णारोपणम्) देव को रंग चढाना ।

°वम्मिय —(वर्मित) आच्छादित किये हुए [कवचवाले] ।

वयह — (वदथ) तुम कहते हो ।

वया — (व्रजा) दश हजार गायों का एक व्रज होता है ।

वयासी —(अवादीत्) बोला ।

वरमऊरी —(वरमयूरी) उत्तम मोरनी ।

वरिसारात्त —(वर्षारात्र) भाद्रपद और आश्विन मास ।

वरेल्लिया —(वृता) वरी हुई ।

ववरोवेज्जा — (व्यपरोपयेयम्) जान से मारूं ।

वसहीपायरासेहिं — (वसति-प्रातराशै.) मुकाम और सुबह के नास्ते से ।

वसहेण — (वृषभेण) बैल के [साथ] ।

वंजणाहिलावो — (व्यञ्जनाभिलाप:) व्यंजनों का उच्चारण ।

वाउलस्स — (व्याकुलस्य) व्याकुल का ।

वाउलिया — (वातावल्या) पवन का झपाटा ।

वाडि — (वृति) वाड ।

वाउल्लयं — (दे० वाउल्लया) पुतली ।

वाणारसी — (वाराणसी) बनारस । देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश ।

वायाइद्ध — (वाताविद्ध) पवन से डगमगता हुआ ।

वायाबन्धं — (वाचाबन्धं) वचन से बद्ध होना ।

वायाहययं — (वाताहतकम्) वायु से सूखा हुआ ।

वारओ — (वारक:) वारी ।

वाल — (व्याल) व्याघ्र आदि जगली जानवर ।

वाहलिया — (दे०) क्षुद्र नदी-प्रवाह ।

विउसाणं — (विदुषाम्) विद्वानों के ।

विक्कायइ — (विक्रीयते) विकता है ।

विकिणइ — (विक्रीणाति) बेचता है ।

विक्खिरेज्जा — (विकिरेत्) अलग अलग कर दे ।

विगाया — (वृका:) वरू ।

विज्झाए — (विध्याते) शान्त होने के बाद ।

विढप्पइ — (दे०) पैदा करता है ।

विढवणत्थं — (दे० उपार्जनार्थम्) उपार्जन के लिये ।

विणएज्ज — (विनयेत्) दूर करें ।

विणासेतओ — (व्यनाशयिष्यत्) विनाश करेगा ।

विणिम्मुयमाणी — (विनिर्मुञ्चमाना) मुक्त करती हुई ।

विनिगिच्छा — (विचिकित्सा) संशय ।

विदेहे — (विदेहे) विदेह नामक देश में। उसकी राजधानी मिथिला है ।

विजाणेमो — (विजानीम) जानें ।

विप्परद्धे — (विपराद्ध.) हत हुआ ।

विप्पवासियस्स — (विप्रोषितस्य) देशान्तर जाने की प्रवृत्ति करनेवाले का ।

विभवमागमेऊण — (विभवम्-आगम्य) विभव को जान कर ।

विम्हलो — (विह्वलः) विह्वल ।

वियडीसु — (वितटीषु) जंगलों में । [गुजराती 'बीड' शब्द का इसीसे संबंध मालूम होता है । 'बीड' का संबध 'विटप'-(वृक्ष) शब्द से मालूम होता है]।

वियरएसु — (विदरेषु) नदी के किनारे पर खुदे हुए पानी के स्थलो में । [गूजराती 'वीरडा' शब्द का यह मूल मालूम होता है और कूपवाचक मारवाडी 'बेरा' शब्द का भी यही मूल है]।

वियालचारिणो — (विकाल-चारिण.) रात को घूमने-वाले ।

विराला — (बिडाला.) बिल्ले-बिलाव ।

विलक्खमणो — (विलक्ष्यमनाः) लज्जित ।

विवाडेसि — (व्यापादयसि) मार डालता है ।

विहरंति — (विहरन्ति) आनंद से रहते हैं ।

विहाडेंति — (विघाटयति) खोलती है ।

वीतीवइस्सइ — (व्यतिव्रजिष्यति) पार चला जायगा ।

वीससे — (विश्वस्यात्) विश्वास करें ।

°**वीसंभट्ठाणिज्जो** — (विश्रम्भस्थानीय.) विश्वासपात्र ।

वीहिं — (वीथिम्) बाजार में ।

वूहइत्ता — (बृहयिता) पोषक ।

वेयमारियं — (वेदम्-आर्यम्) आर्य वेद; जिसमें हिंसा का विधान न हो ऐसा वेद ।

वेरपडिउञ्छणट्ठे — (दे० वैर-प्रतिकुञ्चनार्थम्) वैर का बदला लेने के लिये ।

वेसमणाणि — (वैश्रमणानि) कुबेर की मूर्ति ।

वेसालीए — (वैशाल्याम्) विशाला नाम की नगरी में [देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' के कोश में 'महावीर' शब्द] ।

सइ — (सदा) हमेशा ।

सइयाण — (शतिकानाम्) सौ का ।

सक्कमण्णहाकाउं — (शक्यम्-अन्यथाकर्तुम्) उलटा करने का शक्य ।

सखिङ्खिणिं — (सकिङ्किणीम्) घुघरी के साथ ।

सगडवूहेणं — (शकटव्यूहेन) शकट के आकार में सेना की व्यूहरचना ।

सगडीसागडं —(शकटीशाकटम्) छकडी और छकडे ।

सगेवेज्जं — (सग्रैवेयम्) ग्रीवा से पकड के ।

सचिट्ठेण — (सचेष्टेन) चेष्टा सहित, सावधानता से ।

सच्चपक्खिकाए — (सत्यपक्षिकया) सत्य का पक्ष करने वालीने ।

सजीवेहिं —(सजीवैः) प्रत्यंचा - दोरी सहित ।

सणियं — (शनैः) धीरे से ।

सतेणं — (स्वकेन) अपने निज के ।

सतेहिंतो — (स्वकेभ्य) अपने ।

सत्तसिक्खावइयं — देखो टि ४६ ।

सत्तंगपतिट्ठिए — (सप्ताङ्गप्रतिष्ठित.) सातों अगो से प्रतिष्ठित [चार पैर, सूंढ, पूंछ और पुंथिह्न] ।

सत्तुयादुपालियं — (सक्तुकद्विपालिकाम्) सत्तू की दो पाली को ।

सत्तुस्सेहे —(सप्तोत्सेध.) सात हाथ ऊंचा ।

सद्दावेंति — (शब्दापयन्ते) बुलाते हैं ।

सद्धिं —(सार्धम्) सहित ।

सन्धिमुहे —(सन्धिमुखे) चोरी के लिये भीत में किये हुए छेद में ।

सन्निपुव्वे — देखो टि. २८, क. १ ।

सन्निवइए —(संनिपतितः) गिरा हुआ ।

सन्निहियपाडिहेरो — (सन्निहितप्रातिहार्यः) चमत्कारवाला, प्रत्यक्ष प्रभाववाला ।

सभाणि — (सभाः) मनुष्यो के बैठने के स्थान, और चौपाल ।

समखुरवालिहाणं — (समक्षुरवालिधानम्) जिसके खुर और पूंछ समान है ।

समणाउसो — (श्रमणायुष्मन्) हे आयुष्मान् श्रमण !

समया—(समता) समभाव से ।

समलिहियं° — (समलिखित - तीक्ष्णशृङ्गै.) जिसके सींग नोकदार और बराबर समान हैं ।

समालद्धो—(समालब्ध) सजा हुआ ।

समालहण — (समालभन) तैयारी ।

समिए —(शमितः) शांत ।

समुज्झियत्तेहि — (समुज्झितैः) फेंके हुए ।

समुच्छियं — (समुक्षिकाम्) पाणी छांटनेवाली ।

समुप्पज्जित्था — देखो टि. २१, क. १ ।

समूसियसिरे—(समुच्छ्रितशिर:) ऊंचे मस्तकवाला ।

समेच्चा — (समेत्य) मिल करके ।

समोसरिए — (समवसृत:) आये हुए ।

सम्मज्जिअं — (संमार्जिकाम्) झाडू देनेवाली ।

सरभा —(शरभा:) अष्टापद ।

सरय — (शरत्) कार्तिक और मार्गशीर्ष मास ।

सरयपुण्णिमायंदो — (शरत्-पूर्णिमाचन्द्र:) शरद ऋतु की पूनम का चांद ।

सल्लइया—(शल्यकिता:) जिनके पत्ते शुष्क होने पर सलीऐं बन गई हैं ।

सवयंसो — (सवयस्य:) मित्र सहित ।

सवहसावियं—(शपथशापिताम्) सोगंद दी हुई ।

सव्वोउय — (सर्वऋतुक) सब ऋतुओं में ।

ससक्खं — (ससाक्षि) साक्षी रखके ।

सहदारदरिसी — (सहदार-दर्शिन:) साथ में विवाह किये हुए ।

सहपंसुकीलियया — (सहपांशु-क्रीडितका:) धूल में साथ खेले हुए ।

सहावरङ्गं — (स्वभावरङ्गम्) स्वाभाविक रंग को ।

सहोडं — (दे०) चोरी के माल के साथ ।

संगारं — (संगारम्) करार-संकेत को ।

संघाडओ — (संघाटक:, संघा-तक:) दो की जोडी ।

संचाएति — देखो टि. २०, क. १ ।

संचाएमि —(संशक्नोमि) कर सकता हूं ।

संताण —(संत्राण) रक्षण ।

संतियं —(सत्कं) उसके पास का ।

संथावणं — (संस्थापनम्) सांत्वन ।

संपहारेत्ता — (संप्रधारयित्वा) विचार करके ।

संपेहेति — (संप्रेक्षते) विचार करता है ।

संबादीनं — (शाम्बादीनाम्) शाब आदि का ।

संलत्त — (संलपितम्) कहा ।

संवट्टणाणि —(सवर्तनानि) जहां अनेक मार्ग मिलते हों, ऐसे स्थान ।

संविड्ढेमाणी — (संवेष्टमाना) पोषण करती हुई ।

संसारेति — (ससारयति) चलित करता है ।

°साइसंपओग — (सातिसं-प्रयोग) उत्कंचनादि सहित दुष्ट प्रवृत्ति करना ।

साकेयं —(साकेतम्) अयोध्या ।

सारक्खमाणी — (संरक्षमाणा) पालती हुई ।

सारिच्छो —(सदृक्ष) सरीखा-समान ।

सालघरएसु — (शालगृहेषु) शाल नामक पेड़ से बने हुए गृहों में ।

सालिअक्खए—(शालिअक्षतान्) अक्षत शालि ।

सावगाणं — देखो टि. ३४ ।

सावय°—(श्वापदशतान्तकरणेन) सैंकड़ो श्वापदो का अंत करनेवाला ।

सासयवाइयाणं — (शाश्वतवादि-कानाम्) आत्मा शाश्वत है ऐसा कहनेवालों को ।

साहति — (साधयति ?) कहता है ।

साहरंति —(संहरन्ति) संकुचित कर लेते हैं ।

सिक्खगो —(शैक्षक.) सीखने-वाला ।

सिक्खियवम्मधारी —(शिक्षित-वर्मधारी) शिक्षित और कवच पहेने हुए।

सिढिल° — (शिथिलवलीत्वक् विनद्धगात्र:) शिथिल और जिसमें बल पड गये हैं ऐसी चमडी से जिसका गात्र ढका हुआ है।

सिढिलेसु — (शिथिलेषु) शिथिलों में।

सिरो —(शिर:) मत्था।

सिंगाडगाणि — (शृङ्गाटकानि) सिंघाडे के आकार जैसे रस्ते।

सिंगारागार° — (शृङ्गारागार-चारुवेषा) शृङ्गार के घर जैसी और अच्छे वेषवाली।

सीयारं —(सीत्कार) सीत्कार।

सुइभूएण —(शुचिभूतेन) शुचि-रूप–पवित्र से।

सुणहा —(शुनका:) कुत्ते।

सुत्तिमतीए — (शुक्तिमत्याम्) शुक्तिमती में।

सुत्थिया —(सुस्थिता:) स्वस्थ।

सुसाणएसु — (श्मशानेषु) श्मशानों में।

सुहमोयगा — (सुखमोदक:) सुख से आनंद करनेवाला।

सुंकेणं — देखो टि. ३७।

सूती —(सूच्य:) सूइयाँ।

सूमालए — (सुकुमालक:) सुकुमार।

सूरो — (सूर्य:) सूर्य।

सेज्जासंथारएसु —(शय्यासंस्तारकेषु) (१) सोने के लिये नियत की हुई जमीन में (२) रहने के स्थान में की हुई पथारी में।

सेणिए — (श्रेणिक:) मगध देश का राजा का नाम [देखो 'भ. म नी धर्मकथाओ' का कोश]।

सेणिप्पसेणीणं — (श्रेणीप्रश्रेणीनाम्) वर्ण और उपवर्ण [देखो 'भ. म. नी धर्मकथाओ' का कोश]।

सेयणए — (सेचनक:) उक्त नाम का श्रेणिक का पट्ट-

हस्ती [देखो 'भ. म. की धर्मकथाओं' का कोश] ।

सेयं — (श्रेयः) कल्याण ।

सेयंसि — (स्वेदे) कीचड़ ।

सेवाणि — (शैवानि) शिव की मूर्ति की ।

सेहावियं — (सेधापितम्) निष्पादित किया हुआ ।

हडिबंधणं — (दे०) हेड में— कैद में रखना ।

हत्थयंसि — (हस्तके) हाथ में ।

हत्थसंगेल्लीए — (दे० हस्तसंगल्या) हाथ में हाथ मिला कर के ।

हत्थियामा — देखो टि. १२, क. १

हव्व — (दे०) जल्दी ।

हिओ — (हृतः) ले लिया ।

हियाए — देखो टि. १७, क. १ ।

हिंसितं — (हेषितम्) घोड़े का हिनहिनाना ।

हीरइ — (ह्रियते) ले जाय ।

हीला — (हेला) तिरस्कार ।

हेआतिं — (हेतवः) युक्तियाँ ।

होहिइ—होही — (भविष्यति) होगा ।

——:०:——